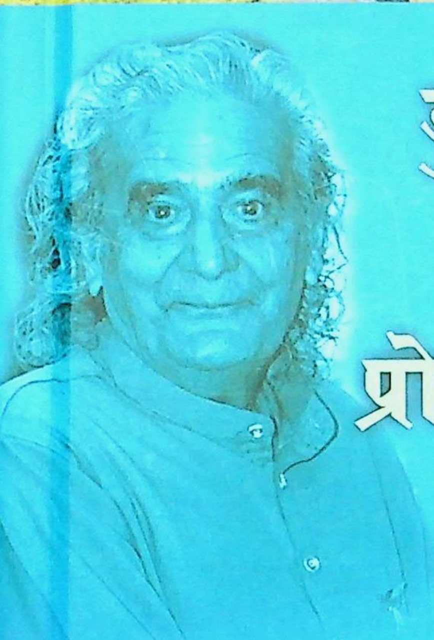




डुग्गर संस्कृति के अध्येता प्रो. शिव निर्मोही (पद्म श्री)

डॉ. राजश्री श्रीवास्तव
प्रो. (डॉ.) सौरभ



डुग्गर संस्कृति के अध्येता : प्रो. शिव निर्मोही (पद्म श्री)

डॉ. राजश्री श्रीवास्तव
सहायक आचार्य
शि.सु. महाविद्यालय, बहराइच, उ.प्र.
प्रो. (डॉ.) सौरभ
आचार्य
सिद्धार्थ विश्व विद्यालय, कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर, उ.प्र.



SAKSHAM BOOKS INTERNATIONAL

SAKSHAM BOOKS INTERNATIONAL
9991/A, New Rohtak Road,
New Delhi-110005
email : sakshambooks@gmail.com

Jammu Office:
Khilonian Street, Pacca Danga,
Jammu-180001 (J&K)
Ph. 9622291111

डुग्गर संस्कृति के अध्येता : प्रो. शिव निर्मोही (पद्म श्री)

Edition 2023

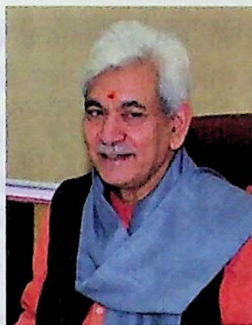
Typeset by
AS08 Graphics, Jammu

Printed at
Atlantic Print Services, Delhi



LIEUTENANT GOVERNOR
JAMMU & KASHMIR

RAJ BHAVAN
SRINAGAR-190001



प्रस्तावना

जम्मू कश्मीर की सांस्कृतिक धरोहर के अध्येता पद्मश्री शिव निर्मोही जी एक गरिमा पूर्ण और प्रभावशाली व्यक्तित्व हैं। मुझे ज्ञात हुआ कि इन्होंने अपने संघर्ष पूर्ण जीवन में 40 पुस्तकें और 100 से भी अधिक लेखों के द्वारा जम्मू की डोगरी संस्कृति, देवस्थलों, सरोवरों, संतों एवं साहित्य को पुनर्जीवित किया है। एक सामान्य जीवन का पालन करते हुए भी अपनी शालीनता और मिलनसार व्यक्तित्व के साथ उन्होंने जिस प्रकार से समाज के विभिन्न वर्गों को लाभान्वित किया है, वह उल्लेखनीय है।

भारत सरकार ने विभिन्न क्षेत्रों में आम जन का महत्वपूर्ण प्रतिनिधित्व करने वाले अति महत्वपूर्ण व्यक्तित्वों को चिह्नित कर उनकी विशेष उपलब्धियों को सम्पूर्ण राष्ट्र में प्रेरणा हेतु पद्मश्री की उपाधि से सम्मानित किया। पद्मश्री शिव निर्मोही जी उन महान व्यक्तित्वों में से एक हैं जिन्होंने देश का मान बढ़ाया है। पद्मश्री शिव निर्मोही जी के जीवन यात्रा को

विस्तार में वर्णन करती इस पुस्तक 'डुग्गर संस्कृति के अध्येता: पद्मश्री प्रो. शिव निर्मोही' को प्रस्तावना प्रदान करते हए मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। डॉ. राजश्री श्रीवास्तव और डॉ. सौरभ द्वारा हिन्दी भाषा में लिखी गई यह पुस्तक डुग्गर संस्कृति के व्यापक प्रसार और पद्मश्री निर्मोही जी के व्यक्तित्व को समझने में निश्चित रूप से सहायक होगी।

जम्मू कश्मीर संघ राज्य क्षेत्र के उपराज्यपाल के दायित्व का निर्वाह करते हुए, मैं निश्चित रूप से कह सकता हूँ कि यहाँ के प्रत्येक क्षेत्र में संस्कृति, कला और साहित्य का अनुपम रूप विद्यमान है। यहाँ के नदी, नाले, प्राकृतिक छटाएँ, अनछुई सांस्कृतिक धरोहर, दुर्ग, शिलाएँ, प्रतिष्ठित देव स्थल इत्यादि अनूठा अनुभव प्रदान करते हैं। सुदूर क्षेत्रों में आज भी हमें डोगरी गीतों और काव्य छंदों जैसे कि भाख की सुंदर निर्मल गूंज वहाँ की प्रकृति में समाई हुई संस्कृति की सरलता और जीवन शैली को अद्‌भुत रूप से दर्शाती है। डुग्गर संस्कृति और साहित्य जिस समय में अपने अस्तित्व हेतु संघर्षमय था, उस समय कई साहित्यिक योद्धाओं के साथ मिलकर अपने नैसर्गिक जोश और जुनून से श्री निर्मोही जी ने न केवल डुग्गर की सांस्कृतिक धरोहर को बचाए रखा बल्कि पुनर्जीवित भी किया है। जम्मू मण्डल में इस क्षेत्र के सामाजिक और सांस्कृतिक पुनर्स्थापन को लेकर पद्मश्री शिव निर्मोही जी का योगदान निःसन्देह अभूतपूर्व है । शिव निर्मोही जी ने इस क्षेत्र में यहाँ के इतिहास, मंदिर, स्मारक, लोक-गीत, भाषा-विज्ञान, पर्यटन, धर्म, सांस्कृतिक धरोहर, जातियों, जन-जातियों, अनुसूचित जातियों, परम्पराओं, जीवन- शैली, रीति-रिवाज, खान-पान, पूजा-विधियों इत्यादि अनेक विषयों पर अपना योगदान दिया है। अपने अध्ययन और अध्यापन के कार्य को प्राथमिकता देते हए उन्होंने अपनी आने वाली पीढ़ियों के ज्ञान के मार्ग को सींचने हेतु ऋषि भागीरथ जैसा सदकार्य किया। यह आने वाली पीढ़ी के लिए निश्चय ही महत्वपूर्ण उदाहरण है।

इस पुस्तक में पद्मश्री शिव निर्मोही जी के संघर्ष पूर्ण जीवन, उनकी शोध यात्राओं एवं लेखों तथा कृतियों का विस्तार पूर्वक वर्णन हिन्दी भाषा में किया गया है। मैं पुस्तक की लेखिका डॉ. राजश्री श्रीवास्तव और डॉ. सौरभ को साधुवाद देता हूँ कि उन्होने इस कार्य को चुना! हिन्दी भाषा के माध्यम से पद्म श्री निर्मोही जी के महत्वपूर्ण योगदान को व्यापकता प्रदान करना अपने आप में एक चुनौती पूर्ण और प्रशंसनीय कार्य है। मैं डॉ. राजश्री और उनके सहयोगियों की भूरि-भूरि प्रशंसा करता हूँ और आशा करता हूँ कि क्षेत्रीय संस्कृति और भाषाओं को हिन्दी के माध्यम से व्यापक पाठकों तक पहुंचाने का उनका यह प्रयास देश में सांस्कृतिक एकता स्थापित करने में सहायक होगा।

२१ जून २०२२
श्रीनगर

(मनोज सिन्हा)

उपोद्घात

शिव निर्मोही जी जम्मू-कश्मीर प्रांत के राहुल सांकृत्यायन हैं। जम्मू-कश्मीर और विशेष रूप से डुग्गर क्षेत्र के इतिहास, धर्म, संस्कृति, परिवेश, दरवेश, पौराणिक स्थल आदि पर 40 से अधिक पुस्तकों का प्रकाशन कर चुके हैं, यात्रा अभी अनवरत जारी है। इस घुमक्कड़ लेखक की जीवनी को शब्दों बाँधना बहती हुई जलराशि को समेटने के समान है। कार्य दुस्साध्य होते हुए भी डॉ० राजश्री और प्रो० सौरभ की प्रस्तुति सराहनीय है। 2012 तक के जीवन के अनुभव को निर्मोही जी ने स्वयं 'जातरा चक्कर' और 'जीवन चक्र' शीर्षक में संक्षेप में समाहित किया। इसलिए उनके अब तक के अनुभव को समग्रता, सघनता, और जीवंतता के साथ लोगों के समक्ष रखने की महती आवश्यकता थी जिसे पूरा करने का यह एक विनम्र प्रयास है। निर्मोही जी की रचना धर्मिता और उनके साहित्यिक अवदान को ध्यान में रखकर 2020 में भारत सरकार ने उन्हें चौथे सर्वोच्च नागरिक सम्मान पद्मश्री से सम्मानित किया। उनकी जीवन यात्रा सच्चे अर्थों में प्रेरणा का अनुपम स्रोत है।

जीवन के अनेक झंझावातों को सहते हुए अध्ययन की जो ललक बालक शिवदत्त में जगी वह पद्म अलंकृत शिव निर्मोही जी में अनेकश: उत्साह के साथ विस्तार पा रही है। बाल सुलभ जिज्ञासा को कलम का धनी एक कथाकार मिल गया। डोगरी क्षेत्र के इतिहास, सामाजिक जीवन, कला और संस्कृति का व्याख्यान करते हुए निर्मोही जी की किस्सागोई की छाप उनकी जीवनी पर न हो तो मजा ही क्या। डॉ० राजश्री, जो अवध

विश्वविद्यालय से हिन्दी साहित्य में पीएचडी हैं, और प्रो० सौरभ, जो सिद्धार्थ विश्वविद्यालय में प्रबन्धन विभाग के आचार्य हैं, ने उनके साहित्य का अवगाहन करके और उनसे लंबी-लंबी चर्चाएं करके जिस शैली में इस जीवनी को पाठकों के समक्ष रखा है वह कथाकार शिव निर्मोही की झलक भी है। दोनों लेखक दाम्पत्य का निर्वाह करते हुए अध्ययन और रचनात्मक लेखन में सक्रिय रहते हैं। शिव निर्मोही जी के जीवनवृत्त पर शोध और सरस प्रस्तुति हेतु मैं डॉ० राजश्री और प्रो० सौरभ को साधुवाद देता हूँ।

शिव निर्मोही जी एक जिज्ञासु शोधकर्ता हैं। जब भी उनसे मुलाकात होती है वे अपनी किसी-न-किसी आने वाली पुस्तक की पाण्डुलिपि अवश्य दिखाते हैं। उनमें सदैव एक सुलभ एवं सरल व्यक्तित्व का दर्शन होता है। जम्मू-कश्मीर की सांस्कृतिक धरोहर को अपनी लेखनी और व्याख्यानों द्वारा लोगों तक पहुँचाने की उनकी ललक किसी भी शोधार्थी के लिए प्रेरणादायी है। अभी हाल ही में (29 अक्तूबर 2022 को) मैं उनके साथ माँ पार्वती के विवाह स्थल मानतलाई के साथ-साथ अति प्राचीन शुद्ध महादेव मंदिर गया। ये दोनों स्थल ऊधमपुर जिले में हैं। साथ में मेरे माता-पिता भी थे। अपने नवें दशक में भी निर्मोही जी ने जिस उत्साह के साथ इन स्थलों का वर्णन किया वह किसी के लिए भी विस्मयकारी हो सकता है। भ्रमण करते हुये जिस आत्मीयता और सहृदयता से उन्होंने प्रत्येक आयु वर्ग के लोगों से संवाद किया वह मेरे लिए अविस्मरणीय है। लौटते समय उन्होंने चेनानी में अपने कुछ लेखक मित्रों से भी मिलवाया। उनमें परस्पर संवाद का साक्षात्कार कर मुझे उनकी ऊर्जा के स्रोत की भी एक झलक मिली। उनकी पुस्तकें इसका स्वयं प्रमाण हैं।

इस जीवनी के अंत में निर्मोही जी द्वारा प्रकाशित अधिकतर ग्रन्थों का सारांश देने से इसकी उपादेयता में वृद्धि हुई है। आशा है कि पाठक इस जीवनी में न केवल जम्मू-कश्मीर के एक सशक्त हस्ताक्षर से रूबरू होंगे

बल्कि हिन्दी साहित्य में डोगरी क्षेत्र के योगदान से भी प्रभावित होंगे।इस पुस्तक के माध्यम से हिन्दी भाषी पाठक निश्चय हीशिव निर्मोही जी के व्यक्तित्व दर्शन के साथ-साथ जम्मू-कश्मीर की मानसिक यात्रा भी करेंगे।

अनिल तिवारी

दर्शन एवं संस्कृति विभाग

श्री माता वैष्णो देवी विश्वविद्यालय

कटड़ा, जम्मू और कश्मीर

लेखक की कलम से

गोरा, चिट्टा रंग, लंबाई पाँच फुट दस इंच, दुबला पतला शरीर, दूध से सफेद बाल, स्वाभिमान और आत्मविश्वास से दमकता मुखमंडल, शांत स्वभाव यह प्रो. शिव निर्मोही जी के व्यक्तित्व की पहचान है। प्रो. शिव निर्मोही जी देश के श्रेष्ठ रत्नों में से एक हैं। पेशे से निर्मोही जी शिक्षक थे। समाज में उनका स्थान एक उच्च कोटि के शिक्षक तथा शोधकर्ता के रूप में है। प्रो. निर्मोही जी एक सफल शिक्षक कुशल रचनाकार तथा कला संस्कृति के शोध कर्ता हैं। प्रो. निर्मोही जी का कला और संस्कृति पर किया गया कार्य उल्लेखनीय है।

कहते हैं रचनाएँ जीवन का प्रतिबिंब होती हैं। शिवदत्त की प्रत्येक रचना उनके अपने जीवन के अनुभवों का निचोड़ है। एक-एक रचना के लिए उन्होंने कड़ा संघर्ष किया है। जुनूनी ऐसे कि कई बार तो बिना भोजन किए हुए सिर्फ पानी पीकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर भ्रमण करते रहे हैं। ऐसा नहीं था कि उन्हें भोजन नहीं मिलता था किन्तु प्रो. निर्मोही जी का मानना था कि जितना समय वह भोजन के लिए रुकेंगे उतने समय में तो वह अपनी पुस्तक के लिए एक नए क्षेत्र की खोज कर लेंगे। ऐसे जुझारी प्रवृत्ति के व्यक्ति हैं शिव निर्मोही जी। उम्र के 84 बसंत देखने के पश्चात भी उनके अंदर जीवटता अभी भी विद्यमान है। किसी भी कार्य के लिए कोई भी आवाज लगाए वह तुरंत ही तैयार हो जाते हैं। उन्हें अनेक विषम परिस्थितियों से गुजरना पड़ा, विशेषतः जब जम्मू-कश्मीर आतंकवाद की अग्नि से जल रहा था, प्रो. शिव निर्मोही अपने प्रेम और मैत्रीपूर्ण भाव से संपर्कों का सूत्र बांधते हुए अपनी जिज्ञासा को शोध की चेतना से शांत कर रहे थे।

डुग्गर संस्कृति के शोध के विषय में साक्षात्कार अनायास ही श्री निर्मोही जी से हुआ। एक विशेष आमंत्रण पर श्री माता वैष्णो देवी विश्वविद्यालय में डुग्गर प्रदेश के अद्‌भुत पूजा स्थलों के बारे में प्रो. शिव निर्मोही जी व्याख्यान दे रहे थे। ऐसा प्रतीत होता था कि प्रत्येक पूजा स्थल एवं प्राचीन मंदिरों के पथ आँखों के सामने से गुजर रहे हों और एक-एक मंदिर की मूर्ति एवं पत्थर प्रो. निर्मोही के मुख से वर्णित हो ह्रदय में प्रवेश कर रहे हों। यकीनन इस व्याख्यान ने पूरे डुग्गर प्रदेश के मंदिरों को नव रूप प्रदान कर दिया था। व्याख्यान में उनकी ऊर्जा, बालसुलभ उत्सुकता तथा गहन दर्शन अद्‌भुत रूप से आत्मा को आनंदित करने वाला था।

उत्सुकता की डोर को पकड़े हुए मैं प्रो. शिव निर्मोही जी के निमंत्रण पर उनके निवास स्थान पर जा पहुंची। पैंथल ग्राम में निर्मित उनका निवास स्थान एक शोधार्थी का मंडप या फिर कहें एक ऋषि स्थान से कम नहीं है। घर का एक हिस्सा निर्माणाधीन था, एक हिस्से में बेटा-बहू और परिवार था तथा एक हिस्से में प्रो. निर्मोही जी का साधना कक्ष और एक विशाल अध्ययन कक्ष था। पहुँचते ही श्री शिव निर्मोही जी से ज्ञात हुआ कि निर्माणाधीन भवन का निर्माण उन्होंने अपनी पेंशन और सेवा निवृत्ति से मिली राशि को लगाकर शोधार्थियों के लिए विशेष निःशुल्क छात्रावास और पुस्तकालय स्थापित करने के उद्देश्य से किया है। जिज्ञासा की पिपासा को मानो गागर में सागर मिल गया हो। डुग्गर संस्कृति का अद्‌भुत पुस्तक भंडार देखकर मन आह्लादित हो उठा। आश्चर्य का विषय तो प्रो. निर्मोही के द्वारा डुग्गर संस्कृति के ऊपर लिखित 35 से भी अधिक पुस्तकों का संग्रह था। इसके अतिरिक्त 100 से अधिक लिखे गए लेखों, अभिलेखों का संग्रह भी था। प्रो. निर्मोही से वार्ता करते-करते उनके अनुभवों का दर्शन प्राप्त करते-करते ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो डुग्गर प्रदेश की जातियों, जन-जातियों, कला, संस्कृति, मंदिर, स्मारक, सरोवर, इत्यादि के समग्र दर्शन हो गए हों। समय का चक्र गतिवान रहता है तथा विशेष अनुभूतियों के समय वह पंख लगाकर उड़ जाता है। दोपहर से शुरू हुई इस बैठक में डुग्गर संस्कृति पर हो रही चर्चा को रात्रि के अंधकार में प्रो. निर्मोही जी

की पत्नी श्रीमती अनुसूया जी की वाणी ने थामा। निश्चय ही धर्म पत्नी, सहयोग धर्मिता 77 वर्ष के पति के स्वास्थ्य एवं अनुशासन हेतु अपना धर्म निर्वाह कर रही थीं। प्रेम और परिपूर्णता, धर्म और कर्मणता का यह सहयोगी वृतांत आत्मा को छू जाने वाला था। प्रेम और आशीर्वाद पूर्वक प्रो. निर्मोही जी ने मुझे स्वयं द्वारा लिखित पुस्तक "डुग्गर की जातियाँ – एक अध्ययन" भेंट की।

इसके बाद कई बार निर्मोही जी से मिलने का अवसर मिला कभी श्री माता वैष्णो देवी विश्वविद्यालय में किसी व्याख्यान को देते हुए कभी किसी सांस्कृतिक कार्यक्रम में उनके द्वारा मुख्य अतिथि की भूमिका निभाते हुए। उनसे हुई हर भेंट से मुझे उन्हें और करीब से जानने का अवसर मिला। उनके व्यक्तित्व की आभा मेरे अंदर एक नयी ऊर्जा का संचार कर रही थी। ऐसे ही एक दिन उनके व्यक्तित्व पर डोगरी में लिखी पुस्तक 'मोनोग्राफ प्रो. शिव निर्मोही' पढ़ने का अवसर मिला। उस पुस्तक ने मेरे अंदर चल रही उधेड़ बुन को शांत कर दिया और मैंने निश्चय किया कि मैं क्यों न निर्मोही जी के जीवन से जुड़ी घटनाओं और उनके योगदान को हिन्दी में लिखूँ और हिन्दी भाषी लोगों तक पहुंचाऊँ।

जिस क्षण यह विचार मन में आया कि मुझे प्रो. शिव निर्मोही के व्यक्तित्व के बारे में कुछ लिखना चाहिए तो सबसे पहली बात जो मेरे मन में आई वो यह थी कि मुझे प्रो. निर्मोही जी से अनुमति ले लेनी चाहिए। अपने मन में चल रहे विचारों को मैंने निर्मोही जी से साझा किया तो उन्होंने अत्यंत सरल भाव से जवाब दिया यह तो बड़ी अच्छी बात है आप जरूर लिखें। इसके लिए उन्होंने अपने पूर्ण सहयोग का आश्वासन प्रदान किया। उनके इस आश्वासन से मेरे संकल्प को और भी बल मिल गया।

विशेष आनंद की अनुभूति तो तब हुई जब लिखते-लिखते पता चला कि भारत सरकार ने डुग्गर प्रदेश में किए गए प्रो. शिव निर्मोही जी के योगदान के लिए उन्हें पद्म श्री के पुरस्कार से सम्मानित करने की घोषणा की है।

इस पुस्तक की रचना का उद्देश्य शिव निर्मोही जी के जीवन के जीवट शोधकार्यों एवं डुग्गर संस्कृति के प्रभास को ज्यादा से ज्यादा लोगों तक विशेषकर हिन्दी भाषी जिज्ञासुओं तक पहुंचाना है।

इस पुस्तक का ध्येय है कि प्रो. शिव निर्मोही जैसे महान परंतु साधारण, सरल ऋषित्व प्राप्त व्यक्तित्व, जो कि पद्मश्री से भी सम्मानित हो उनका जीवन दर्शन अधिकाधिक युवाओं और प्रारम्भिक शोधकर्ताओं तक पहुँचाया जा सके।

इस पुस्तक को प्रत्यक्ष प्रस्तुत करने में कई लोगों का सहयोग है। सर्वप्रथम मैं अपने गुरुजी श्री आत्मानन्द जी और स्वामी भद्रशील जी के मार्गदर्शन और सदैव प्रोत्साहन हेतु उनकी चरण वंदना करती हूँ। कोई भी रचना गुरु के आशीर्वाद से ही साकार हो सकती है।

मैं जम्मू कश्मीर के माननीय उप-राज्यपाल महोदय श्री मनोज सिन्हा जी के नेतृत्व को धन्यवाद करती हूँ, कि उन्होंने जम्मू-कश्मीर में भारत के साथ सांस्कृतिक एकता को बढ़ावा दिया है। उनके प्रयास से आम जन में जीवन की नयी चेतना आई है।

पद्मश्री शिव निर्मोही जी हमारे इस कार्य के केंद्र सूत्र हैं। उनसे सहज संवाद और दर्शन का लाभ हमें निरंतर मिलता रहा। मैं उनके पितातुल्य स्नेह और जीवन दर्शन हेतु सदैव आभारी रहूंगी।

परिवार सहयोग की प्रथम इकाई है। मैं अपने स्वसुर श्री दयानंद लाल जी और माता-पिता श्रीमती राजवती श्रीवास्तव और डॉ. विजय कुमार जी के समर्थन और प्रोत्साहन हेतु आजीवन उनकी आभारी हूँ। मेरे भाई श्री जे. वी. शिवेंद्र, श्री सुभाष श्रीवास्तव, श्री सौरभ श्रीवास्तव और भाभियों श्रीमती जया, श्रीमती अनुप्रिया और श्रीमती विधा तथा ननदों श्रीमती पल्लवी प्रधान, श्रीमती मंजरी, श्रीमती आकांक्षा, और नंदोई श्री आनंद मोहन प्रधान, श्री संतोष श्रीवास्तव का प्रोत्साहन हेतु आभार व्यक्त करती हूँ। मेरी बहन श्रीमती विजयश्री ने अपने विद्वता से और गहन चिंतन से इस पुस्तक में निरंतर परामर्श दिया है। मैं उन्हें और अपने जीजा श्री समीर श्रीवास्तव जी को भी धन्यवाद अर्पित करती हूँ।

मैं श्री शिवांशु सुशील महाविद्यालय, बहराइच, उत्तर प्रदेश में संविदा सहायक आचार्य के रूप में सेवा दे रही हूँ। मैं वहाँ की प्रधानाचार्य और प्रबन्धक महोदय को धन्यवाद देती हूँ कि उन्होंने इस कार्य हेतु शोध करने के लिए, पठन पाठन करने हेतु सदैव सहयोग दिया। मैं आप सभी को धन्यवाद देती हूँ।

श्री माता वैष्णो देवी विश्वविद्यालय मेरा अस्थायी गृह स्थान रहा है क्योंकि मेरे पति एवं पुस्तक के सह लेखक डॉ. सौरभ पुस्तक की संकल्पना के समय यहाँ पर व्यवसाय प्रबंधन विभाग में सह-आचार्य के रूप में कार्यरत थे। यहाँ का आध्यात्मिक और अकादमिक वातावरण स्वाभाविक रूप से चिंतन और लेखन इत्यादि को प्रोत्साहित करता है। मैं यहाँ के सभी मित्रों और सहयोगियों का धन्यवाद अर्पित करतीं हूँ। पुस्तक की चर्चा में डॉ. अनिल तिवारी, सहायक आचार्य, दर्शन विभाग, श्री माता वैष्णो देवी विश्वविद्यालय, से सदैव ही सहयोग मिला। उनके सहज सहयोगी-संग हेतु मैं उनको धन्यवाद अर्पित करतीं हूँ।

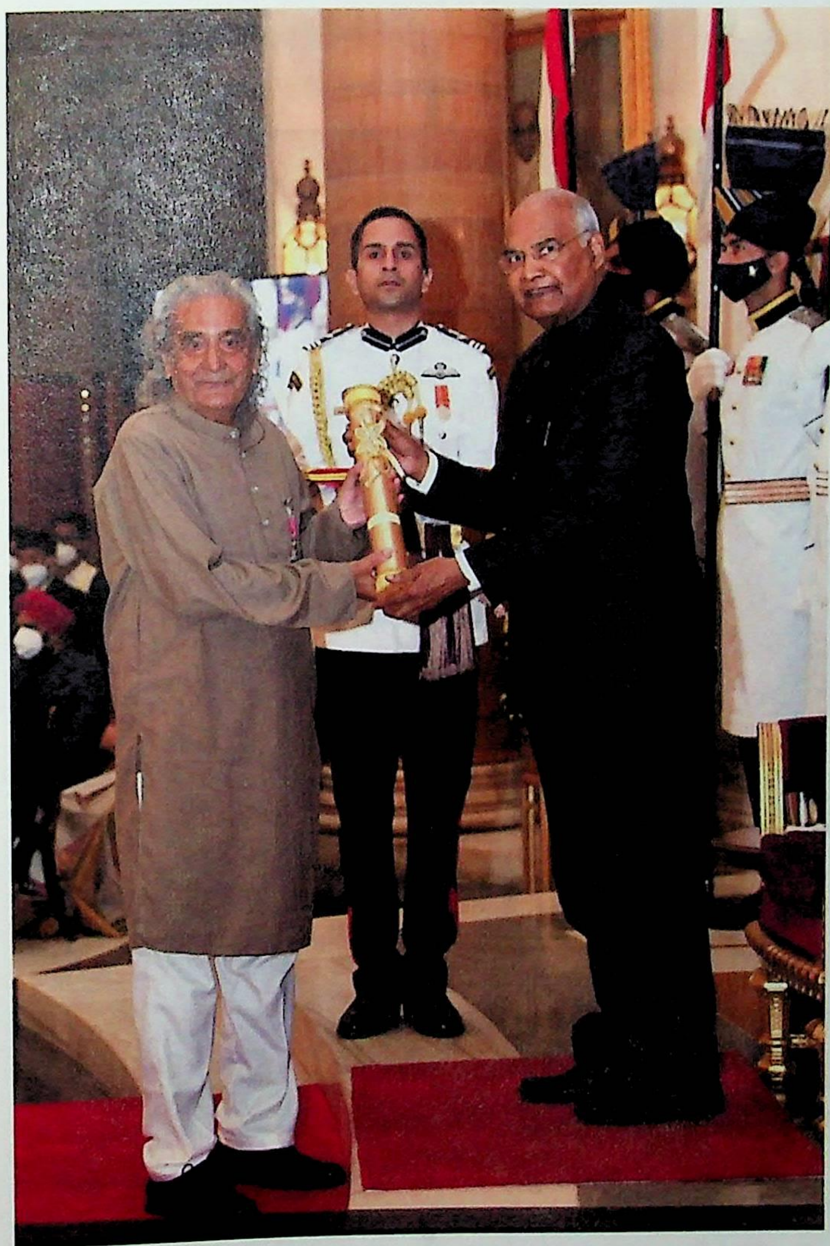
मैं अपनी पुस्तक के सह लेखक प्रो. सौरभ जो कि तत्काल में सिद्धार्थ विश्व विद्यालय, कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर, उत्तरप्रदेश में प्रबंधन विभाग में आचार्य के पद पर कार्यरत हैं, का धन्यवाद करती हूँ। प्रो. सौरभ का मार्ग दर्शन और सहयोग मुझे पल-पल इस पुस्तक के शोधकार्य के लिए मिलता रहा। पुस्तक की रूपरेखा किस प्रकार होगी उसमें कौन सी सामाग्री कहाँ पर किस प्रकार व्यवस्थित की जाएगी इसका पूरा दायित्व सौरभ जी ने ही पूर्ण किया है। वास्तव इस पुस्तक को लिखने का विचार यदि मेरे मन में आया था तो इसे मूर्त रूप में लाने में प्रो. सौरभ का अमूल्य सहयोग रहा है। सह लेखक के रूप में प्रो. सौरभ का गहन चिंतन और योगदान पुस्तक के एक-एक शब्द में झलकता है।

मेरी इस पुस्तक के लेखन में हमारी पुत्री इशानी लाल के अवरणीय सहयोग के लिए उसे आशीर्वाद और धन्यवाद अर्पित करती हूँ ।

मैं श्री संजय आनंद जी के प्रति अत्यंत आभारी हूँ जिहोंने इस कार्य की महत्ता को महसूस किया और इसे पाठकों तक पहुंचाने हेतु प्रकाशित करने का निर्णय लिया। प्रकाशन दल के सभी सदस्यों को मेरा विनम्र धन्यवाद है।

डॉ. राजश्री श्रीवास्तव

विषय सूची





1

जीवन वृतान्त

1. जन्म तथा परिवार

यह बात सन 1935 ई. की है जब जम्मू-कश्मीर राज्य के रियासी जिले में स्थित पैंथल नामक ग्राम में एक साथ दो महत्वपूर्ण घटनाएँ हुईं। एक घटना यह कि उस समय के तात्कालिक महाराजा प्रताप सिंह के राजगुरु स्वामी नित्यानन्द जी अपना ज्ञान कोट का आश्रम छोड़कर पैंथल ग्राम में आ गए, और दूसरी घटना यह कि इसी समय निंबार्क संप्रदाय के संत स्वामी जगन्नाथ जी के दिव्य चरण पैंथल ग्राम के ठाकुर द्वारा में पड़े। कुछ दिन ठाकुर द्वारा में व्यतीत करने के पश्चात स्वामी जगन्नाथ जी डडूरा नाम के सुंदर व मनोहर स्थान पर चले गए जो कि पैंथल के पास ही एक छोटा सा गाँव था। वहीं उन्होंने अपना आश्रम बना लिया और भक्ति में लीन हो गए। पैंथल ग्राम में सुखराम पाधा [उपाध्याय] का परिवार रहता था जिसके गणपति और सावन मल नाम के दो पुत्र थे। अपने वंश को आगे बढ़ाने की चाह में सुखराम ने अपने दोनों बेटों का विवाह अत्यन्त छोटी आयु में ही करा दिया था। सावन मल का विवाह सुंजूबा के जगन्नाथ शाह की पुत्री आसो देवी के साथ हुआ था। विवाह के कुछ दिनों के पश्चात ही सुखराम पाधा बीमार हुए, बहुत ज्यादा इलाज कराने के उपरांत भी कोई सुधार नहीं हुआ। उस समय उनका छोटा पुत्र सावन मल निःसंतान था। अंतिम समय में अपने पोते की चाह में सावन मल को संतान सुख का आशीर्वाद दे सुखराम इस संसार से विदा लेकर पंच तत्व में विलीन हो गए परंतु विवाह के चौदह वर्षों के बाद भी सावन मल को कोई संतान सुख नहीं मिला।

इसी समय सावन मल स्वामी जगन्नाथ जी के संपर्क में आए और स्वयं को स्वामी जी को सौंप दिया और उनसे दीक्षा प्राप्त की। स्वामी जगन्नाथ जी के संपर्क में आने के पश्चात सावन मल के घर एक पुत्री का जन्म हुआ जिसका नाम स्वामी जगन्नाथ जी ने पुष्पा रखा, साथ ही सावन मल को आशीर्वाद दिया कि शीघ्र ही तुम्हारे घर एक पुत्र का जन्म होगा जो तुम्हारे घर में ही नहीं पूरे देश में तुम्हारा और तुम्हारे परिवार का नाम रोशन करेगा। कुछ वर्षों के उपरांत सावन मल की पत्नी आसो देवी ने एक पुत्र को जन्म दिया। स्वामी जगन्नाथ जी ने सावन मल के इस पुत्र का नाम 'शिवदत्त' अर्थात 'शिव का दिया गया' रखा। सावन मल और आसो देवी की श्रद्धा स्वामी जी के प्रति और अधिक बढ़ गयी तथा वे स्वामी जी को परमेश्वर के समान ही पूजने लगे।

2. नामकरण

शिवदत्त के नामकरण को लेकर एक बड़ी ही रोचक घटना है। स्वामी जगन्नाथ जी के नामकरण के पश्चात शिवदत्त की दादी ने उन्हें घर में बुलाने का नाम मदन रखा। गाँव की औरतें उन्हें इसी नाम से बुलाती थीं, किन्तु पुरुष मद्धो नाम से बुलाते थे। गाँव में मद्धो नाम के और भी बच्चे थे इसलिए लोगों ने उनके नाम के आगे एक और विशेषण जोड़ दिया 'पाधे' इस प्रकार शिवदत्त का पूरा नाम 'पाधे द मद्धो' हो गया। शिवदत्त का यह नाम पूरे गाँव में प्रचलित हुआ यहाँ तक कि विद्यालय में भी सभी इसी नाम से बुलाते थे। शिवदत्त का ननिहाल कंडी में होने के कारण कुछ लोग उन्हें 'कंडी का जट्ट' कहकर भी बुलाते थे। इस प्रकार शिवदत्त के कई नाम हो गए थे।

अपने बचपन के दिनों में शिवदत्त शब्दों का उच्चारण सही ढंग से नहीं कर पाते थे अर्थात तुतलाते थे इस कारण उन्हें साथ रहने वालों के मजाक पूर्ण शब्दों का भी सामना करना पड़ता था। जिससे वह काफी दुखी हो जाया करते थे। गुरु महाराज ने जब शिवदत्त के तुतलाने के बारे में सुना तो पिता सावन मल को सुझाव दिया कि अपने पुत्र को बादाम और मिश्री खिलाओ। माँ आसो देवी ने बादाम और मिश्री खिलाना शुरु किया जिसका

परिणाम यह हुआ कि धीरे-धीरे शिवदत्त का तुतलाना कम हो गया। पर छ से श के उच्चारण में एकरूपता बनी रही जिसके कारण शिवदत्त को काफी समय तक शर्मिन्दगी उठानी पड़ी।

3. शिक्षा

शिवदत्त जब छोटे थे तब ही से उन्होंने अपने पिता को अपने संगी साथियों और रिश्तेदारों को कहते सुना था कि शिवदत्त को पढ़ने के लिए गुरुकुल भेजना है जहां वह व्याकरण, संस्कृत, शास्त्र और उपनिषद की शिक्षा ग्रहण करेगा, जिससे वह विद्वान बनेगा। पिताजी की यह सोच शायद गुरुजी की प्रेरणा का ही स्रोत थी। शिवदत्त के पिता शिवदत्त को विद्वान के रूप में देखना चाहते थे। उनका मानना था कि विद्वान बनने के लिए धर्म की शिक्षा लेना अनिवार्य है, बिना धार्मिक शिक्षा के मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास संभव नहीं है। छोटा सा शिवदत्त मन ही मन कल्पना करने लगा कि जब वह बड़ा होगा और गुरुकुल शिक्षा ग्रहण करने जाएगा तो उसके लिए एक सफेद धोती, गले में गमछा, पैर में खड़ाऊँ, सिर पर साफा और गले में एक माला होगी। शिवदत्त जब छोटे थे तभी से धार्मिक कार्यों में उनकी रुचि थी। शिव दत्त बीच-बीच में अपने माता-पिता के साथ गुरु महाराज की कुटिया में भी जाते थे। कुटिया का वातावरण बड़ा ही आध्यात्मिक था। शिव दत्त को वहाँ बड़ा ही आनंद आता था और वह वहाँ मन लगाकर आत्मा, परमात्मा, जगत, माया, मोह आदि विषयों पर प्रवचन सुना करते थे।

जब शिवदत्त छः वर्ष के हुए और पहला नवरात्र आया तो पिता सावन मल उन्हें गुरु स्वामी जगन्नाथ जी के आश्रम ले गए। स्वामी जी ने शिवदत्त के नामकरण के समय शिवदत्त को कीर्तिमान, विद्वान और यशस्वी होने का आशीर्वाद दिया। उन्होंने प्रथम गुरुमंत्र के रूप मे पहले दो अक्षर 'अ', 'आ' सिखाकर शिवदत्त की विद्या का आरंभ किया, इसके पश्चात उन्हें पैंथल के विद्यालय में प्रवेश दिलाया जो कि उस समय का प्राथमिक विद्यालय था तथा आगे चलकर मिडिल विद्यालय बन गया। बालक शिवदत्त वैसे तो सभी विषयों में होशियार था परंतु जोड़-घटाने एवं पहाड़ों में उनका विशेष रुझान

नहीं था। जिस समय शिवदत्त विद्यालय में थे उस समय जम्मू-कश्मीर में ज्यादातर विद्यालयों में उर्दू शिक्षा का ही प्रचलन था, परंतु शिवदत्त का रुझान उर्दू में न होकर हिन्दी में था। हालांकि हिन्दी पढ़ने वाले छात्र कम थे परंतु फिर भी शिवदत्त हिन्दी की पढ़ाई करने लगे।

1947 में शिवदत्त जिस प्राथमिक विद्यालय में पढ़ते थे वह प्राथमिक विद्यालय से मिडिल विद्यालय बन गया। उस विद्यालय में पाँच शिक्षक थे, जिसमें से बोधराज जी नाम के शिक्षक का अच्छा प्रभाव शिवदत्त पर पड़ा। जो कि कटड़ा के निवासी थे और एक आदर्श शिक्षक थे। उनके होने से विद्यालय का वातावरण ही परिवर्तित हो गया। प्रार्थना सभा में वह प्रतिदिन कोई न कोई प्रेरक भाषण देते। देश भक्ति, राष्ट्रीयता, समाजसेवा, कर्मठता और ऊंची सोच का पाठ पढ़ाते थे। उनके बोलने का अंदाज भी बड़ा ही प्रभावी था। उनके साथ ही भाई हेमराज और जीजा कृष्ण और संस्कृत के विद्वान कृष्ण दत्त जी भी थे जो शिवदत्त को पढ़ाते थे।

शिक्षक हेमराज गणित सिखाने में जितने तेज थे शिवदत्त गणित सीखने में उतने ही कमजोर थे। जोड़-घटाने, गुणा-भाग में शिवदत्त से प्रतिदिन कोई न कोई गलती अवश्य ही हो जाती थी। जिसका परिणाम यह होता था कि शिवदत्त को कभी मुर्गा बनना, कभी कान पकड़ना और कभी-कभी मानीटर का मुंह पर चांटा भी झेलना पड़ता था। शिवदत्त ने गणित में रुचि लेने की बहुत कोशिश की किन्तु 'ढाक के वही तीन पात' वाली कहावत के समान कोई विशेष परिणाम नहीं निकला। हिन्दी, भूगोल, इतिहास और विज्ञान की कक्षाओं में शिवदत्त रुचि लेते थे और उनके जवाब भी अच्छे से देते थे एवं लिखने में भी शिवदत्त को रुचि थी।

संस्कृत के शिक्षक कृष्णदत्त जी की शिवदत्त पर विशेष कृपा थी, वह प्रार्थना सभा में साधना भी कराते थे। वे जब आँख बंद करके माथे के ऊपर ध्यान लगाने को कहते थे तो शिवदत्त को लगता था कि मानों उनके माथे पर मकड़ियाँ चल रही हों। उन्होंने शिवदत्त को गायत्री मंत्र भी सिखाया। शिवदत्त ने कृष्ण दत्त जी से कई मंत्र सीखे थे जिनमें से एक मंत्र था:-

"संग गच्छतम, संग वाद ध्वम, संगो मनासि जानताम....... अर्थात् हम एक साथ चलें, हम एक साथ बोलें, हम एक साथ सोचें और हमारे सुख-दुख एवं सभी भाव एक जैसे हों।"

शिवदत्त के मन पर इस श्लोक ने गहरी छाप छोड़ी। जिसका परिणाम यह हुआ कि शिवदत्त ने कक्षा के बच्चों के साथ मिल-जुलकर रहना और आपस में प्रेम के साथ व्यवहार करना प्रारम्भ कर दिया। जब शिवदत्त ने किताबें पढ़ना प्रारम्भ किया तो उन्हें पता चला कि यह मंत्र अमृत पाद डांगे की पुस्तक 'प्राचीन भारत में साम्यवाद' नामक पुस्तक का पहला श्लोक था। संभवतः इसी से शिवदत्त की रुचि भारतीय परंपरा और संस्कृति की और जागृत हुई।

4. कालटो से कवि

शिवदत्त के लेखन से संबन्धित एक और घटना उनके जीवन में घटित हुईं। बात उन दिनों की है जब शिवदत्त चौथी कक्षा में पढ़ते थे। छुट्टी होने के पश्चात वह नाचते गाते घर पहुंचे तो उन्होंने देखा कि उनके घर में एक ऊंची-लंबी, कद-काया का एक सन्यासी खड़ा हुआ है। शिवदत्त को देखते ही उन्होंने कहा कि बेटा तू तो बड़ा होकर कवि बनेगा। उस समय तो शिवदत्त को यह समझ ही नहीं आया कि कवि कहते किसे हैं। शिवदत्त ने अपने दोस्तों से पूछा तो किसी ने कहा कि वह देवता होता है, किसी ने कहा कि वह बड़ा आदमी होता है और एक ने कहा कि जो कविता लिखता है वह कवि होता है। शिवदत्त ने तो सपने में भी नहीं सोचा था कि वह कविता लिख सकते हैं।

शिवदत्त की एक बड़ी बहन थी जिसका नाम पुष्पा था। शिवदत्त की उससे प्रतिदिन लड़ाई होती थी। उसका रंग भी सांवला था, एक दिन शिवदत्त ने उसे चिढ़ाने के लिए उस पर कुछ पंक्तियाँ लिखीं और उसे सुनायाः 'कालटो बड़ी गंदी है जूठी मलाई खंदी है'। जाने-अंजाने ही सही इस तुक बंदी ने शिवदत्त की प्रथम पंक्तियों को जन्म दिया हालांकि पुष्पा ने जब यह सुना तो उसने शिवदत्त को बहुत मारा। उस दिन के बाद तो जैसे शिवदत्त

और पुष्पा के बीच में जंग ही छिड़ गई। शिवदत्त पुष्पा को चिढ़ाने के बहाने ढूँढता और पुष्पा उसे मारने के एक दिन शिवदत्त ने पुष्पा को चिढ़ाने के लिए घर की दीवार पर लिखा कि "पंडित जवाहरलाल नेहरू ने आज भाषण में कहा कि पैंथल में पाधों के घर जो कालटो रहती है वो बड़ी गंदी और लड़ाकी लड़की है। अपने भाई से लड़ती है।" इस बात को पढ़कर पुष्पा ने शिवदत्त की झाड़ू से पिटाई की। इससे शिवदत्त की जिद और बढ़ गई और उसने रसोई के कोयलों से लिखना शुरूकर दिया। कहते हैं कि यहीं से शिवदत्त की लेखनी विद्या का प्रारम्भ हुआ।

शिवदत्त के स्कूल में हर शनिवार को बाल सभा का आयोजन होता था, जहां सारे छात्र एकत्र होकर कुछ बोलते थे। शिवदत्त जिन बातों को लोगों से सुनते थे उन्ही बातों को नमक-मिर्च लगाकर सभा में बोल आते थे, इस कारण उनके भाषण को विद्यार्थी खास पसंद करते थे। नेहरू, गांधी, पटेल सभी के शिवदत्त प्रशंसक थे। राष्ट्र से संबन्धित कोई भी विषय हो शिवदत्त सबमें रुचि रखते थे। जोड़-घटाने को छोड़कर किसी भी विषय का, कोई भी सवाल हो हर प्रश्न का जवाब देने के लिए शिवदत्त हमेशा ही तत्पर रहते थे।

शिवदत्त की इसी तत्परता की एक घटना है। जब शिवदत्त चौथी कक्षा के छात्र थे। उनके विद्यालय में एक इंस्पेक्टर आए और उन्होंने छात्रों से सवाल किया कि लिंग कितने प्रकार के होते हैं? सारे छात्र शांत रहे पर शिवदत्त ने हाथ खड़ा कर दिया। शिक्षक जी ने स्पष्ट किया कि उन्होंने लिंग नहीं पढ़ाये हैं, फिर भी इंस्पेक्टर ने शिवदत्त के खड़े हाथ को देखकर कहा कि 'तुम बोलो'। शिवदत्त ने जवाब दिया कि: पाँच। इंस्पेक्टर ने हैरानी से पूछा : पाँच! नाम बताओ। शिवदत्त ने जवाब दिया: 'कलिंग, चलिंग, टलिंग, तलिंग और पलिंग'। शिवदत्त का जवाब सुनकर सारी कक्षा हँस पड़ी। इंस्पेक्टर ने पूछा कि ये नाम तुमने कहाँ सुने हैं। शिवदत्त को समझ आ गया कि उन्होंने गलत जवाब दिया है। पर अब क्या हो सकता था। शिक्षक ने शिवदत्त को घूरा और कहा कि जब जवाब न पता हो तो चुप रहा करो।

5. बचपन की आदतें

शिवदत्त जब चौथी कक्षा में थे तभी उनकी बड़ी बहन पुष्पा ने माँ का घर में हाथ बटाने के लिए स्कूल जाना छोड़ दिया था। चौथी कक्षा में ही शिवदत्त को चोरी करने की आदत पड़ गयी थी इसकी एक घटना है। शिवदत्त की एक छोटी बहन थी जिसका नाम राज था। जो बहुत ही सीधी थी उसे चालाकी बिलकुल भी नहीं आती थी। एक बार शिवदत्त पैसों वाली सन्दूकची देख ली जिसमें माँ पैसे रखती थी। शिवदत्त ने धीमें-धीमें से उसमें से चार पैसे निकाल लिए थे। राज ने उसे पैसे निकालते देख भी लिया। पर यह बात घर वालों को नहीं पता चल पायी थी। सन्दूक ऊपर होने के कारण राज का हाथ वहाँ तक नहीं पहुंचता था। एक बार उसने छड़ी लेकर उसे खोलना चाहा तो सन्दूक ही नीचे गिर गया और सारे पैसे बिखर गए साथ ही शोर की आवाज सुनकर सारे घर वाले भी इकट्ठा हो गए, राज की चोरी पकड़ी गयी थी और वह चोर बन गयी थी। उसे माँ से मार भी पड़ी थी। शिवदत्त को चोरी का चस्का ऐसा लगा कि एक बार विद्यालय के कुछ छात्रों को मिठाई खाते देख बालक शिवदत्त का मन हुआ कि वह भी मिठाई खाये परंतु पैसे न होने के कारण शिवदत्त ने घर से दुअन्नी चुराई और फिर बाजार जाकर जलेबी खरीद कर खाई.... पर चोरी का राज दुकान वाले ने खोल दिया। घर पर डांट तो पड़ी पर अकेला पुत्र होने के कारण मार नहीं पड़ी। एक बार एक घटना और घटी कि शिवदत्त ने माँ की धोती में बंधे पैसे चुरा लिए और बाजार में खर्च कर दिये। शाम को जब शिवदत्त घर पहुंचे और माँ ने खाना दिया तो शिवदत्त को वहाँ राज सोते दिखी। शिवदत्त ने राज के बारे में पूछा कि वह आज इतनी जल्दी कैसे सो गई। माँ ने जवाब दिया कि मेरे पास चार पैसे थे। राज ने चोरी भी की और माना भी नहीं। माँने बताया कि उन्होंने चोरी के लिए राज को बहुत बुरा भला कहा और मारा भी, पैसे चुराने की बात तो राज ने मानी पर पैसे नहीं दिये और मार खा-खाकर सो गयी। शिवदत्त ने सोचा पैसे मैंने चुराए और मार मेरी बहन ने खाई ये अच्छी बात नहीं हुई। शिवदत्त का मन हुआ कि सारी बात बता दे पर वह डर के कारण बोल नहीं सका। एक बार

पहले भी शिवदत्त ने दुकान के गल्ले से पैसे चुराये थे। पर भाई वाल ने पकड़ लिया था तो शिवदत्त पिताजी के घर आने से पहले ही लेट गया था। पिताजी जी के घर आने पर माँ ने उसे बचा लिया और मार नहीं पड़ने दी। पर राज का तो मुँह ही सूजा हुआ था, घर में चोरी कोई भी करता, मार राज को ही पड़ती थी। शिवदत्त को बड़ा दुख हुआ उसने सोचा कि मैंने जो किया वो ठीक नहीं किया। मेरे किए कार्यों की सजा मेरी बहन को मिले यह अच्छी बात नहीं है। शिवदत्त को अपने किए गए काम पर बड़ा पछतावा हुआ और उन्होंने उस दिन के बाद चोरी करना छोड़ दिया।

6. सुसंगत

शिवदत्त के आस-पास तंबाकू पीना आम बात थी। शिवदत्त के पिताजी भी तंबाकू पीते थे। उन्हें तंबाकू का कश भरते और धुआँ निकालते देख शिवदत्त भी चोरी-छिपे सुट्टे लगाने लगा। जब वह लोगों को सिगरेट पीते देखता तो तंबाकू के साथ सिगरेट पीने की चाहत भी जागने लगी। वह सोचता कि उसे सिगरेट का भी स्वाद चखना चाहिए। एक दिन आठ-दस लड़कों के साथ शिवदत्त ने सिगरेट के कश लगा ही लिए। घर वालों को पता न चले इसलिए नल पर आकर खूब कुल्ले किए ताकि सिगरेट की गंध से पता न चल जाये। फिर धीरे-धीरे सिगरेट का चस्का बढ़ता चला गया। कुछ बच्चे स्कूल भी सिगरेट लेकर जाते थे और अध्यापक की नामौजूदगी में सब सिगरेट के कश लगाते थे। कक्षा के बच्चों के सामने सिगरेट पीने में वे अपनी शान समझते थे। सिगरेट पीने की आदत छूटने की भी अलग ही कहानी है। शिवदत्त पंजाब गए हुए थे वहाँ के सिक्ख छात्र सिगरेट से चिढ़ते थे वे उसे हाथ भी नहीं लगाते थे। कहते हैं कि संगत का असर हर इंसान पर पड़ता है। अच्छी संगत का अच्छा और बुरी संगत का बुरा। इन सिक्ख मित्रों के साथ में रहने का असर यह हुआ कि शिवदत्त की सिगरेट की गंदी आदत हमेशा के लिए छूट गयी। और उन्होंने सिगरेट पीना छोड़ दिया।

2

संघर्ष में साधना

1. बँटवारे से उपजा संघर्ष

बात सन 1947 की है जब शिवदत्त की उम्र मात्र दस वर्ष की थी और वे चौथी कक्षा में पढ़ते थे। बैसाखी तक सब ठीक था गर्मी की छुट्टी के बीच शिवदत्त ने देखा कि सब डरे सहमें हुए से हैं और देश में बँटवारे की बातें कर रहे थे। जिसमें लाहौर का भी जिक्र आ रहा था। कुछ कहते थे कि लाहौर हिंदुस्तान का हिस्सा होगा कुछ कहते थे कि लाहौर का माहौल ठीक नहीं है। जितने मुँह उतनी बातें। कुछ पता नहीं चल पा रहा था कि क्या हो रहा है।

शिवदत्त के विद्यालय में कुछ मुसलमान छात्र भी पढ़ते थे। छुट्टियों के बाद पहले कुछ दिन तो वे आए पर फिर धीरे-धीरे उन्होंने पाठशाला आना भी बंद कर दिया था। सभी के चेहरों पर एक खौफ सा नजर आता था। फिर धीरे-धीरे पता चला कि मुसलमानों के लिए एक अलग मुल्क होगा। जिसका नाम पाकिस्तान होगा। पाठशाला में भी इसी बँटवारे की ही बाते होती थी। कोई पक्ष में था तो कोई विपक्ष में, पर इस सारी घटना से बालक शिवदत्त बहुत परेशान था। उसे समझ ही नहीं आ रहा था कि क्या हो रहा है। एक दिन ताऊ परमानन्द ने बताया कि जवाहर लाल नेहरू या सरदार पटेल में से किसी एक को प्रधानमंत्री बनना है।

आखिर देश का बंटवारा हो गया 14 अगस्त को पाकिस्तान एक नया राष्ट्र बन गया और 15 अगस्त को भारत को आजादी मिल गई। इसके बाद जो खबरें अखबार में छपीं वो बहुत ही डरावनी थीं। देखते ही देखते माहौल

बहुत ही डरावना हो गया था। गाँव के जितने भी मुसलमान थे वे भाग कर देवी पिंडी की पहाड़ी पर चढ़ गए थे। एक बार एक आदमी अपने साथ चार बंदूक धारियों को लेकर आया था। उसने गाँव के लोगों को विश्वास में लेकर मुसलमानों को नीचे बुलाया और उनकी तलाशी लेकर सारे पैसे ले लिए और साथ ही उन्हें घेरने का भी प्रयास किया। इतने में भगदड़ मच गयी। कइयों ने तो जान बचाने के लिए पहाड़ी से कूदकर जानें भी दे दीं थीं। वह आदमी पैसे लेकर गाँव छोड़कर चला गया और फिर उसका कोई पता नहीं चला। कुछ अनाथ बच्चे और विधवा महिलाएं गाँव में भी लायी गई थीं। जिनमें से तो कुछ तो शिवदत्त के जान पहचान की भी थीं।

बर्बरता की यह कहानी कई दिनों तक चलती रही थी। कहीं किसी एक घर में आग लग रही थी तो कहीं दूसरे घर में लूट-पाट हो रही थी। लोग अपने बचाव के लिए घर की छतों पर पत्थर जमा करने और डंडे लेकर पहरा देने लगे थे। बंदूकें तो पूरे गाँव में किसी के पास नहीं थी हाँ पुरानी जंग लगी तलवारें, दरातियाँ और कुल्हाड़ियों से हैवानियत का नंगा नाच चलता रहा। बँटवारे की विभीषिकता ने शिवदत्त को अंदर तक झझकोर दिया। दस वर्ष की उम्र में उन्होंने माँ के पल्लू के पीछे से अपनी माँ को लोगों को ढ़ाढ़स देते और सहायता करते देखा। कई बार नन्हें हांथों से शरण में आए परेशान गाँव वालों को पानी पिलाया और आँसू भी पोछे। माँ का कहना था, कि सब ठीक हो जाएगा और तब तक अपनी रक्षा करनी है। साथ-साथ दूसरों के काम भी आना है। नफरत ज्यादा जिंदा नहीं रहती।

1947 की इस घटना के बाद की एक रोचक घटना जो शिवदत्त के साथ घटी है वो थी कि जब सारे बच्चे परीक्षा देने कटरा गए। वहाँ पर परीक्षक ने सारे बच्चों को मैदान में खड़ा किया और प्रश्न पूछा- "हमारे बुजुर्गों ने बहादुरी के क्या-क्या कारनामे किए?'' कुछ बच्चो ने हाथ ऊपर खड़े किए तो शिवदत्त ने भी खड़े कर दिये। परीक्षक ने शिवदत्त को जवाब देने के लिए बोल दिया। शिवदत्त ने कुछ देर सोचा फिर जवाब दिया "हमारे बुजुर्गों ने मुसलमानों से लड़ाइयाँ लड़ीं।" परीक्षक मुसलमान था शिवदत्त के जवाब को सुनकर चौंक गया। उसने शिक्षक को डाँटा "आप बच्चों के

दिमाग में बहुत गलत बातें भरते हो, इससे इनकी सोच भटकेगी। इनको सही रास्ता दिखाओ।" इस घटना के बाद सारे शिक्षक शिवदत्त से नाराज हो गए और उसे अपना मुंह बंद रखने को कहा।

1947 की घटना का असर शिवदत्त के परिवार पर भी पड़ा। सावन मल का सहभागी अपना मानसिक संतुलन खो बैठा लोग उसे पागल समझने लगे। दुकान वही चलाता था उसके बीमार होने से दुकान बंद हो गयी। परिवार के बुरे दिन शुरू हो गए। घर की आर्थिक दशा दिनों दिन कमजोर होने लगी। खाने पीने के भी लाले पड़ने लगे। घर के बर्तन भी बिक गए। सावन मल को ईश्वर पर बड़ा विश्वास था कि ईश्वर कोई न कोई रास्ता अवश्य निकालेगा। इसलिए उन्होंने अपनी पत्नी के गहने भी मंथल के पलासर के पास गिरवी रख दिये और उनसे दो हजार रुपये मिले जिससे सावन मल ने नया काम शुरू किया उसमें सावन मल को काफी लाभ हुआ। इसी बीच उन्होंने पुत्री पुष्पा की शादी भी निश्चित कर दी। शुरू-शुरू में तो सब ठीक था फिर गरीबी में आटा गीला जैसी घटना हुई। सावन मल बेटी के दहेज का सामान लेने अमृतसर गए थे जहाँ ट्रेन में दो-चार लोगों ने उन्हें चिलम पिलाकर बेहोश कर दिया और उनके सारे पैसे लेकर गायब हो गए। होश में आने पर तो जैसे सावन मल के पैरों के नीचे से जमीन ही गायब हो गई। वो अपनी सुध-बुध ही खो बैठे। सावन मल के ससुर ने जैसे- तैसे करके सावन मल को सम्हाला और पुष्पा की शादी की व्यवस्था की, जिससे पुष्पा का विवाह सम्पन्न हो गया।

पुष्पा का विवाह तो जैसे-तैसे हो गया पर घर की गाड़ी चलाना बड़ा ही मुश्किल हो गया। नए रोजगार के लिए पैसों की आवश्यकता होती है और वो तो सावन मल के पास थे नहीं। सावन मल ने लोगों से मदद माँगी, हाथ भी फैलाये पर हर जगह से निराशा ही हाथ लगी। सावन मल ने कुछ समय के लिए बुद्दल में कपड़े बेचने का काम भी किया पर हालातों में कोई भी सुधार नहीं हुआ।

घर में खाने के लिए सिर्फ मक्का और गोजी का आटा (बाजरा और गेहूं का मिला आटा) होता था। खाने के लिए शिवदत्त बहुत दुखी रहता

था। शिवदत्त मक्का तो खा लेता था पर उससे गोजी नहीं खाई जाती थी गोजी खाने से उसके मुँह से दुर्गंध आती थी। एक बार शिवदत्त से गोजी नहीं खाई गयी तो वह बिना खाये ही उठने लगा माँ ने पकड़ कर मारा और जबरदस्ती दो रोटियाँ भी खिलायीं। माँ समझाती कि भगवान का शुक्रिया करो कि कम से कम ये तो मिल रहा है नहीं तो भूखे ही रहना पड़ता।

वो दिन सचमुच में शिवदत्त के लिए गर्दिश के दिन थे। गर्दिश के दिन तो गर्दिश के ही होते हैं। ईश्वर के आगे हाथ फैलाने, माफी माँगने और प्रार्थना करने पर भी ईश्वर की कृपा नहीं हुई। आसो देवी कभी कालका माता की गुफा में नाक रगड़ती कभी गुरु महाराज की तस्वीर के आगे हाथ फैलाती कि महाराज हमारे कष्ट दूर करिए। वह कहती कि गुरु महाराज आप के होने पर हमने सुख ही सुख भोगे पर आपके जाने के बाद हमारे सिर पर आफत का पहाड़ टूट पड़ा। हमें बचाओ, हमारे ऊपर जो आफत आई है उसे दूर करो। पर माथा रगड़ने, गिड़गिड़ाने पर भी आफत दूर नहीं हुई।

यहाँ तक कि शिवदत्त ने अपनी छोटी सी ही उम्र में ही लकड़ी ढ़ोना, गायों के लिए घास लाना, और बहुत से काम किए। पहले जहां खेतों कि गुड़ाई का काम मजदूर करते थे अब वो सब काम शिवदत्त को स्वयं करना पड़ता था। लकड़ी ढ़ोने का काम भी शिवदत्त को करना पड़ता था। लकड़ियाँ लाकर शिवदत स्नान करके फिर स्कूल जाते थे। घर के बुरे हालात देखकर शिवदत्त का पढ़ाई में भी मन नहीं लगता था। जरूरी चीजों के लिए भी पैसे नहीं होते थे किसी तरह नयी पुरानी किताबें तो मिल जाती पर कापी के लिए मुश्किल हो जाती जिसका परिणाम यह हुआ कि शिवदत्त पढ़ाई में पिछड़ने लगा।

शिवदत्त के परिवार में पुरोहिती का भी काम होता था। जिस समय व्यापार का काम अच्छा चल रहा था उस समय पुरोहिती के लिए उन्होंने कहीं आना जाना छोड़ दिया था। जब हाथ तंग हुआ तो उस काम की भी तरफ ध्यान गया। बारह बरस की आयु में शिवदत्त ने पुरोहित बनकर एक लड़की का विवाह करवाया था। पुरोहित बनकर शिवदत्त सुनाड़ी गए जहां

सभी ने शिवदत्त का बड़ा सम्मान किया। पुरोहित जी को पानी पिलाओ। पुरोहित जी को रोटी खिलाओ। शिवदत्त का सभी सम्मान करने लगे। बदेसरी (पुरोहिती) कमाकर जब शिवदत्त घर पहुंचे और माँ के हाथों में सोलह रुपये रखे तो माँ बहुत खुश हुई। शिवदत्त को भी इससे बड़ा आनंद प्राप्त हुआ।

घर में पैसों की कमी के कारण शिवदत्त की माँ बहुत ही परेशान रहती थी शिवदत्त स्कूल जाने के लिए जब पैसे माँगता था तो माँ उसे पकड़ कर मारती ये रोज ही होता शिवदत्त भी मार खाने का आदी हो गया था। माँ को भी कोई न कोई बहाना मिल ही जाता था उसे मारने का। कभी तू कुछ क्यों नहीं करता, कभी तू चाची के घर क्यों गया था, कभी तू गाय क्यों नहीं बांधता, कभी कुछ, कभी कुछ। शिवदत्त को लगता था कि उसको मार कर शायद माँ को कुछ आंतरिक खुशी मिलती थी। मार खाकर शिवदत्त रोता रहता पर माँ उसे चुप कराने भी नहीं आती थी। शिवदत्त समझ नहीं पाता था कि यह क्या हो रहा है। विषम परिस्थिति में बड़े होते शिवदत्त से माँ को बड़ी उम्मीदें थीं।

दिन-प्रतिदिन घर की आर्थिक दशा बिगड़ती चली गई। पिता सावन मल बुद्दल गए थे वहाँ से बहुत दिनों बाद लौटे और लौटे तो बहुत ही दुखी थे। सावन मल के वापस लौटने पर माँ और भी दुखी हुई। घर की खराब स्थिति के चलते माँ कई बार घर के बर्तन भी सावन मल को बेचने को देती। जम्मू जाने पर कुछ पैसे खर्च हो जाते और कुछ पैसे लेकर सावन मल घर आ जाते। सावन मल की एक अच्छी आदत यह थी कि कितनी भी विषम परिस्थितियाँ क्यों न हों वो घबराते नहीं थे। वो बहुत ही संयमित व्यवहार करते थे और कहते थे की ईश्वर पर विश्वास रखना चाहिए वो जो करेंगे की अच्छा करेंगे रोने धोने से कुछ नहीं होगा। शिवदत्त की माँ सबको दिखाने के लिए तो शांत रहती थी पर अकेले में सावन मल के सामने अपना दुखड़ा रोती भी थी।

घर की गरीबी को देखते हुए अपनी छोटी बेटी शांति को आसो देवी ने ननिहाल भेज दिया। घर की हालत देखकर शिवदत्त बहुत दुखी रहता था।

उसका मन करता कि वह भी कहीं बाहर घूमने जाये पर माँ हर बार मना कर देती। एक दिन शिवदत्त माँ को बिना बताए गाड़ी में बैठकर अपनी मौसी के घर जम्मू चले गए। कुछ दिन वहाँ रुके और फिर वहाँ से ननिहाल चले गए। शिवदत्त की बड़ी बहन पुष्पा उन दिनों वहीं थी तो उसी के साथ शिवदत्त अपने घर वापस लौटे। इधर शिवदत्त के जम्मू जाने बाद वेबो शीलों ने पूरे गाँव के बीच में काफी शोर मचाया और बोला कि इसका सुधरना मुश्किल है। आसो देवी अपने पुत्र को लेकर बहुत ही निराश हो गयी थीं। घर वापस लौटने पर वह शिवदत्त पर बहुत नाराज हुई। यहाँ तक कि मारने के लिए भी दौड़ी तो शिवदत्त अपनी बांह छुड़ाकर घर से बाहर निकल गए।

ननिहाल से वापस आने पर फिर वही काम-काज, लकड़ियाँ ढोना, गायों के लिए घास लाना यहाँ तक कि कनक की सफाई और कुटाई भी करनी पड़ती थी। शिवदत्त का सारा दिन इन्ही कामों में निकल जाता था।

कहते हैं कि बुरे दिनों में आदमी ज्योतिष के चक्कर में फंस जाता है, शिवदत्त भी फंस गया ज्योतिषी को जन्मपत्री दिखाई गई तो उसने बोला- 'जातक बुद्धिपरक काम करेगा'। शिवदत्त हंसने लगा और बोला कि "यहाँ काम करते-करते मेरी हालत पस्त हो गई, डागीया ढो-ढोकर पीठ उखड़ गयी और यह कहता है कि जातक बौद्धिक काम करेगा। झूठा कहीं का। इतना बोलकर शिवदत्त पत्री बंद करके घर चले आए।"

कुछ दिन जम्मू में काम की तलाश में भटकने के पश्चात सावन मल भी खाली हाथ वापस लौट आए। सावन मल के घर आने के कुछ दिनों बाद नयी कोठी बनाने वाला काका तरखान घर आया और मजदूरी के पैसे मांगे। सावन मल ने कुछ दिन बाद दूँगा कहकर टालने की कोशिश की पर वह जोर से शोर मचाकर बोला की तू मुझे कल-कल कहकर रोज टालता है आज पैसे लिए बगैर नहीं जाऊंगा। सावन मल ने उसे एक हफ्ते के लिए राजी कर लिया पर वह जिस तरह से गरजता-बरसता हुआ गया था उससे मुहल्ले के सारे लोग बाहर निकल कर तमाशा देखने लगे। ये शिवदत्त को अच्छा नहीं लगा। उसने सावन मल से कहा कि आप ने झूठ क्यों कहा? आपको पैसे आज नहीं देने हैं और आठ दिनों के बाद भी नहीं देने हैं। जब

आठ दिनों के बाद वह वापस आएगा तो आप क्या करेंगे? सावन मल बोले कि "चिंता की कोई बात नहीं है जब आठवां दिन आएगा तो देख लेंगे जो ईश्वर को मंजूर होगा वही होगा। उसकी मर्जी के खिलाफ एक पत्ता भी नहीं हिलता है।"

एक दिन शिवदत्त ने अपने पिता से पूछा- "आपका पैर किसी भी काम में नहीं टिकता है आखिर इसका कारण क्या है?'' सावन मल बोले - गुरु महाराज ने एक दिन मुझे अपने पास बुलाया और कहा- "सावन मल बहुत जल्दी तुम पर संकट आने वाले हैं। तुम पर संकट आने से पहले ही हम शरीर छोड़ देंगे अगर नहीं छोड़ा तो लोग हम पर भी हँसेंगे कहेंगे कि इसका गुरु भी इसके कष्ट नहीं दूर कर पाया। मैं तुम्हें एक बात बता देता हूँ कि चाहे मैं तुम्हारा गुरु हूँ, तुम्हारा हितचिंतक हूँ पर मैं भी तुम्हारे कष्ट नहीं दूर कर सकता हूँ। जो कष्ट तुम्हें भोगने हैं वो भोगने हैं। और जो सुख तुम्हारे भाग्य में हैं वह अवश्य ही प्राप्त होंगे। सुनो न मैं तुम्हारे दुख कम कर सकता हूँ और न सुख, इस कारण बढ़ा सकता हूँ कि तुम मेरे परम प्रिय शिष्य हो। हाँ तुमसे इतना अवश्य ही कहूँगा कि दुख को अपने गले न लगाना और सुख में फूले न समाना। हर स्थिति में सामान्य ही रहना।"

शिवदत्त ने अपने पिता से पूछा कि आपने क्या जवाब दिया। तो सावन मल बोले कि "मैंने अपने दोनों हाथ जोड़कर विनती की और कहा कि यदि आप अपना हाथ मेरे सिर पर रख दोगे तो मैं दुख की नदी भी पार कर लूँगा।" फिर आगे बोले- मुझे पता है कि मुझ पर जो साढ़े साती चल रही है इसने तो राजा महाराजाओं के तख्त और ताज भी छीन लिए मैं उनके आगे क्या हूँ? जो होना है वो होकर रहेगा उसे कोई नहीं रोक सकेगा न देवी-देवता न कोई और। पिता पुत्र के संवाद से शिवदत्त पर गहरी प्रभाव पड़ा, जीवन को देखने-परखने का जीवन की अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थितियों में मन के विश्वास को बनाए रखने तथा जीवन में आशावान होने की उनकी आस्था को बल मिला।

सावन मल का एक गुरु भाई सोवाराम था जो कि रेवाड़ी में रहता था। रेवाड़ी दिल्ली के पास स्थित है जिसे आजकल गुरुग्राम (गुड़गांव) के नाम

से जाना जाता है। सोवाराम पहले मियां वाली में रहता था जो कि अभी पाकिस्तान में है पर पाकिस्तान बनने के बाद दिल्ली चला आया। उसका एक ठेकेदार रिश्तेदार था जो कि उन दिनों सतलज नदी (पंजाब) के संगम पर बने बांध पर काम करता था। यह बाँध हरि के पत्तन (पंजाब का एक शहर) में था। उसे एक मुनीम की जरूरत थी। सोवाराम ने उस ठेकेदार से बात की तो वह सावन मल को काम पर रखने को तैयार हो गया। सोवाराम ने सावन मल को चिट्ठी लिखी तो वे तुरंत ही हरि के पत्तन को चल दिये। सावन मल को वहाँ के ठेकेदार ने अपना मुंशी नियुक्त कर लिया। ठेकेदार ने मक्खू कालोनी में एक मकान भी सावन मल को दिला दिया था। सावन मल का काम मजदूरों की हाजिरी लगाना और उन्हें काम दिखाना था। ठेकेदार ने सावन मल को 100 रुपये महीना के वेतन पर रखा। सावन मल ने चार महीने तक काम किया और जैसे ही ठेकेदार का कम खत्म हुआ सावन मल की नौकरी भी खतम हो गई। मकान तो था पर काम नहीं सावन मल ने हलवा बनाकर बेचना शुरू किया पर यह काम ही कुछ खास नहीं चला। मक्खू कालोनी के लोगो ने चन्दा इकट्ठा करके मंदिर बनाया और मंदिर की कमेटी ने सावन मल को उसका पुजारी बना दिया। गुरु महाराज से सावन मल ने कर्मकांड सीखा था वह विद्या यहाँ पर काम आई। पर मंदिर के काम में कोई खास आमदनी नहीं थी।

सावन मल के हरि पत्तन जाने के बाद उनकी माता बीमार पड़ीं और स्वर्ग सिधार गई। सावन मल घर वापस आए और माता का क्रिया कर्म किया। सावन मल गाँव के लोगों के कर्ज दार भी थे। उन्हें पता था कि अगले दिन ही सब उनसे पैसे मांगने आ जाएँगे इसलिए आधी रात में ही सामान बांधा, हाथ में लालटेन ली और चुपचाप जम्मू के रास्ते मक्खू कालोनी लौट गए। कुछ दिनों बाद उनका परिवार भी मक्खू कालोनी चला गया। शिवदत्त पढ़ रहा था। अतः वह पैंथल में ही रहा।

2. मक्खू कालोनी का संघर्ष

सन् 1951 में शिवदत्त ने सातवीं कक्षा पास की। शिवदत्त उन दिनों विद्यालय के अतिरिक्त भी मास्टर तारामणि के पास पढ़ने जाया करते थे।

शिवदत्त ने उन्हें पास होने पर प्रमाण पत्र के शुल्क के रूप में 15 रुपये दिये तो उन्होंने लेने से मना कर दिया और कहा कि वह 25 रुपये से कम एक भी पैसा नहीं लेंगे। शिवदत्त के पास इतने पैसे नहीं थे। जब यह बात हेडमास्टर साहब को पता चली तो उन्होंने शिवदत्त को अपने पास बुलाया और कहा कि तारा मणि को जब तक पैसे नहीं मिलेंगे वो तुम्हारा प्रमाणपत्र भी नहीं देंगे पर तुम मेरे अपने हो मैं तुम्हारा प्रमाणपत्र नहीं रोकूँगा। शिवदत्त के जीजा जी ने चुपके से प्रमाणपत्र बनवाया और हेडमास्टर साहब से हस्ताक्षर लेकर शिवदत्त को दे दिया।

शिवदत्त ने घर आकार सामान बांधा और मक्खू कालोनी के लिए चल दिये। उन दिनों रियासत से बाहर जाने के लिए अनुमति लेनी पड़ती थी। शिवदत्त ने अनुमति ली, एक रात अपनी मौसी के घर जम्मू में बिताई और अगले दिन प्रातः ही बस में बैठकर अमृतसर पहुंचे। वहाँ से हरिपत्तन के लिए दूसरी बस थी। पता चला कि अगली बस सुबह सात बजे जाएगी। वहाँ पर एक सराय थी। शिवदत्त ने अपना नाम लिखाया और खाट पर लेट गए। सुबह हाथ-मुँह धोकर बस पर बैठे तो बस तीन घंटे बाद हरि के पत्तन पहुंची। हरि के पत्तन से कालोनी तक पहुँचने के लिए रास्ते में व्यास और सतलज नदी का संगम पड़ता था। बालक शिवदत्त ने इससे पहले इतनी बड़ी नदी कभी नहीं देखी थी उन्हें लगा कि यह कोई समुंदर है। उन्होंने नाव पर बैठ कर नदी पार की। नदी के पार पहुँचने पर शिवदत्त को मक्खू कालोनी जाने वाली बस तो दिखी परंतु पास में पैसे न होने के कारण वहाँ से पैदल ही चलते हुए किसी तरह लोगों से पूछते हुए शिवदत्त मक्खू कालोनी पहुँच गए। शिवदत्त को आया हुआ देखकर माँ और बहनें बहुत खुश हुईं और उन्हें अंदर ले गईं।

मक्खू कालोनी में शिवदत्त ने एक प्राइवेट स्कूल में प्रवेश लेकर अपनी पढ़ाई शुरू कर दी। 1953 में शिवदत्त ने मिडिल की परीक्षा उत्तीर्ण की। शिवदत्त की माँ शिवद्त्त को आगे पढ़ाना नहीं चाहती थी पर शिव दत्त के पिता चाहते थे कि वह कम से कम दसवीं की पढ़ाई पूरी कर ले।

मक्खू कालोनी में सावनमल सवेरे उठकर पूजा पाठ करते। मंदिर में कम लोग ही आते थे, इस कारण सावन मल दस बजे तक पूजा करके खाली हो जाते थे। उनके परिवार को देखकर कुछ औरतों ने कहा कि वह उनके घरों से आकर ग्यासन ले जाया करें, पर लेने कौन जाये? आसो देवी ने साफ मना कर दिया वो बोलीं, "शाहे दी कुड़ी शाहे घर ब्योही, अऊं की आहना ग्यासन"। राज का नंबर आया। राज की आयु कोई बारह वर्ष की थी। बारह बजे ही वह ग्यासन लेने निकलती तो एक बजे तक वापस लौटती। शिवदत्त भी एक बजे स्कूल से लौटते ग्यासन खाकर कुछ देर पढ़ते और फिर काम में लग जाते।

सावन मल शाम को पकोड़े बनाते उन्हें बेचने बाजार जाते तो शिवदत्त को वो साथ लेकर जाते थे। प्लेटें ग्राहकों को देने और और जूठी प्लेटें साफ करने का काम शिवदत्त को ही करना होता था। इससे घर की हालत में कुछ सुधार आया। शाम को सावन मल आठ दस रुपये लाकर पत्नी को देते तो वो भी खुश हो जाती थी। मक्खू कालोनी में रहते हुए शिवदत्त को कई नवीन अनुभव भी हुए। एक बार शिवदत्त पम्प चलाकर पानी इकट्ठा करने की कोशिश कर रहे थे तभी वहाँ एक सरदार भाई आया। उसने पम्प मारना शुरू कर दिया तो शिवदत्त ने अपने हाथ-मुंह धोये और चल दिये। सरदार ने शिवदत्त को पीछे से आवाज लगाई और कहा "तू किसका पुत्र है? तुझे कोई तहजीब है कि नहीं? मैंने तुम्हारे हाथ धुलाये हैं तुम भी मेरे हाथ धुलाओ।" उसकी बात सुनकर शिवदत्त ने सोचा यह भाई जो कह रहा है सही कह रहा है मुझे आगे से इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि अगर कोई हमारी मदद करता है तो हमें भी उसका ध्यान रखना चाहिए। इस घटना ने शिवदत्त के अंदर आपस में कैसे व्यवहार करते हैं यह सिखाया।

मक्खू कालोनी में रहते-रहते शिवदत्त की पहचान काफी लोगों से हो गई थी। मक्खू कालोनी में शिवदत्त के परिवार की दो परिवार से काफी घनिष्ठता थी एक कपिल देव ओवरसियर की माँ और एक बूढ़ा ठेकेदार। कपिलदेव की माँ शिवदत्त का बहुत ध्यान रखती थी, अगर शिवदत्त के कपड़े मैले होते तो वह उन्हें धुलने के लिए साबुन देती साथ ही और भी

बहुत कुछ था जो वो देर-सबेर दिया करती थीं। कुछ लोग यह भी कहते थे कि शिवदत्त का इस बुढ़िया के साथ पिछले जन्म का कोई कर्ज है जो वह इस जन्म में चुका रही है। वह शिवदत्त का बहुत ध्यान रखती थी।

उस समय जगरातों का बड़ा प्रचलन था। अक्सर कथा वाचक मंदिर आते थे और कथा सुनाते थे। जन्माष्टमी का त्योहार भी वहाँ बड़ी धूम-धाम से मनाया जाता था। एक बार जन्माष्टमी में एक कथावाचक ने 'लाट देश' की कथा सुनाईं। इस कथा का संबंध कौरव-पांडवों से था। शिवदत्त को यह कथा बहुत ही रोचक लगी शिवदत्त ने इस कथा को नाटक का रूप देकर लिखा। यही नाटक शिवदत्त की पहली रचना थी। परंतु उस समय का उनका बाल मन इस रचना की महत्ता को नहीं समझ पाया और रचना को संभाल कर नहीं रख पाया। परिणाम स्वरूप उनकी यह रचना खो गई।

मक्खू कालोनी में रहते हुए शिवदत्त के साथ एक अनोखी घटना यह घटी कि जब वो रात में सोये तो उन्हें किसी लड़की की आवाज सुनाई दी। उन्हें लगा कि यह आवाज पिछवाड़े से आयी है। वे उठकर बाहर गए और बाहर खोज-बीन भी की परंतु कोई भी नहीं दिखा। शिवदत्त ने यह बात अपने पिता को बताई तो वह कुछ सोच में पड़ गए। फिर उन्होंने शिवदत्त से श्रीमद भागवत का पाठ करने को कहा। जिसे शिवदत्त ने आठ दिनों में ही सम्पूर्ण कर लिया। इस पाठ का असर शिवदत्त पर यह हुआ कि जहां उन्हें सपने में परियाँ दिखतीं थीं, पाठ पढ़ने के बाद देवता दिखने लगे। इसका लाभ यह भी हुआ कि देवताओं और असुरों के संघर्ष को पढ़कर शिवदत्त के अंदर भी संघर्ष शुरू हुआ और उन्होंने भाग्य की जगह जद्दो-जहद और मेहनत को महत्व देना शुरू कर दिया।

आठवीं की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद माँ आसो देवी की इच्छा न होते हुए भी सावन मल ने शिवदत्त को आगे की पढ़ाई के लिए नए स्कूल में भेजने पर जोर दिया। वो चाहते थे कि शिवदत्त की पढ़ाई के लिए चाहे उन्हें भीख ही क्यों न मांगनी पड़े पर वे उसे आगे की पढ़ाई अवश्य ही कराएंगे। फिर शिवदत्त की किस्मत। शिवदत्त की आगे की पढ़ाई के लिए मास्टर ओमप्रकाश बजाज ने भी मदद की। उन्होंने सावन मल को फिरोजपुर

के प्राइवेट स्कूल- परमानंद हाई स्कूल के बारे में बताया। साथ ही शिवदत्त को स्कूल में प्रवेश दिलाने के लिए फिरोजपुर ले गए और स्कूल में प्रवेश भी दिलाया। जिस समय शिवदत्त एण्ट्रेंस में थे, उन्हें समझ आगया था कि उनकी इस पढ़ाई का सीधा संबंध उनके भविष्य से है। इसलिए उन्होंने दिन-रात एक करके मेहनत करी। शिवदत्त की हिसाब (गणित) की कमजोरी ज्यों की त्यों बनी हुई थी। उन दिनों गेस पेपर का बड़ा प्रचलन था। शिवदत्त ने गेस पेपर खरीदा और पूरा गेस पेपर रट डाला। आठ सवाल गेस पेपर से आए थे। शिवदत्त को बड़ी खुशी हुई लेकिन मन में एक मलाल भी रहा कि यदि किताबों से पढ़ता तो और अच्छा कर सकता था।

इसी बीच शिवदत्त की छोटी बहन राज का विवाह बहुत ही सादे समारोह के साथ सम्पन्न हो गया। बिरादारी, रिश्तेदारी से केवल सगी बहन पुष्पा, उसका पति और मामा का लड़का आया। परंतु मक्खू कॉलोनी के लोगों ने बड़ा सहयोग किया। इस विवाह से शिवदत्त की सोच में बड़ा बदलाव आया। उन्हें समझ आ गया कि गरीब आदमी का कोई भी सगा नहीं होता। गरीबों पर सभी रहम करते हैं कोई भी उनका साथ नहीं देता। उन्हें यह भी याद आया जब उनके पिताजी गाँव के शाह थे। उनके कई संगी-साथी, नाते-रिश्तेदार कोई जान पहचान वाला आता ही रहता था और माँ सारा दिन सेवा करती रहती थी। आज वह दिन था कि कोई भी नहीं दिखाई देता।

3. रोजगार के प्रसंग

परीक्षा समाप्त होने पर शिवदत्त मक्खू कालोनी वापस आ गए। शिवदत्त परीक्षा देने के बाद बिलकुल खाली थे। उन दिनों अमृतसर की एक कंपनी बाँध के ऊपर काम कर रही थी। उन्हें मजदूरों की आवश्यकता थी। शिवदत्त को वहाँ पर 29 रुपये महीने पर एक मजदूर की नौकरी मिल गई। शिवदत्त का काम वहाँ पर नट कसने का था, जिससे हाथों में छाले पड़ गए। एक दिन वहाँ के प्रबन्धक मेहरा साहब ने शिवदत्त को देख लिया और चपरासी भेजकर उसे बुलाया, उन्होंने पूछा- 'तुम कहाँ तक पढे हो।' शिवदत्त ने जवाब दिया मैंने दसवीं की परीक्षा दी है। मेरी परीक्षा का परिणाम जल्दी ही

आने वाला है। मेहरा साहब ने बोले कि मैं दो-तीन दिनों से तुम्हारे काम को देख रहा हूँ, अभी तुम बहत छोटे हो तुमसे यह काम नहीं हो पाएगा। शिवदत्त डर गए कि शायद साहब उन्हें काम से ही न निकाल दें। वह हाथ बाँध कर साहब के जवाब का इंतजार करने लगे। साहब ने स्टोर कीपर को बुलाया और कहा कि यह लड़का अभी छोटा है दरिया में गिर भी सकता है। तुम इसे स्टोर में रख लो। साहब का जवाब सुनकर शिवदत्त बड़े खुश हुए। स्टोर कीपर उन्हें अपने साथ अपने कार्यालय में लेकर गए और कहा कि तुम्हारा काम आधा घंटा सुबह और आधा घंटा शाम का है। स्टोर कीपर ने शिवदत्त को बताया कि उन्हें रजिस्टर में मजदूरों का नाम लिखना है कि उन्होंने क्या-क्या सामान लिया। साथ ही छुट्टी होने पर सभी से सामान वापस भी लेना है। शिवदत्त को यह काम बड़ा अच्छा लगा। एक दिन स्टोर कीपर, जिन्हें सब भटनागर साहब कहते थे, ने शिवदत्त से कहा कि तुम शाम के समय मेरे घर आकर मेरे बच्चों को पढ़ा दिया करो। भटनागर साहब के तीन बच्चे थे, कहते हैं जरूरत मंद इंसान का हर कोई फायदा उठाना चाहता है, पर शिवदत्त ने सोचा कि पढ़ाएंगे तो किताबों से नाता बना रहेगा और साथ-साथ कुछ न कुछ सीखेगें ही। शिवदत्त उनके घर पढ़ाने जाने लगे। कंपनी में काम करते हुए शिवदत्त को कोई तीन महीने हो गए थे। जुलाई में शिवदत्त की परीक्षा का परिणाम आया शिवदत्त ने थर्ड डिवीजन में मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की थी। प्रधानाध्यापक ओमप्रकाश बजाज जी के प्रयत्नों से शिवदत्त की नियुक्ति उसी विद्यालय में हो गई थी जहाँ से शिवदत्त ने पढ़ाई की थी। कंपनी में काम के कुल 150 रुपये शिवदत्त को मिले थे जो उन्होंने अपनी माँ के हाथों में रख दिये थे। माँ बेटे की मेहनत देखकर बहुत खुश हुई थी।

स्कूल मास्टर बनने के बाद शिवदत्त का रुतबा बढ़ गया था। शिवदत्त को वहाँ पर वेतन के रूप में 39.50 रुपये मिलते थे। घर में सभी शिवदत्त की नौकरी से खुश थे। तीन महीने तक शिवदत्त ने यहाँ काम किया। फिर कभी टाइम कीपरी, कभी सर्वेयर का काम किया। बार-बार काम छोड़ने और नयी नौकरी ढूंढने से शिवदत्त काफी परेशान हो गए। इसी बीच उन्होंने प्रभाकर की परीक्षा देने की सोची और थर्ड डिवीजन में उत्तीर्ण भी हो गए।

शिवदत्त के छोटे जीजाजी ने शिवदत्त का आवेदन शिक्षा विभाग में दिया था। उन्ही दिनों हीरानगर हाई स्कूल में हिन्दी शिक्षक का पद रिक्त हुआ। बतौर हिन्दी अध्यापक के रूप में शिवदत्त की हीरा नगर हाई स्कूल में नियुक्ति हो गई। 14 नवंबर 1956 में शिवदत्त ने शिक्षा विभाग में एक शिक्षक के रूप में हाजिरी भरी। यह नौकरी शिवदत्त की स्थायी नौकरी थी। यह दिन शिवदत्त के जीवन का यादगार दिन बन गया। 1956 में हीरानगर स्कूल में जिस समय शिवदत्त ने नौकरी पायी उस समय उनकी आयु कोई 19 से 20 वर्ष की थी। हीरा नगर आने पर शिवदत्त ने अपनी दोनों बहनों को भी वहीं के विद्यालय में प्रवेश दिला दिया।

हीरा नगर में रहते हुए शिवदत्त ने अलग से बच्चों को पढ़ाना भी शुरू कर दिया। इससे चार पैसे भी आने लगे और जिससे उन्होंने अपने पिताजी का कर्ज चुकाना प्रारम्भ कर दिया। पैंथल के जो लोग उनकी बुराइयाँ करते थे उन सबकी जुबान भी अब बंद हो गयी, क्योंकि उन्हें अपने पैसे वापस मिलने की उम्मीद जो बढ़ गयी थी।

स्कूल के प्रधानाध्यापक महोदय ने बच्चों को लोकतन्त्र के बारे में समझाने के लिए एक बाल सभा गठन की घोषणा की। इसमें भाग लेने के लिए कोई भी छात्र चुनाव लड़ सकता था। बाल सभा के सदस्यों ने बहुमत के साथ शिवदत्त को बाल सभा का अध्यक्ष चुना। जिसका लाभ यह हुआ कि विद्यार्थी नेता शिवदत्त के संपर्क में आ गए। साथ ही नुकसान भी हुआ कि बहुत सारे शिक्षक जो कि बाल सभा का अध्यक्ष बनना चाहते थे शिवदत्त से ईर्ष्या करने लगे।

स्कूल में सांस्कृतिक कार्यक्रमों को तैयार करना, समाज सेवा का काम करवाना, नाटकों का मंचन करवाना, प्रार्थना सभा के लिए बच्चों को तैयार करना यह सभी शिवदत्त के काम थे। स्कूल की समय सारिणी में एक नया पीरियड प्रश्न-उत्तर का था, जिसे प्रार्थना सभा के साथ जोड़ा गया जिसमें शिक्षक छात्रों के प्रश्नों के उत्तर दे सकें। स्कूल में कई पत्र पेटिकायें भी लगाई गईं, जिसमें छात्र अपने प्रश्न लिखकर डालते थे और शिक्षक उनका

जवाब देते थे। कुछ प्रश्न तो अजीब भी होते थे जैसे कि 'आदमियों की दाढ़ी होती है महिलाओं की क्यों नहीं?, साम्यवाद और समाजवाद में क्या अंतर है? धर्म और आचरण में क्या अंतर है? शिवदत्त को इन प्रश्नों को पढ़कर लगता था कि इन प्रश्नों को छात्रों ने नहीं बल्कि उनके अभिभावकों ने शिक्षकों के ज्ञान की परीक्षा लेने के लिए पूछे हैं। शिवदत्त पूरी तत्परता और लगन के साथ प्रश्नों के उत्तर देते थे। इसके लिए वह गहन अध्ययन भी करते थे।

4. प्रेम प्रसंग

जिस समय शिवदत्त हीरानगर स्कूल में पढ़ा रहे थे उस समय उनके जीवन में एक रोचक घटना घटी। हीरा नगर स्कूल में पढ़ाने वाली एक अध्यापिका की पुत्री जो कि बहुत ही बुद्धिमान और समझदार थी मैट्रिक पास करने के बाद हीरानगर में ही शिक्षक हो गई थी। वो प्रभाकर की पढ़ाई भी कर रही थी। उसने प्रभाकर की पढ़ाई के लिए शिवदत्त से मदद मांगी तो शिवदत्त उसे मना नहीं कर सके और उसे पढ़ाने के लिए उसके घर जाने लगे। उसके घर वाले बड़े ही सभ्य और कुलीन थे। उसके घर का आचरण और व्यवहार बड़ा ही सराहनीय था। लड़की कवितायें और कहानियाँ भी लिखती थी। जो कि कभी-कभी शिवदत्त को भी सुनाती थी। उसकी एक कविता के कुछ बोल इस प्रकार थे- "छुपा चाँद मेरा है, किस काले घन में।" शिवदत्त उस लड़की के रूप सौंदर्य से पहले ही प्रभावित थे उसकी कविताओं ने और अधिक प्रभाव डाला और वो स्वयं को उसका चाँद समझने लगे और मन ही मन उसे चाहने लगे और उसे अपना जीवन साथी बनाने के स्वप्न देखने लगे। एक दिन अवसर पाकर अपने मन की बात उसके समक्ष व्यक्त कर दी। उस समय उसने कोई जवाब नहीं दिया बल्कि अपनी माँ को सारी बातें बता अवश्य दीं। फिर धीरे-धीरे वह लड़की अपने मन की बात भी कहने लगी। साथ ही साथ दोनों ही एक दूसरे को अपना जीवन साथी बनाने के स्वप्न भी देखने लगे। शिवदत्त के माता-पिता भी इस रिश्ते के लिए तैयार थे परंतु किस्मत को उनका साथ मंजूर नहीं था, लड़की की मौसी ने घरवालों को अपनी बातों में लेकर लड़की की सगाई

जम्मू में करवा दी। एक दिन उसका भाई एक पत्र लेकर शिवदत्त के पास आया जिसमें एक गाना लिखा था-

"मेरी याद में तू न आँसू बहाना, न जी को जलाना मुझे भूल जाना।

जुदा तेरी मंजिल जुदा मेरी राहें, न अब मिल सकेंगी मेरी तेरी निगाहें,

मुझे तेरी दुनिया से है दूर जाना, मेरी याद में न आँसू बहाना।"

गाना पढ़कर शिवदत्त को समझ आ गया कि कोई बात अवश्य है। उन्हें पता चला कि उसकी मौसी ने उसकी सगाई जम्मू में करवा दी है। यह सुनकर शिवदत्त को बड़ा झटका लगा। अपने प्रेम को भूल जाना और उसकी नाकामी को याद रखना कोई आसान काम नहीं था। किन्तु अतीत की यादों में खोये रहकर जीवन को बर्बाद करना भी अच्छी बात नहीं थी यह बात शिवदत्त को अच्छे से समझ आ गई थी। खुद को समझाने के लिए शिवदत्त ने एक कवि कि इन पंक्तियों को सीखा-

"रही होंगी उसकी भी कुछ मजबूरियाँ, वरना यूं ही कोई बेवफा नहीं होता।"

इस घटना के बाद शिवदत्त का हीरानगर में रहना संभव नहीं था। उन्होंने जम्मू कार्यालय में अपने तबादले के लिए अर्जी भेजी। जो कि सुखद रूप से मंजूर हो गई और 1959 में शिवदत्त का तबादला चनैनी हाईस्कूल में हो गया। चनैनी में हीरानगर जैसा साहित्यिक और बौद्धिक माहौल नहीं था। चनैनी मौसम की दृष्टि से जितना ठंढा प्रदेश था साहित्यिक दृष्टि से उतना ही पिछड़ा। शिवदत्त को वहाँ रहते हुए घुटन होने लगी।

आशिकी, खासकर टूटी हुई आशिकी मनुष्य को शायर बना दे यह कोई बड़ी बात नहीं है। शायरी मनुष्य के अंदर से निकलती है वो किताबें पढ़ने से नहीं आती है। अकबर इलाहाबादी का एक शेर है- "इश्क को दिल में जगह दे अकबर, इल्म से शायरी नहीं आती।" यही शिवदत्त के साथ भी हुआ। हीरानगर में शिवदत्त के इश्क का खुमार तो टूट गया था पर उसका ताप चनैनी आकर भी नहीं गया था इस आग को शांत करने के लिए

शिवदत्त ने उपन्यास लिखना शुरू किया। इस उपन्यास का नाम रखा "तवीं दीं लहरां"। यह उपन्यास शिवदत्त के नाकाम प्रेम पर आधारित था। इस उपन्यास ने शिवदत्त की मानसिक स्थिति को सम्हालने में बहुत ही महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

25 अप्रैल 1959 में हेडमास्टर नीलकंठ जी ने शिवदत्त के हाथों में एक रिलिविंग ऑर्डर (स्थानांतरण आदेश) पकड़ाया और कहा कि तुम्हारी बदली रियासी हो गई है। रियासी में बदली की खबर सुनकर शिवदत्त अपना सामान लेकर पैंथल आ गये। उन्होंने अपने तबादले की खबर अपनी बहनों को सुनायी तो वे बड़ी ही खुश हुईं क्योंकि रियासी में लड़कियों के लिए भी हाई स्कूल था। वे बोलीं कि सत्यनारायण भगवान ने हमारी बिनती सुन ली है। अब उन्हें भी स्कूल जाने का अवसर मिलेगा।

रियासी डुग्गरों का एक पुराना ऐतिहासिक कस्बा था। कहा जाता था कि ऋषिपाल सामंत ने इसे बसाया था। बहुत दिनों तक यहाँ पर रसियाल राजपूतों का राज रहा था। उसके बाद जम्मू के सामंत रत्नदेव ने इस इलाके पर कब्जा किया और इसे अपनी जागीर बनाया था।

शिवदत्त ने रियासी पहुँचकर सबसे पहले रियासी के महल, बाजार, स्कूल देखे जिनको देखकर शिवदत्त काफी प्रभावित हुए। इसके अलावा अपनी बहनों को हाई स्कूल में प्रवेश दिलाया। ताकि उनकी रुकी हुई पढ़ाई फिर से प्रारम्भ हो सके। रियासी का हाई स्कूल बहुत पुराना था पर हीरा नगर जैसा नहीं था। इस स्कूल में छात्रों की संख्या भी 500 से कम ही थी। इस स्कूल का प्रिंसिपल एक कश्मीरी मुसलमान था जो कि पढ़ाई-लिखाई में बहुत ही बुद्धिमान था पर स्कूल चलाने के मामले में बहुत ही कमजोर था। स्कूल के सभी शिक्षक अपनी मनमानी करते थे। छात्रों में भी अनुशासन की कमी थी। शिवदत्त की रियासी स्कूल में बदली एक हिन्दी शिक्षक के रूप में हुई थी और उन्हें हिन्दी की कक्षाएं लेने के लिए कहा गया था। शिवदत्त पूरा मन लगाकर पाठ को रोचक बनाकर बच्चों को पढ़ाने लगे। हीरा नगर के समान ही शिवदत्त ने यहाँ भी बाल सभा का गठन किया।

रियासी स्कूल में ही शिवदत्त ने नाटक 'युद्ध और शांति' का भी मंचन किया। इससे रियासी स्कूल का लोगों में नाम हुआ और शिवदत्त लोगों की निगाहों में प्रशंसनीय हो गए। उन्हीं दिनों जम्मू-कश्मीर के शिक्षा विभाग ने एक कहानी प्रतियोगिता का आयोजन किया और नयी प्रतिभाओं को उसमें सम्मिलित किया गया था। शिवदत्त ने भी कहानी लेखन प्रतियोगिता में हिस्सा लिया और दूसरा स्थान प्राप्त किया। यह शिवदत्त का प्रथम साहित्यिक पुरस्कार था। इसके बाद शिवदत्त ने नवीं, दसवीं कक्षा के लिए हिन्दी व्याकरण की किताब लिखी जिसका नाम "प्रगतिशील हिन्दी व्याकरण" था। इसी समय शिवदत्त को किसी ने बोला कि शिवदत्त उपाध्याय बहुत बड़ा नाम है इसे बदल लो। नाम बदल तो लिया जाय पर रखा क्या जाय यह शिवदत्त को नहीं समझ आ रहा था। दोस्तों से भी राय ली गयी और अंत में "निर्मोही" उपनाम पसंद आया और शिवदत्त 'शिव निर्मोही' नाम से कवितायें करने लगे। पर कविताओं के क्षेत्र में शिवदत्त को कोई खास सराहना नहीं मिली। शिवदत्त अपनी किताब "प्रगतिशील हिन्दी व्याकरण" लेकर जम्मू के मल्होत्रा बुक डिपो गए, पर जब किताब छपी तो उस पर रामसरण आर्यन का भी नाम लिखा हुआ था। शिवदत्त के पूछने पर प्रकाशक ने जवाब दिया कि रामसरण एक मंत्री का रिश्तेदार है। उसके नाम से किताब आसानी से बिक जाएगी। मल्होत्रा की बात सुनकर शिवदत्त को काफी निराशा हुई लेकिन वह कर भी क्या सकते थे, चुप रह गए। मन में रोष छुपाकर चुप रहना, बहुत मुश्किल है। पर जीवन यथार्थ से एकीकार होना शिवदत्त सीख चुके थे। बहते जल के समान लोगों की प्यास बुझाना और अपना रास्ता बनाते जाना, यह शायद शिवदत्त के व्यक्तित्व का हिस्सा हो गया था।

हायर सेकेन्डरी स्कूल रियासी में नौकरी करते हुए शिवदत्त को तीन साल हो गए थे। तभी शिवदत्त को सूचना मिली कि उनका नाम नए साल के बेसिक एजुकेशन कोर्स बी.ई.सी. का प्रशिक्षण लेने वाले शिक्षकों की सूची में है। प्रिंसिपल साहब से अनुमति मिलने के पश्चात शिवदत्त प्रशिक्षण केंद्र आ गए। प्रशिक्षण केंद्र में और बहुत से प्रशिक्षार्थी थे। उन्हें शिवदत्त के कार्यों की जानकारी थी। वे शिवदत्त से काफी लगाव भी रखते थे और

प्रशिक्षण स्कूल में मान भी देते थे। प्रशिक्षण के दौरान शिवदत्त ने शिक्षा शास्त्र और उनके सिद्धान्त, शिक्षण प्रणालियाँ एवं उनकी विधियों की शिक्षा प्राप्त की थी। यहाँ पर शिवदत्त ने मनोविज्ञान नाम से एक नए विषय का भी ज्ञान प्राप्त किया। प्रशिक्षण केंद्र में आलेखन का भी एक प्रश्नपत्र था पर शिवदत्त को उस विषय मे कम रुचि थी। जिस समय शिवदत्त प्रशिक्षण ले रहे थे उसी समय भारत पर चीन ने हमला कर दिया था। इसका असर पूरे देश पर पड़ा। शिवदत्त के अंदर का भी राष्ट्रवाद जाग उठा और उन्होंने "राष्ट्रवाद जाग उठा" नाम से एक नाटक लिखा। उन्होंने इसके पात्रों का चयन करके इस नाटक का निर्देशन भी स्वयं किया। इस नाटक का पहला मंचन प्रशिक्षण केंद्र रियासी में चंदा इकट्ठा करने के लिए किया गया था। लोगों ने इस नाटक को खूब पसंद किया था। इस नाटक का मंचन कटरा और बी.टी. कालेज जम्मू में भी हुआ था। नाटक से जो धनराशि मिली उसे शिवदत्त ने राष्ट्रीय सुरक्षा कोष में जमा करवा दिया।

5. विवाह योग और जीवन

विवाह को लेकर कई रोचक घटनाएँ शिवदत्त के जीवन में घटीं। कई महिलाएं शिवदत्त के जीवन में आयीं। बात विवाह तक भी पहुंची लेकिन कहते हैं कि जोड़ियाँ आसमानों में बनती है। प्रेम प्रसंग और परिवार वालों की रजामंदी होने के बाद भी शिवदत्त के विवाह की बात कहीं निश्चित नहीं हो पायी। सन 1961 में शिवदत्त के गर्मियों की छुट्टियों के बाद रियासी वापस लौटने पर शिवदत्त के छोटे जीजाजी उनके पास रियासी गए। वह शिवदत्त को अपने साथ वापस पैंथल ले आए जहां शिवदत्त को उनके पिताजी से पता चला कि उनके जीजाजी उनके विवाह के लिए रिश्ता लेकर आए हैं। लड़की के पिता फौज में थे और वो लोग तालाब तिल्लो के रहने वाले थे। वे शिवदत्त से बोले कि तुम अपने जीजा जी के साथ चले जाओ। वो हमारे जमाई हैं और हम उन्हें मना नहीं कर सकते हैं। तुम लड़की देख लो तुम्हें पसंद आ गई तभी हम आगे बात करेंगे। वहाँ जाने में कोई हर्ज नहीं है। शिवदत्त तलाब तिल्लो पहुँचे तो उन्होंने देखा कि उनकी बहन के घर दो महिलाएं बैठी हुई थीं। बहन ने कहा कि ये तुम्हारी सास है

इनके पैर छू लो। शिवदत्त पैर छूते हुए सोचते हैं वो जिस लड़की को देखने आए हैं वो तो कहीं भी नहीं दिखाई दे रही है। बहन से पूछने पर पता चला कि वह तो पालमपुर में है।

शिवदत्त ने सोचा कि मैं तो फंस गया। बिना लड़की देखे शादी कैसे तय हो सकती है। शिवदत्त जब छोटे थे तो चाची पूछती थी कि कैसी लड़की से शादी करोगे? गोरी या काली तो शिवदत्त कहते गोरी। फिर भाभी पूछती देवर जी कैसी लड़की से शादी करोगे लंबी या छोटी? तो शिवदत्त कहते लंबी। कभी पूछती कि देवर जी आपको मोटी लड़की से शादी करनी है कि पतली? शिवदत्त कहते पतली। आज यहाँ शिवदत्त की शादी तय कर दी गई थी और शिवदत्त को यह भी नहीं पता था कि लड़की पतली है, लंबी या गोरी।

अक्टूबर महीने के तीसरे वीरवार के दिन शिवदत्त का साला शगुन लेकर पैंथल आया और गाजे-बाजे की रौनक के साथ शिवदत्त की सगाई कर दी गई। दिसंबर के महीने में शिवदत्त अपनी बहन के घर तलाब तिल्लो गए। यहां पर उनकी बहन ने दूर से लड़की को दिखलाया। शिवदत्त ने लड़की को देखा। लड़की को देखकर शिवदत्त के मन में निराशा हुई कि वह उनकी कल्पना के अनुरूप नहीं थी। अपनी शादी को लेकर जिन सपनों को शिवदत्त ने देखा था वो सब एक ही क्षण में चकनाचूर हो गए। शिवदत्त ने माँ से बोला कि वह उस लड़की से विवाह नहीं करेंगे। उन्हें यह लड़की नहीं पसंद है। परंतु पिता सावन मल ने यह बात नहीं मानी। वो बोले कि अब तो तिलक, शगुन सब हो गया है। अब चाहे लड़की लूली, लंगड़ी या कानी भी हो तो यह विवाह होकर ही रहेगा। वह बोले- "मैं वचन दे चुका हूँ, अगर तुमने अपनी मर्जी करी तो मैं तुमसे अपने सारे रिश्ते नाते सब तोड़ लूँगा और न ही तुम्हारे विवाह में शामिल होऊंगा।" शिवदत्त बेबस थे उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया और अपना सामान लेकर रियासी आ गए। 24 अप्रैल शिवदत्त के विवाह की तारीख निश्चित हुई पर परिवार की स्थिति आर्थिक रूप से तब भी सम्पन्न नहीं हुई थी। पिता सावन मल के पास कुछ भी

नहीं था और शिवदत्त के पास भी मात्र 700 रुपये थे किन्तु शिवदत्त की बहन बड़ी समझदार थी उसने विवाह की सारी तैयारियां कर लीं थीं।

23 को शिवदत्त की सांत (वर को स्नान एवं उवटन की रसम) हुई और फिर कुछ करीबी रिश्तेदारों को साथ मिलकर शिवदत्त बारात लेकर जम्मू गए जहां पर मिलनी के समय शिवदत्त को देखकर कुछ महिलाओं ने व्यंग किया कि लड़का इतना लंबा और लड़की छोटी। यह जोड़ी तो बड़ी ही अजीब है। उनकी बातें सुनकर शिवदत्त का दिल बैठ गया। उनका मन करता है कि शादी छोड़कर कहीं ऐसी जगह जाकर छुप जाएँ जहाँ पर उन्हें कोई भी न देख पाये। पर ऐसा कुछ भी नहीं हो पाया और उसी रात हिन्दू रीति-रिवाजों के साथ शिवदत्त का विवाह सम्पन्न हो गया।

विवाह के बाद माहौल बदला और उस बदले हुए माहौल के साथ शिवदत्त ने स्वयं को भी धीरे-धीरे बदल लिया। हाँ विवाह के बाद एक अच्छी बात यह हुई थी कि शिवदत्त और उनकी पत्नी कि रुचियों में कोई समानता न होने के कारण दोनों के अपने-अपने अलग कार्य क्षेत्र थे, जिसमें वे दोनों ही व्यस्त रहते थे। शिवदत्त अपने सृजनात्मक कार्यों में और पत्नी अपने घरेलू कार्यों में। दोनों ने ही एक दूसरे के कार्य क्षेत्र में कभी हस्तक्षेप नहीं किया।

शिवदत्त की माँ एक दबंग विचारों की महिला थीं उनके आगे कोई भी टिक नहीं सकता था। पर शिवदत्त की पत्नी की सहन शीलता और समझदारी ने उनके मन को मोह लिया था। कभी-कभी कोई बात हो भी जाती तो शिवदत्त की बहनें जो कि अपनी भाभी से बहुत प्यार करती थीं उनका पक्ष लेकर अपनी माँ को शांत कर देती थीं। इस प्रकार शिवदत्त की गृहस्थी की गाड़ी बड़ी शांति के साथ चल रही थी।

6. संतान की प्राप्ति

शिवदत्त के विवाह को धीरे-धीरे चार वर्ष बीत गए थे पर घर में कोई संतान नहीं हुई थी। शुरू-शुरू में सब शांत रहे फिर धीरे-धीरे फिकरमंद होने लगे थे। शिवदत्त की माँ हर महीने इंतजार करती कि इस महीने कोई

खुशखबरी सुनाई देगी लेकिन कोई खबर नहीं सुनाई देने पर निराश हो जाती थीं। फिर आसो देवी ने शिवदत्त की कुंडली दिखानी शुरू कर दी और संतान की प्राप्ति के लिए कोई कुछ भी कुछ बताता वे करने के लिये तैयार हो जातीं। उन्होंने टोने-टोटके भी करने शुरू कर दिये थे। सावन मल उन दिनों जम्मू में रहते थे वह जब भी घर आते पत्नी से एक ही सवाल होता कोई खुशखबरी है। पत्नी के जवाब को सुनकर वो भी निराश हो जाते थे। शिवदत्त उनकी इकलौती पुत्र संतान थी इसलिए उन्हें अपने वंशवृद्धि की बड़ी चिंता थी। वक्त अपनी रफ्तार से चला जा रहा था। और आखिर में 1965 में वो समय आ ही गया जब शिवदत्त की पत्नी ने आसो देवी को खुशखबरी सुनाई। आसो देवी बहुत खुश हुई उनके पैर जमीन पर नहीं पड़ रहे थे मानों उनमें पंख लग गए हों। उनके शरीर में फिर से जान आ गयी थी। उन्होंने अपनी बहू के लिए एक गाय खरीदी और उसका दूध अपनी बहू को देने लगीं साथ ही सुंड बनाकर पूरे गाँव में बांटी। बेटियों के घर मेवा मिष्ठान भिजवाया, गुरु महाराज की समाधि के ऊपर भी बच्चे की सलामती के लिए दुआएं मांगनें गई। शिवदत की एक बहन ऊधमपुर में रहती थी। बच्चे के जन्म के समय आसोदेवी ने अपनी बहू को उसके पास भेज दिया क्योंकि वहाँ पर अच्छा अस्पताल था। 16 जून 1966 को शिवदत्त के घर पहली संतान एक पुत्री का जन्म हुआ पूरे घर में खुशी की एक लहर दौड़ गई। साथ ही में एक चिंता जनक बात यह थी की लड़की जन्म से ही विकलांग थी उसके एक हाथ की दोनों उँगलियाँ आपस में जुड़ी हुई थीं तथा एक पैर की दो उँगलियाँ थी ही नहीं। कुछ बड़ी होने पर डॉ. विलियम् ने सर्जरी करके उँगलियों को अलग किया। इस बेटी का नाम निधि निष्कामिनी रखा गया। उसके पश्चात 24 अप्रैल 1969 को एक पुत्र का जन्म हुआ जिसका नाम शिवदत्त ने नालिनाक्ष रखा। यह नाम शिवदत्त ने एक बंगाली साहित्य में पढ़ा था। 3 दिसंबर 1971 को शिवदत्त के घर तीसरी संतान एक पुत्री का जन्म हुआ जिसका नाम अलका रखा गया। फिर 11 अगस्त 1974 में एक और पुत्र का जन्म हुआ जिसका नाम विशालाक्ष रखा।

आसो देवी ने अपने पोते-पोतियों के प्यार से बुलाने के नाम भी रखे एवं इन्हीं नामों से वह इन्हे बुलाती थीं और यही नाम पूरे गाँव में प्रचलित भी हुए तथा सभी उन्हे, इन्ही नामों से ही पुकारते थे। ये नाम क्रमशः थे- निधि, कोड्डा, ऋतु और गुच्छु।

7. नौकरी की चिंता

31 मार्च 1963 को शिवदत्त का शिक्षण पूरा हुआ तो उन्हें नियुक्ति की चिंता होने लगी कि उनकी नियुक्ति होगी तो कहाँ होगी और होगी भी कि नहीं। तभी शिवदत्त को पता चला कि शिक्षा विभाग ने जूनियर हाई स्कूल टिकरी में शिवदत्त की नियुक्ति कर दी थी। टिकरी पैंथल से 3 किलोमीटर दूर था शिवदत्त का मन वहाँ जाने को नहीं कर रहा था उनका मन तो अपने गाँव में ही बसा हुआ था। शिवदत्त की सबसे बड़ी चिंता यह थी कि यदि वे टिकरी चले गए तो बहनों की पढ़ाई बर्बाद हो जाएगी और साथ ही उनकी अपनी चाहत, रुचियों का भी दम निकल जाएगा। क्योंकि सारा दिन तो आने-जाने और स्कूल में ही निकल जाएगा। स्कूल के हेड मास्टर साहब ने शिवदत्त के उसी स्कूल में बने रहने के बहुत प्रयास किए परंतु कोई भी परिणाम नहीं निकला और 2 अप्रैल को प्रशिक्षण पूरा करके शिवदत्त पैंथल वापस आ गए तथा अगले ही दिन टिकरी जाकर अपना कार्य-भार भी संभाल लिया। शिवदत्त ने जिस स्कूल में अपना पद सँभाला था उसमें कुल पाँच कमरे और एक हाल था तथा छात्रों की संख्या 200 से भी कम थी। स्कूल में सात शिक्षक और एक हेडमास्टर था। हेडमास्टर जी ने शिवदत्त को कार्यालय का कार्य-भार दिया। शिवदत्त के काफी मना करने पर भी वो नहीं माने। हाँ दफ्तर के काम करने से एक फायदा जरूर हुआ कि जहां शिवदत्त को केवल हिन्दी की ही जानकारी थी यहाँ दफ्तर में अंग्रेजी में काम करना पड़ता था। इससे अँग्रेजी की जानकारी में भी वृद्धि हुई और बिना किसी की मदद के वो ड्राफ्टिंग भी करने लगे। साथ ही हिन्दी की जगह अँग्रेजी की कक्षाएं भी लेने लगे। उनके अंदर अँग्रेजी पढ़ने-लिखने का शौक जागा एवं दफ्तर में काम करने से उन्हें सरकारी काम-काज के तौर-तरीकों का भी पता चला। 1964 में नए हेडमास्टर साहब आए जो कि बहुत ही मेहनती और

विद्वान थे। उनके मार्गदर्शन में स्कूल में नयी जान आई। उनके प्रयासों से स्कूल का स्तर काफी ऊँचा हो गया। शिवदत्त ने स्कूल में गाँव के लोकजीवन को ध्यान में रखकर एक संग्रहालय भी खोला जिसके लिए छात्र अपने-अपने घर से कुछ सामान भी लाये।

1964 में गुलाम मुहम्मद सादिक रियासत के नए प्रधान मंत्री बने और वे पूरी रियासत का दौरा करने निकले। 1965 में वे उधमपुर के दौरे पर निकले तो शिवदत्त को पता चला कि उन्हें टिकरी के बीच से भी निकालना है। यह जान कर शिवदत्त ने लोगों के साथ मिलकर मोतीलाल बैगड़ा के साथ मुलाकात की तथा उनके सामने मांग रखी की हम टिकरी में हाईस्कूल चाहते हैं। मोती राम के साथ शिवदत्त के संबंध अच्छे थे। उन्होंने शिवदत्त की बात मान ली और उनकी मदद करने को तैयार हो गए। जब सादिक साहब दौरे पर आए तो शिवदत्त बच्चों के साथ-साथ उनके पीछे-पीछे चलने लगे। सादिक साहब के यह पूछने पर कि इन लोगों की मांग क्या है शिवदत्त ने जवाब दिया कि हम टिकरी में हाई स्कूल की मांग कर रहे हैं क्योंकि यहाँ के आस-पास के कई गांवों में कोई हाई स्कूल नहीं है। गाँव के गरीब लोग अपने बच्चों को पढ़ने के लिए बाहर नहीं भेज सकते हैं। वहाँ मोतीलाल के साथ सैकड़ों की संख्या में लोग खड़े थे। उन्होंने एक साथ नारा लगाया 'सादिक साहब जिंदाबाद' हमारी मांग हाई स्कूल। सादिक साहब ने चलते-चलते हाई स्कूल की मांग स्वीकार कर ली और चले गए। सभी बड़े खुश हुए ढ़ोल नगाड़े बजे और सभी ने नाच भी किया।

1965 में टिकरी स्कूल को हाई स्कूल की मान्यता मिल गई। दुर्गादास केरणी नए हेडमास्टर बने। वे बहुत ही मेहनती और ईमानदार शिक्षक थे। उन्होंने शिवदत्त को आफिस के कार्यों में अपना सहयोगी बनाकर रखा और काम-काज में वह शिवदत्त की सलाह भी लेते थे। उसी समय कुछ अध्यापकों ने पी. यू. सी. की परीक्षा के लिए फार्म भरे तो शिवदत्त ने भी भर दिया। 1966 में परीक्षा हुई और अँग्रेजी के पेपरों में शिवदत्त पास भी हो गए। 1967 में टी.डी.सी. की परीक्षा दी और अँग्रेजी के पेपर पास किए। इससे शिवदत्त का हौसला बढ़ा और उन्होंने बी. ए. की परीक्षा भी अँग्रेजी में पास

की। शिवदत्त का मन इधर-उधर की बातों से हटकर पढ़ाई में लगने लगा तो उन्होंने मन बनाया कि अब उन्हें एम. ए. करने के बाद ही रुकना है।

8. लघु यात्राएं एवं जिज्ञासा की उत्पत्ति

टिकरी में नौकरी करते समय शिवदत्त ने कई जगह की यात्राएं की जिसमें से कई तो उनके लिए यादगार बन गई। जिसमें से 1963 में बब्बापुर, मानसर से सरूईसर उनकी पहली यात्रा थी। किसी पर्व पर पैंथल के यात्रियों की एक बस मानसर झील में स्नान के लिए गई तो शिवदत्त भी उस बस में सवार हो गए। कृष्णपुर मनवाल पहुँचने पर रास्ते में पुरातत्व विभाग का बोर्ड देखकर शिवदत्त का मन वहाँ जाने को किया। शिवदत्त अपने मित्रों को लेकर मंदिर देखने चले गए। मंदिर में रखी मूर्तियों को देखकर शिवदत्त मंत्र मुग्ध हो गए। शिवदत्त ने कोणार्क मंदिर पर एक किताब पढ़ी थी इसलिए उन्हें यहाँ हर तरफ कोणार्क मंदिर ही दिखाई दे रहा था। मंदिरों के स्थापत्य ने शिवदत्त को काफी प्रभावित किया तथा शिवदत्त की सोच में एक नया रंग भरा जिससे वे डुग्गर की मूर्ति कला के खोजी बन गए।

शिवदत्त की दूसरी यात्रा 1964 में जम्मू से बल्लौर की थी। बल्लौर उधम पुर से बसौली जाने वाली धार रोड से कोई 120 किलोमीटर दूर एक उपनगर है। जिसे बिलावर भी कहते हैं। बिलावर डुग्गर का ऐतिहासिक स्थान है। यहाँ पर बहुत प्राचीन शिवमंदिर और बहुत से दर्शनीय स्थल है। शिवदत्त के छोटे बहनोई की जब प्रोन्नति हुई और वे ओवरसियर बने तो उनकी नियुक्ति बल्लौर हुई। बल्लौर का बैसाखी पर्व बहुत मशहूर है। शिवदत्त का उसे देखने का बड़ा मन था इसलिए वह बैशाखी की छुट्टियों में बल्लौर चले गए। वहाँ पर अपने जीजाजी के साथ उन्होंने हरिहर मन्दिर देखा, मंदिर देखकर शिवदत्त चकित रह गए डुग्गर प्रदेश में ऐसा भव्य मंदिर शिवदत्त ने पहली बार देखा था। इस मंदिर की सुंदरता ने शिवदत्त को विस्मित कर दिया।

बल्लौर के स्थानीय परिवेश ने भी शिवदत्त को बहुत प्रभावित किया। बल्लौर का बाजार तथा बल्लौर के राजा के महल के खंडहर को देखकर उन्हें लगा कि उन्हें बल्लौर के सुनहरे अतीत की खोज करनी चाहिए।

इसके पश्चात शिवदत्त ने सुकराला माता के भी दर्शन किए जहां की शिल्पकारी की कुदरती छाप शिवदत्त के मन पर गहरी बैठ गई थी।

1965 में शिवदत्त ने एक और यात्रा पंचारी तक की। यहाँ पर शिवदत्त क्रीमची के रास्ते से गए थे। क्रीमची ऊधमपुर के पास का एक ऐतिहासिक कस्बा है। क्रीमची के मंदिरों को देखकर शिवदत्त की बल्लौर के मंदिरों की याद ताजा हो गई थी। उन्होंने सोचा की बल्लौर, बब्बापुर और क्रीमची में कोई न कोई संबंध अवश्य रहा होगा। पंचारी के प्राकृतिक सौन्दर्य ने भी शिवदत्त को काफी अधिक प्रभावित किया।

1968 में शिवदत्त ने माँ, पत्नी, और छोटी पुत्री के साथ अमर नाथ की यात्रा की। जब शिवदत्त कश्मीर गए तो उन्हें प्रतीत हुआ की कश्मीर वाकई में धरती का स्वर्ग है। पहलगाम, चंदनबाडी, शेषनाग झील, पंचतरणी नदी और बर्फ से अमरनाथ गुफा में बने शिवलिंग को देखकर शिवदत्त को कुदरत की रहस्य मयी सृष्टि का एहसास हुआ। जिनके बारे में शिवदत्त न जाने कब तक सोचते रहे। इन यात्राओं ने शिवदत्त के दिमाग के ज्ञान के दरवाजों को झकझोर दिया था।

9. पैंथल हाईस्कूल में वापसी

1968 में शिवदत्त की बदली टिकरी से पैंथल हाई स्कूल में हो गई थी शिवदत्त ने सोचा था कि उनका नए स्कूल में भव्य स्वागत होगा पर ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। चुन्नी लाल रैना जी स्कूल के हेडमास्टर थे। वे शिवदत्त के पुराने साथी थे तथा शिवदत्त के साथ हीरानगर और रियासी में भी रह चुके थे एवं शिवदत्त के काम करने के तरीके से वाकिफ थे। शिवदत्त को पूरा यकीन था कि वे उन्हें कोई बड़ी जिम्मेदारी सौंपेंगे। पर ऐसा कुछ भी नहीं हुआ बल्कि उन्होंने तो शिवदत्त को प्राथमिक विभाग की दूसरी और तीसरी कक्षा को पढ़ाने के लिए नीचे भेज दिया। प्राथमिक और माध्यमिक दोनों कक्षाओं की प्रार्थना सभा एक ही साथ होती थी। शिवदत्त को प्रारम्भ से ही बोलने में रुचि थी, प्रार्थना सभा में शिवदत्त ने कई नए विषयों पर

भाषण दिया जिससे बिद्यार्थी और शिक्षक दोनों ही काफी प्रभावित हुए। उन्होंने हेडमास्टर साहब को बताया कि ऐसे ज्ञानी शिक्षक के ज्ञान का लाभ लेना चाहिये। उनकी बातों को मानकर हेड मास्टर साहब ने शिवदत्त को आधे दिन नीचे और आधे दिन ऊपर की कक्षा लेने की अनुमति दे दी परंतु शिवदत्त को नीचे रहना ज्यादा पसंद था इसकी एक वजह यह भी थी कि यद्यपि उन्होंने अँग्रेजी साहित्य में बी.ए. पास किया था परंतु वह चाहते थे कि वे बी.ए. की परीक्षा पूरे विषयों से पास करें। इस हेतु उन्होंने राजनीति शास्त्र और हिन्दी को चुना। नीचे प्राथमिक विभाग में काम कम था। अपनी कक्षा के बाद शिवदत्त ऊपर चले जाते जहां शांति का माहौल था। इस सबके साथ-साथ शिवदत्त अपनी पढ़ाई भी करते रहे। 1969 में शिवदत्त ने परीक्षा दी और पास भी हो गए। इसके पश्चात शिवदत्त ने जम्मू से एम.ए. का फॉर्म भरा और परीक्षा भी उत्तीर्ण की।

इधर शिवदत्त की दोनों बहनों को भी नौकरी मिल गयी जिससे घर की आर्थिक दशा में काफी सुधार आया और पिता सावन मल का कर्जा भी उतारने में भी मदद मिली।

10. शिक्षण का प्रशिक्षण

जुलाई 1969 में हाई स्कूल से निकलकर शिवदत्त ने सरकारी शिक्षण प्रशिक्षण कॉलेज में प्रवेश लिया। किसी कॉलेज में प्रवेश लेने का शिवदत्त का यह पहला अवसर था। उस समय शिवदत्त की आयु मात्र 32 वर्ष थी। प्रारम्भ में शिवदत्त के अंदर काफी डर और घबराहट की भावना थी कि किस प्रकार शिक्षकों से बात की जाती है, प्रिन्सिपल के साथ कैसे व्यवहार किया जाता है, किसे अपना मित्र बनाना है किसे नहीं, जैसी अनेकों बातें थीं। जिनको लेकर शिवदत्त काफी परेशान थे। कालेज की शिक्षा का माध्यम अँग्रेजी था। शिवदत्त अंग्रेजी पढ़ तो अच्छे से लेते थे किन्तु बोलना उनके लिए बहुत मुश्किल काम था। कुछ छात्र काफी फर्राटे से अँग्रेजी बोलते थे जिन्हें सुनकर शिवदत्त आश्चर्य चकित हो जाते थे। शिवदत्त कक्षा में डरते सहमते ही प्रवेश करते थे कि कोई शिक्षक उनसे कोई प्रश्न न पूछ ले तथा

कोई छात्र उनका मजाक न बना दे। परंतु छात्रों की तरफ जब कोई नकारात्मक प्रतिक्रिया नहीं आई तो शिवदत का हौसला बढ़ा और उन्होंने बेझिझक अंग्रेजी का प्रयोग करना प्रारम्भ कर दिया। कक्षा में बोलने और जवाब देने का परिणाम यह हुआ कि प्रोफेसर भी कक्षा के बाद प्रश्न पूछने लगे जिनका कभी शिवदत्त के पास जवाब होता तो दे देते वरना नो सर कहकर बैठ जाते। वाद-विवाद प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेना, पेपर पढ़ना, भाषण देने का शौक तो शिवदत्त को विद्यार्थी जीवन से ही था। प्रशिक्षण केंद्र में भी कोई कार्यक्रम होता तो शिवदत्त उसमें बढ़ कर हिस्सा लेते थे। शिवदत्त हिन्दी में बोलते थे परंतु उनका शब्दों का चयन और वक्तव्य बहुत उच्चकोटि का माना जाता था। कॉलेज के सांस्कृतिक कार्यक्रमों में हिस्सा लेने के कारण शिवदत्त की एक अलग ही पहचान बन गई थी। कॉलेज के विद्यार्थियों के साथ-साथ प्रोफेसर भी शिवदत को प्रोत्साहित करने लगे थे।

हुक्मचन्द्र रत्लपाल प्रशिक्षण कॉलेज के प्रधानाध्यापक थे। वे बहुत ही सादे और उच्च-विचारों के व्यक्ति थे। वह एक अच्छे शिक्षा विद एवं कामकाजी प्रशासक थे। उन्हें शिवदत्त से काफी स्नेह था उनके व्यक्तित्व का शिवदत्त के जीवन पर अच्छा प्रभाव पड़ा था। ओम प्रकाश जी मनोविज्ञान के शिक्षक थे। उनकी कक्षा में शिवदत्त विशेष रुचि नहीं लेते थे। थी। शिवदत्त ने जब बेसिक शिक्षा का प्रशिक्षण लिया था तो उन्हें बाल मनोविज्ञान में काफी रुचि थी और उन्होंने अपने प्रशिक्षण के समय में इस विषय से संबन्धित सभी पुस्तकों का अध्ययन भी किया। उन्हें लगता था कि मनोविज्ञान शिक्षकों के लिए अनिवार्य है। अँग्रेजी के शिक्षक प्रो. सुदर्शन मल्होत्रा जी से शिवदत्त को अंग्रेजी सीखने में काफी मदद मिली। प्रशिक्षण के दौरान शिवदत्त को यह भी समझ में आया कि स्कूली शिक्षा और कॉलेज की पढ़ाई में कोई भी समानता नही है। स्कूल में किताबें खोल कर पढ़ाते हैं और यहाँ पर शिक्षक बिना रुके पढ़ाते जाते हैं। बी. एड. के प्रशिक्षण में शिवदत्त ने शिक्षण से संबन्धित बहुत सी प्रणालियों का अध्ययन किया साथ ही यह भी जाना कि जिन प्रणालियों का प्रयोग बी. एड. में सिखाया जाता है उनका प्रयोग सामान्य रूप में स्कूलों में किया जाना संभव नहीं था, और न ही किया जाता था

क्योंकि इस प्रकार की शिक्षा के लिए शिक्षकों को बहुत सारी तैयारी करनी पड़ती थी जबकि शिक्षक छात्रों को कुर्सी पर बैठे-बैठे ही सब पढ़ा देते थे। शिवदत्त को प्रशिक्षण के दौरान बहुत कुछ सीखने को मिला पर साथ ही साथ यह भी पता चला था कि जो छात्र यहाँ पढ़ने आए थे वह मात्र प्रशिक्षण की डिग्री लेना चाहते थे जिससे कि उनकी तरक्की में कोई. रुकावट न आए। रटंत प्रणाली के आधार पर प्रशिक्षण, बौद्धिक विकास में बाधक माना जाता था पर सारे छात्र जवाब रटते रहते थे। पूरे प्रशिक्षण के दौरान उन्हें न तो ढंग से विचार व्यक्त करना ही आ पाया और न ही उनकी झिझक हो दूर हो पायी।

शिवदत्त को प्रशिक्षण के दौरान काफी परेशानियों का भी सामना करना पड़ा था जिसका सबसे बड़ा कारण था कि उन्हें अँग्रेजी अच्छे से नहीं आती थी इस कारण वो जो भी लिखते थे उस पर उन्हें पूर्ण विश्वास नहीं था कि वो जो भी लिख रहे थे वो सही भी है कि नहीं। लेकिन उन्हें यह लगता था कि उनका भविष्य बी. एड. की पढ़ाई पर निर्भर करता था इस कारण उन्होंने अपना सारा ध्यान बी. एड. की पढ़ाई पर लगा दिया।

बी.एड. करने के साथ ही शिवदत को कॉलेज से बाहर भी जाने का अवसर मिला। वाद-विवाद के लिए भी शिवदत्त का नाम आगे से भेजा जाता था जिससे उन्हें अन्य कालेजों में जाने का अवसर मिलता था तथा दूसरे कालेज के छात्रों से भी जान-पहचान बनती थी। उन्हें नयी-नयी चीजे सीखने को मिलती थीं।।

जिस समय शिवदत्त प्रशिक्षण ले रहे थे इसी समय भारत सरकार के सहयोग से शिक्षा विभाग ने तीन दिवसीय कार्यक्रम श्रीनगर में आयोजित किया जिसमें कॉलेज की तरफ से शिवदत्त को भेजा गया। इतने बड़े स्तर के कार्यक्रम को देखने का शिवदत्त का पहला अवसर था। कार्यक्रम का उद्घाटन तत्कालीन शिक्षा मंत्री प्रो. शेरसिंह जी ने किया था। उहोंने गांधीवाद के मूल सिद्धांतों की व्याख्या बड़े ही सरल शब्दों में की थी। उनके साथ दिल्ली से एक विचारक सुब्बा राव भी आये जिन्होने अपने भाषण में बताया

कि कई लोग उन्हें सलाह देते हैं कि लड़के और लड़कियों के शिविर अलग होने चाहिए, उन्हें साथ नहीं रखना चाहिए, इस बात पर उन्होंने कहा कि यदि एक घर में लड़की और लड़का साथ रह सकते हैं तो फिर एक शिविर और एक कॉलेज में क्यों नहीं? शिव दत्त पर उनके भाषण का बहुत गहरा पड़ा था। वह पहले तो सहशिक्षा के खिलाफ थे उनका मानना था कि लड़के और लड़कियों को अलग रखना चाहिए। परंतु इस शिविर में शिवदत्त ने देखा कि यहाँ पर ऐसी कोई भी बात नहीं थी यहाँ पर लड़के और लड़कियां समान रूप से वाद-विवाद में भाग ले रहे थे। गांधीवादी विचारधारा पर यहाँ परिचर्चा होती थी।

शिविर की समाप्ति के बाद शिवदत्त गुलमर्ग भी गए थे जहां पर उन्हें प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के काफिले को देखने का अवसर भी मिला था। शिविर में भाग लेने से शिवदत्त का रुझान गांधीवादी विचारधारा के प्रति बढ़ गया था। जम्मू में एक गांधी वादी नेता थे। शिवदत्त ने उनके दफ्तर जाना शुरू कर दिया और गांधीवादी पत्रिका के ग्राहक बन गये। प्रशिक्षण कॉलेज में प्रतिवर्ष एक पत्रिका का सम्पादन होता था जिसका नाम था 'टीचर्स'। शिवदत्त का लेख इस पत्रिका में जब प्रथम नंबर पर प्रकाशित हुआ तो शिवदत्त को हिन्दी विभाग के सम्पादन का कार्य सौंप दिया गया। इसका परिणाम यह हुआ कि शिवदत्त ने रचनाओं की काँट-छाँट का काम भी सीख लिया। सम्पादन, लेखन, अध्ययन, चिंतन और विवेचन तथा समीक्षा में रुचि 'टीचर्स' पत्रिका से शिवदत्त में आई। एक-एक रचना का अध्ययन करना फिर उसमें व्यक्त विचारों की समीक्षा करना साथ ही संपादक का काम कितना मुश्किल है यह बात भी शिवदत्त को अच्छी तरह से समझ आ गयी।

प्रशिक्षण कॉलेज ने शिवदत्त की परंपरा वादी सोच को बदला। लड़कियों और महिलाओं के प्रति पुराने संकीर्ण विचारों को दूर किया। प्रशिक्षण के दौरान शिवदत्त को एक शैक्षिक यात्रा पर भी जाने का अवसर मिला। यह यात्रा पठानकोट से दिल्ली, दिल्ली से आगरा फिर फतेहपुरसीकरी, फतेहपुरसीकरी से मुंबई, मुंबई से बड़ौदा, बड़ौदा से जलगांव, जलगांव से अजन्ता की गुफा

तक, वहाँ से वापस आगरा, मथुरा, बृंदावन दिल्ली, पठानकोट होते हुए जम्मू तक थी। इस यात्रा में शिवदत्त ने कुतुबमीनार, लालकिला, ताजमहल, विश्वविद्यालय, संग्रहालय, संगीतालय, अजंता की गुफाओं की चित्रकला और बहुत कुछ देखा। इसे देखकर शिवदत्त ने यह समझ आया कि किताबी शिक्षा के साथ-साथ पर्यटन के द्वारा शिक्षा भी होनी चाहिए। किताबी शिक्षा से हम हर प्रकार का ज्ञान नहीं प्राप्त कर सकते हैं जब तक हम वो चीज स्वयं देखकर और समझकर न महसूस करें।

पर्यटन से वापस लौटकर शिवदत्त ने अपन प्रशिक्षण पूरा किया तो उनकी नियुक्ति टिकरी हाई स्कूल में हो गई। यहाँ शिवदत्त ने पहले भी पढ़ाया था मन न होते हुए भी शिवदत्त को वहाँ पर जाना पड़ा और अपना पद संभालना पड़ा।

प्रशिक्षण में सीखी हुई विधियों का प्रयोग शिवदत्त ने अँग्रेजी, हिन्दी और इतिहास पढ़ाने में किया जिसका काफी असर छात्रों पर हुआ। शिवदत्त ने एम. ए. प्रथम वर्ष की परीक्षा तो उतीर्ण कर ली थी पर प्रशिक्षण के कारण द्वितीय वर्ष की परीक्षा नहीं दे पाये थे जिसकी तैयारी के लिए शिवदत्त ने फार्म भरा और परीक्षा की तैयारी प्रारम्भ कर दी थी। 1971 में शिवदत्त ने परीक्षा दी और द्वितीय श्रेणी में परीक्षा उत्तीर्ण की। 1973 में शिवदत्त की मास्टर ग्रेड में तरक्की हुई और चढ़ेआई हाईस्कूल में नियुक्ति हुई। यह पैंथल से पाँच किलोमीटर दूर था।

चढ़ेआई में पहले बहुत रौनक होती थी पर आजादी के बाद लोगों ने काम की तलाश में शहर जाना शुरू किया और वहीं बस गए इसका परिणाम यह हुआ कि गाँव उजड़ने लगे और शहर बसने लगे। इस कारण चढ़ेआई की रौनक गायब हो गयी थी। चढ़ेआई की तरह ही पैंथल भी उजड़ने लगा था। शिवदत्त के गाँव के कुछ परिवार उधमपुर तो कुछ परिवार जम्मू जाकर बस गए थे जिससे शिवदत्त का मुहल्ला भी सूना हो गया था।

चढ़ेआई 'स्कूल घग्घे बाग में था, कहते हैं कि 17वीं शताब्दी के स्थानीय सामंत ने यह बाग लगवाया था। बाग के बीच अष्ट क़ोणीय जलकुंड था

जो शिवदत्त के लिए एक अजूबा था और उसके ऊपर बना मंदिर भी उन्हें बहुत ही मोहक लगता था। जिसे देखने वो रोज ही जाया करते थे।

चढ़ेआई का स्कूल भी टिकरी की तरह ही छोटा था। स्कूल की पढ़ाई का स्तर टिकरी से भी नीचा था। बच्चे सिर्फ नाम के लिए ही पढ़ने आते थे। उनका सारा समय करसानी (कृषि) के काम में ही बीतता था। इस गाँव में भी शिवदत्त को पढ़ाई-लिखाई का वातावरण नहीं दिखाई दिया, लोग राजनीति की बातें तो करते थे पर अपने भविष्य को लेकर बेखबर थे।

आस-पास के गाँव के जो छात्र आते भी थे वो बहुत ही गरीब थे उनके पास न तो किताबे और न ही कपड़े खरीदने के पैसे थे। छात्रों में पढ़ने और एक दूसरे से आगे बढ्ने में कोई रुचि नहीं थी। इसलिए शिवदत्त ने सोचा कि कोई ऐसा तरीका हो जिससे छात्रों में प्रतियोगिता का भाव जाग्रत हो और वे पढ़ाई में रुचि लें। उन्होंने इसका एक उपाय निकाला। उन्होंने दसवीं और नवीं कक्षा के छात्रों के लिए हर हफ्ते टेस्ट रख दिये। जिसके नंबर कम आते वह आगे आने के लिए और पढ़ाई करता और आगे बढ़ जाता। जिससे छात्रों में पढ़ाई के प्रति रुचि और प्रतियोगिता की भावना भी बढ़ी।

चढ़ेआई की एक घटना 1975 की है। 26 जनवरी के पावन पर्व पर शिव दत्त ने एक नाटक का मंचन करने का विचार किया। यह नाटक घुसपैठियों के कश्मीर में घुसने के ऊपर आधारित था। अभ्यास के लिए शिवदत्त ने डंडे और सोंटो का प्रयोग किया। स्कूल के कुछ छात्र ऐसे भी थे जिनके घर में कोई न कोई सैनिक था और उनके पास बंदूकें भी थीं। नाटक को सजीव बनाने के लिए कुछ बच्चों से खाली बंदूके लाने के लिए शिवदत्त ने बोला था। 26 जनवरी को शिवदत्त को सुंदरानी गाँव में सूचना मिली कि किसी बच्चे ने भरी बंदूक स्कूल में चला दी। किसी को कोई नुकसान तो नहीं हुआ पर इस बात की दहशत पूरे गाँव मैं फैल गई। शिवदत्त ने किसी तरह हालत संभाले। नाटक का मंचन किया। नाटक सफल रहा। परंतु इस घटना के बाद शिवदत्त का सांस्कृतिक कार्यक्रम और नाटक

के मंचन में कोई रुचि नहीं रही। धीरे-धीरे इस विधा से उनका मन हट गया। इसका स्थान लोक वार्ता ने ले लिया। शिवदत्त जिस गाँव भी जाते वहाँ की दँतकथा सुनते और फिर उसे लिपिबद्ध करते।

11. नयी नौकरी

यह बात 1975 मई महीने की है शिवदत्त बस से चढ़ेआई स्कूल जा रहे थे कि एक सज्जन ने इशारा करके उन्हें अपने पास बुलाया और पूछा कि तुम हिन्दी में एम. ए. हो? शिवदत्त ने हाँ में सिर हिलाया तो उन्होंने कहा कि गजट (सरकारी राजपत्र) में हिन्दी की तीन पोस्टों के लिए विज्ञापन छपा है। तुम भी फार्म भर दो। वो सज्जन प्रो. प्रेमचंद्र जी थे जो कि उधमपुर डिग्री कॉलेज में नियुक्त थे। शिवदत्त ने बिना समय नष्ट किए अगले ही दिन लोक सेवा आयोग जाकर दो फार्म लिए। एक फार्म तो सीधे ही भेज दिया और दूसरा इसलिए लिया था जिससे कि वो अपने विभाग से अनुमति ले सकें। उधमपुर कार्यालय से अपने कागज लेकर ज्वाइंट डाइरेक्टर के कार्यालय जम्मू पहुँचने पर वहाँ उनकी मुलाकात प्रकाश कोहली जी से हुई वे शिवदत्त से पुरानी जान-पहचान वाले थे। वे शिवदत्त का फार्म लेकर कहने लगे कि तुम घर जाओ। सारी औपचारिक्तायें पूरी करके वे शिवदत्त का फार्म लोक सेवा आयोग में जमा करवा देंगे। इसके लिए उन्हें अलग से कुछ भी खर्च करने की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि उन्हें भी इतिहास का फार्म भरना है दोनों काम एक साथ हो जाएंगे। शिवदत्त उन्हें फार्म देकर वापस घर लौट आए।

मार्च 1976 में शिवदत्त की नियुक्ति डिप्टी सुपरिन्डेंट के रूप में दसवीं की परीक्षा लेने के लिए थियाल गाँव में हुई। वहाँ उन्हें कोई बीस दिन रुकना था। शिवदत्त को यह जगह काफी पसंद आई थी। यहाँ पर उन्हें डुग्गर संस्कृति की भी झलक मिली। थियाल का जगन्नाथ मंदिर भी शिवदत्त के लिए आकर्षण का केंद्र बना।

उन्ही दिनों तत्कालीन मुख्यमंत्री शेख अब्दुल्ला भी उस इलाके के दौरे पर आए थे। शेख अब्दुल्ला 25 फरवरी 1975 को दुबारा से जम्मू कश्मीर

राज्य के मुख्यमंत्री बने थे। उन्होंने मुख्यमंत्री बनते ही दो मुख्य घोषणाएँ की थीं। एक भ्रष्टाचार के खिलाफ थी, दूसरी शिक्षकों की परीक्षा लेने की थी। शिवदत्त ने भी प्रवक्ता हेतु फार्म भरा था। शिवदत्त को परीक्षा की सूचना मिली, रोल नंबर आया उन्होंने लिखित परीक्षा दी और पास हो गए।

28 व 29 अगस्त 1976 में मौखिक परीक्षा के लिए आयोग ने शिवदत्त को श्रीनगर जाने के लिए कहा गया। शिवदत्त वहाँ साक्षात्कार देने के लिये पहुँच गए। साक्षात्कार के समय सामने बैठे हुए साक्षात्कारकर्ता ने सर्वप्रथम शिवदत्त का नाम और शिक्षा के बारे में पूछा। जब रुचियों की बारी आई तो शिव दत्त ने अपनी साहित्यिक कृतियाँ दिखाईं। वहाँ का वातावरण शिवदत्त को एक साहित्यिक गोष्ठी जैसा प्रतीत हो रहा था। इसलिए वे यह भी भूल गए थे कि वे साक्षात्कार देने गए थे। आधे घंटे के बाद जब शिवदत्त बाहर निकले तो उन्हें बाहर और भी कई लोग दिखे जो कि साक्षात्कार के लिए आए थे उनमें से कई लोग शिवदत्त की जान पहचान वाले भी थे। वे शिवदत्त से पूछने लगे कि अंदर साक्षात्कार में उनसे क्या-क्या पूछा गया तो शिवदत्त ने अंदर हुई वार्ता के बारे में जब उन्हें बताया तो सब आश्चर्य चकित हो गए।

दिवाली के एक दिन पहले शिवदत्त को शिक्षा विभाग के कमिश्नर का एक तार मिला जिससे पता चला कि उनकी नियुक्ति कठुआ डिग्री कॉलेज में हिन्दी प्रवक्ता के रूप में हो गई थी। एक सप्ताह के अंदर उन्हें उपस्थित होना था। शिवदत्त की आर्थिक स्थिति उन दिनों अच्छी नहीं थी। इसलिए वो घर छोड़ने को तैयार नहीं थे। शिवदत्त के साथियों ने शिवदत्त को समझाया। उनमें से एक पैंथल के डॉ. नगोतरा भी थे जिंहोने कहा कि समाज में पैसे से ज्यादा पद की महिमा ज्यादा बड़ी होती है। मेरा भाई दुकानदार है दस हजार रुपया महीना कमाता है और मैं मात्र 750 रुपये, पर समाज में मेरा रुतबा जितना है उतना मेरा भाई का नहीं। इसलिए तुम कॉलेज की नियुक्ति पत्र को स्वीकार कर लो। उनकी बातों से प्रेरित होकर दूसरे दिन ही शिवदत्त अपने स्कूल से रिलीविंग ऑर्डर लेकर अगले दिन ही कठुआ चले गये।

4 नवंबर 1976 में सरकारी डिग्री कॉलेज कठुआ में शिवदत्त ने अपना कार्य-भार सँभाला। उन दिनों पूर्ण भक्त नन्दा कठुआ डिग्री कॉलेज के प्रधानाध्यापक थे। उन्होंने शिवदत्त को अपने पास बुलाया और समय सारिणी हाथों में देते हुए अगले दिन कक्षाओं में पढ़ाने के लिए जाने को कहा। शिवदत्त के छोटे जीजा गोपाल कृष्ण शिवदत्त के साथ गए थे। उन्होंने कठुआ में शिवदत्त के रहने के लिए एक कमरा ढूंढा। अगले दिन शिवदत झिझकते हुए स्टाफ रूम में पंहुचे। शिवदत्त के आने का पता सभी को चल गया था। शिवदत्त के हेड प्रोफेसर चन्द्रकान्त जोशी थे। शिवदत्त ने उनका नाम शीराजा पत्रिका में भी पढ़ा था। वो बहुत अच्छे कवि थे। वो शिवदत्त से बड़े ही स्नेह से मिले। उन्होंने शिवदत्त का परिचय कक्षा के छात्रों से करवाया। उन दिनों कॉलेज में चार कक्षाएं होती थीं। पी यू.सी., डी.टी.सी., बी.ए. भाग एक, बी.ए. भाग दो। शिवदत्त पी.यू.सी. और बी.ए. भाग एक की कक्षाएं लेने लगे, जिसमें उन्हें कोई भी परेशानी नहीं आई। शिवदत्त पूरी तैयारी के साथ कक्षा में जाते थे। उपस्थिति लेने के बाद वो छात्रों को पढ़ाना शुरू करते थे। साथ ही छात्रों को प्रश्न पूछने का भी समय देते थे।

डिग्री कॉलेज के स्टाफ के कुछ शिक्षकों से शिवदत्त की पहले से ही जान पहचान थी। इतिहास के प्रो. केदारनाथ खजूरिया शिवदत्त के जिला शिक्षा अधिकारी भी रह चुके थे। संस्कृत के प्रो. सत्यपाल 'वत्स' जी एक डोगरी लेखक थे। वे विद्वान, लेखक, कवि, चिंतक, विचारक एवं निबंधकार के रूप में कठुआ में जाने जाते थे। कई सांस्कृतिक संस्थाओं के वे संचालक थे। वे सांस्कृतिक संस्थाओं में जब भी जाते शिवदत्त को साथ लेकर जाते थे। इस कारण समाज सेवियों और साहित्य कर्मियों से शिवदत्त की भी जान पहचान हो गई थी।

कॉलेज का वातावरण शिवदत्त को पसंद आ गया था। उनके अंदर का डर भी धीरे-धीरे निकल गया था। साथ ही शिवदत्त को यह भी समझ आ गया था कि स्कूल के शिक्षक और कॉलेज के शिक्षक में बहुत फर्क होता है। कॉलेज की कक्षा में वही शिक्षक टिक सकता था जिसे अपने विषय का पूरा ज्ञान हो, धारा प्रवाह बोल सकता हो, जिसके विचार प्रौढ़ और

परिपक्व हों, तथा जिसकी सोच खुली और विशाल हो, साथ ही तंग दिली, अधूरा ज्ञान, तथा छोटे व्यक्तित्व का होना कॉलेज के शिक्षक के अवगुण होते हैं। इसके साथ ही शिवदत्त ने यह भी समझा कि कॉलेज के छात्रों को डंडे की ताकत से नहीं पढ़ाया जा सकता। इन छात्रों के प्रश्न और उनकी मांग के बीच भी एक तर्क होता है। एक तर्क शील, सहनशील, दूरदर्शी, संयमी शिक्षक ही इन छात्रों को संभाल सकता है और उनकी मांगों को पूरा कर सकता है। जिसके लिए शिक्षक का व्यवहार कुशल होना भी जरूरी है। शिवदत्त ने कॉलेज आने के बाद अपने स्कूल शिक्षक के रूप को बदला उन्होंने कॉलेज के बाकी प्राध्यापकों के पढ़ाने के तरीकों पर भी ध्यान देना शुरू किया। शिवदत्त अपनी पूरी कोशिश करते थे कि उनके शिक्षण में किसी भी प्रकार की कोई त्रुटि न हो। छात्रों की मनोदशा को समझने में बी. एड. कॉलेज में पढ़ी हुई मनोविज्ञान की शिक्षा का काफी लाभ हुआ। कॉलेज के सभी विद्यार्थी शिवदत्त को अपना सच्चा हितचिंतक और मार्गदर्शक मानने लगे। कॉलेज के प्रिन्सिपल नन्दा साहब का प्रशासन चलाने का तरीका बड़ा ही अनोखा था। वे दमन की नीति में विश्वास रखते थे जिस कारण कोई न कोई पंगा बना ही रहता था। एक बार कुछ छात्र किसी समस्या को लेकर प्रिंसिपल के कक्ष में गये तो वे उनकी समस्या का समाधान करने की जगह उन छात्रों के ऊपर ही हाथ उठा बैठे। इसका परिणाम यह हुआ कि छात्रों ने भी प्रिंसिपल के ऊपर हाथ उठा दिया। परिणाम स्वरूप कॉलेज में बहुत बड़ा हंगामा खड़ा हो गया। इसमें कॉलेज के कुछ शिक्षक भी जख्मी हो गए। शिक्षक संघ और छात्र संगठन में ठन गयी। पर प्रशासन दोषी विद्यार्थियों को पकड़ने के पक्ष में नहीं था। क्योंकि कोई भी गैर जिम्मेदारी वाला कदम परेशानी का सबब बन सकता था। इस कारण अफसर सुलह के पक्ष में थे। शिवदत्त ने आगे बढ़कर दोनों पक्षों में सुलह का मार्ग प्रशस्त किया।

इस घटना के बाद सभी छात्र उनका बड़ा सम्मान करने लगे। जिस पक्ष का भी शिवदत्त को जज बनाया जाता वही पक्ष शिवदत्त का फैसला मान लेता था। सभी को उनकी निष्पक्षता पर पूरा विश्वास था।

शिव दत्त का कठुआ डिग्री कॉलेज में सबसे पसंदीदा स्थान था किताबों से भरा हुआ पुस्तकालय। शुरू से ही शिवदत्त को किताबें पढ़ने का शौक था। इस पुस्तकालय में हर विषय से संबन्धित पुस्तकें थीं जिनको पढ़ने से शिवदत का पुस्तकीय ज्ञान के साथ-साथ बौद्धिक ज्ञान भी बढ़ा।

12. प्रकाशन का आरंभ

सन 1970 में कल्चरल अकादमी ने लोकसाहित्य के संकलन के लिए एक नया अभियान शुरू किया था। कॉलेज के पुस्तकालय में लोकसाहित्य से संबन्धित पुस्तकों का भंडार था। शिवदत्त ने लोकसाहित्य से संबंधित पुस्तकें पढ़नी शुरूकी जिससे उनका लोकसाहित्य में ज्ञान बढ़ा और उन्होंने 'नीलजा' पत्रिका के लिए 'डुग्गर की लोकगाथाएं - एक परिचय', 'शीराजा' डोगरी के लिए 'डोगरी लोकगाथा', 'डोगरी लोकगाथाओं पर नागपंथ का असर' तथा 'शीराजा' हिन्दी के लिए 'डुग्गर की योगपरक गाथाएँ' आदि लेख लिखे। ये सभी लेख प्रकाशित भी हो गए जिससे शिवदत्त को काफी प्रोत्साहन मिला और मनोबल भी बढ़ा। शिवदत्त की कक्षा में ओंकार पाधा नाम का छात्र था जिसे कठुआ के जोगियों की जानकारी थी। प्रो. मक्खन लाल टिक्कू को लेकर शिवदत्त ने जोगियों के घरों के चक्कर लगाए। उन जोगियों से मिली जानकारी के आधार पर शिवदत्त ने बाबा बंगी और 'बाबा थोलू' पर एक समीक्षात्मक लेख लिखा और शीराजा डोगरी में छपने के लिए भेजा। शीराजा कल्चरल अकादमी से प्रकाशित एक बहुत प्रतिष्ठित पत्रिका है और यहाँ उनकी रचना बिना किसी विलंब के छप गई। इससे शिवदत्त की प्रतिष्ठा को चार-चाँद लग गए और उनकी चर्चा सभी जगह होने लगी।

इसी बीच डोगरी संस्था ने डोगरी लोक साहित्य पर रामनगर में एक गोष्ठी का आयोजन किया जहां शिवदत्त को भी आमंत्रित किया गया। शिवदत्त ने वहाँ पर 'डोगरी लोक गाथाओं में वैदिक बीज' शीर्षक के साथ एक शोध पत्र पढ़ा। यह शोध पत्र शिवदत्त की डोगरी संस्कृति में वेदों के मूल ज्ञान की परिपक्वता को दर्शाता था। सभी वरिष्ठ वक्ताओं ने शिवदत्त की बहुत प्रशंसा की, तथा शिवदत्त का काफी मनोबल बढ़ाया।

उन्ही दिनों केंद्र सरकार ने प्रत्येक व्यक्ति को पढ़ाने के लिए प्रौंढ शिक्षा अभियान शुरू किया था। जिसका एक केंद्र पंजाब यूनिवर्सिटी के अंदर भी था। उसके संयोजक उर्दू के मशहूर लेखक कश्मीरी लाल जाकिर थे। उन्होंने भारत के पाँच राज्यों के लेखकों को प्रौढों के लिए पुस्तकें तैयार करने के लिए चंडीगढ़ बुलाया। जम्मू से जिन डोगरी लेखकों को बुलाया गया था उनमें से एक नाम शिवदत्त का भी था। 18 जनवरी 1979 को शिवदत्त चंडीगढ़ गये, चंडीगढ़ की शिवदत्त की यह पहली यात्रा थी। शिवदत्त के रहने की व्यवस्था जाकिर साहब ने छात्रावास में की थी। अगले दिन कार्यक्रम का उदघाटन तत्कालीन केंद्रीय शिक्षा मंत्री प्रो. शेर सिंह जी के द्वारा किया गया था। कार्यक्रम के बाद जाकिर साहब ने शिवदत्त को पुस्तकें किस प्रकार से तैयार करनी है यह समझाया। यह कार्यशाला 19 जनवरी से 28 जनवरी तक दस दिनों की थी। जिसमें डोगरी, पहाड़ी (हिमाचली), पंजाबी, हिन्दी, उर्दू और कश्मीरी के पाँच-पाँच लोगों के हिसाब से कुल तीस लोग शामिल थे। यह कार्यशाला शिवदत्त के लिए बड़ी ही लाभदायक साबित हुई। वहाँ पर शिवदत्त की मुलाकात डॉ. बंशीराम शर्मा से हुई जो किन्नर लोक साहित्य पर शोध कार्य कर रहे थे। उन्हें अपने विषय पर पूरा अधिकार था। शिवदत्त ने लोकसाहित्य के कई सिद्धांत उनसे सीखे। कार्यशाला में ही श्रीमती विद्या शर्मा, जो कि हिमाचल की सांस्कृतिक अकादमी से जुड़ी थीं उनसे शिवदत्त की काफी अच्छी जान पहचान हो गई थी। उन्होंने शिवदत्त को हिमाचली लोकसाहित्य और लोकसंस्कृति की जानकारी के साथ-साथ लोकसंस्कृति के आधार भी समझाये जिससे शिवदत्त का ज्ञान भी बढ़ा और उन्होंने मन में यह विचार बनाया कि वह जम्मू पहुँच कर डुग्गर लोकसाहित्य पर काम करना शुरू करेंगे। कठुआ पहुँचने के 15 दिनों के पश्चात विद्या शर्मा जी का एक पार्सल मिला जिसमें हिमाचल से संबन्धित किताबें थीं। उन किताबों ने शिवदत्त पर काफी प्रभाव डाला और उन्होंने विचार बनाया कि सर्वप्रथम वह 'लोकगाथा' विधा पर काम करना शुरू करेंगे। इसलिए डुग्गर की लोकगाथा पर काम करने के लिए उन्होंने गाँव-गाँव घूमना प्रारम्भ कर दिया था।

उन्ही दिनों शिवदत्त को पता चला कि समाज कल्याण विभाग ने बच्चों के लिए बालसाहित्य की पुस्तकें (पाण्डुलिपि) मांगी हैं। शिवदत्त ने बच्चों के लिए एक पांडुलिपि (पुस्तक) तैयार की जिसका शीर्षक रखा- 'कश्मीर की कहानी'। इस पुस्तक में जम्मू-कश्मीर से लेकर लद्दाख तक के सांस्कृतिक जीवन पर कुछ लेख थे। 30 मई 1980 को शिवदत्त को सूचना मिली कि सरकार ने उनकी पुस्तक के लिए 2000 रुपये का इनाम घोषित किया है। जिसे 3 जून को कश्मीर जाकर मुख्यमंत्री जी से ग्रहण करना था। यह समाचार सुनकर शिवदत्त को बहुत प्रसन्नता हुई उनके लिए यह बहुत बड़ी उपलब्धि थी।

पहली जून से छुट्टियाँ शुरू हो गई थी। सूचना विभाग के निदेशक साहब ने पुस्तक का पुरस्कार लेने के लिए शिवदत्त को श्रीनगर आने के लिए कहा। शिवदत्त 3 जून को श्रीनगर पुरस्कार लेने के लिए पहुंचे। मुख्य मंत्री जी के निजी आवास पर उन्होंने शेख साहब और उनकी पत्नी से पुरस्कार स्वीकार किया। मुख्य मंत्री महोदय शिवदत्त के कार्यों से बहुत प्रभावित हुए थे और उन्होंने शिवदत्त का बड़ा सम्मान किया तथा उन्हें अपने साथ चाय पीने के लिए भी आमंत्रित किया। वास्तव में शिवदत्त के लिए यह गौरव की बात थी।

श्रीनगर जाने पर शिवदत्त ने कमीशनर सेकेट्री को दो आवेदन दिये। एक ऊधमपुर कॉलेज में स्थानांतरण हेतु और दूसरा वेतनमान की सुरक्षा के लिए। चूंकि शिवदत्त की सीधी भर्ती हुई थी इस कारण वेतनमान को सुरक्षित करने के लिए सरकारी अनुमति जरूरी थी।

1980 की शुरुआत से ही कठुआ कॉलेज में काफी परिवर्तन हुए जिसके परिणाम स्वरूप वर्तमान प्राचार्य की बदली हुई और नए प्राचार्य ने कार्यभार सँभाला। अपने पूरे सामर्थ्य के अनुसार उन्होंने कॉलेज को ऊँचाइयों पर ले जाने के लिए कार्य किया। मार्च के महीने में उन्होंने वार्षिक समारोह का आयोजन किया जिससे उनकी चमक और बढ़ी। वार्षिक समारोह के अगले दिन ही टी.डी.सी. की परीक्षा थी जिसके लिए शिवदत्त को हायर सेकेन्डरी स्कूल भड्डू में सुपरिडेंट बनाकर भेजा गया था। शिवदत्त परीक्षा के कारण कोई 20 दिन भड्डू में रहे।

भड्डू शिवदत्त को अपने गाँव जैसा ही लगा। पैंथल की तरह ही भड्डू के बाजार में भी एक तालाब था। तालाब के ऊपर नीचे कुछ दुकाने थीं। गाँव में कुछ 80-90 घर थे। यहाँ पर भी पैंथल के ही समान एक पुराना शिवमंदिर था जिसका शिखर दूर से ही दिखता था। पैंथल में जिस प्रकार दीनू भाई पंत जी एक मशहूर कवि थे उसी प्रकार भड्डू में भी अट्ठारहवीं शताब्दी के मशहूर कवि थे जिनका नाम दतु था। शिवदत्त ने अपने निवास के दौरान उनकी कविताओं का अध्ययन किया।

भड्डू 1823 से पहले एक स्वतंत्र पहाड़ी राज्य था। यहाँ के राजे भड़वाल कहलाते थे। उन दिनों मशहूर डोगरी कवि रोमाल सिंह भड़वाल भी वहाँ रहते थे जिनसे मिलने के लिए शिवदत्त उनके घर भी गए।

13. उधमपुर कॉलेज में स्थानांतरण

छुट्टियों के उपरांत कॉलेज खुलने पर शिवदत्त ने कठुआ कॉलेज में पढ़ाना शुरू कर दिया 2 सितंबर को प्राचार्य कोतवाल साहब ने शिवदत्त को अपने कार्यालय में बुलाया और कहा की उनका स्थानांतरण उधमपुर कॉलेज में हो गया है। शिवदत्त बहुत खुश हुए उन्होंने कोतवाल साहब से जाने की अनुमति ली और उधमपुर जाने की तैयारी में लग गए।

5 सितंबर 1980 में शिवदत्त ने ऊधमपुर कॉलेज में अपना कार्य-भार सँभाला। जी. पी. सिंह उधमपुर कॉलेज के प्राचार्य थे जोकि उत्तर प्रदेश से थे। हिन्दी भाषी थे, और हिन्दी पर उनकी काफी अच्छी पकड़ थी। उनके काम करने का तरीका बड़ा ही अलग था। पूरे कॉलेज में न कोई छात्र और न ही कोई शिक्षक उनको कुछ कह सकता था। सभी उनके काम को करने के लिए तैयार रहते थे।

उधमपुर कॉलेज में काफी लोग शिवदत्त की जान-पहचान के थे। ऊधमपुर कॉलेज में छात्रों की संख्या कठुआ से काफी ज्यादा थी। ऊधमपुर कॉलेज के विद्यार्थियों में सैनिक अफसरों के बच्चे भी थे। यहाँ पर कई बड़े और अच्छे स्कूलों के बच्चे भी पढ़ते थे जिसमें कुछ बच्चे सैनिक स्कूल, केंद्रीय स्कूल के साथ-साथ कई अन्य स्थानीय अकादमियों से आए हुए थे। इन

बच्चों की शिक्षा का स्तर बाकी अन्य बच्चों से काफी ऊँचा था। साथ ही ये बच्चे मानसिक, बौद्धिक और शारीरिक स्तर पर काफी विकसित भी थे। कक्षा में ये बच्चे पूरे मन के साथ भाग लेते थे। ऊधमपुर के बच्चों में विवेक अधिक और उड़ंदता की भावना कम थी।

शिवदत्त की कक्षा में छात्रों की संख्या काफी अधिक थी क्योंकि सैनिकों के बच्चे उर्दू और पंजाबी की अपेक्षा हिन्दी पढ़ने में अधिक रुचि रखते थे। शिवदत्त की कक्षा खचाखच भरी होने के बाद भी कक्षा का अनुशासन कभी भी भंग नहीं होता था इसका सबसे प्रमुख कारण यह था की शिवदत्त अपने पाठ को इतने रुचिपूर्ण ढंग से पढ़ाते थे कि छात्रों का ध्यान अपनी कक्षा से क्षण मात्र के लिए भी हट नहीं पाता था। शिवदत्त की कक्षा के छात्र काफी प्रतिभावान थे। उनकी प्रतिभा को निखारने के लिए और कक्षा में प्रतियोगिता को बढ़ावा देने के लिए शिवदत्त ने पुरस्कार का प्रचलन शुरू किया। जो बच्चे अच्छे नंबर लाते थे उन्हें हिंदी दिवस में पुरस्कार दिया जाता था। इस पुरस्कार योजना का फायदा यह हुआ कि शिवदत्त की कक्षा के छात्र हिन्दी विषय में साठ से अस्सी प्रतिशत तक नंबर लाने लगे थे। इससे शिवदत्त को काफी मानसिक संतुष्टि मिलती थी।

शिवदत्त ने इस कॉलेज में सांस्कृतिक, बौद्धिक, और साहित्यिक क्षेत्र में भी छात्रों का मार्गदर्शन किया। जिस कारण छात्र उनका बहुत आदर करते थे और शिवदत्त भी उनपर अपना पूरा स्नेह न्योछावर करते थे।

प्रो. जे. पी. सिंह के पश्चात ठाकुर उदय चन्द्र जी जो कि भदरवा कॉलेज से थे, उन्होंने उधमपुर कॉलेज के प्राचार्य का कार्यभार संभाला। उनका सम्बन्ध शाही वंश से था इस कारण उनमें भी शाही गुण थे। उनका दिल बड़ा विशाल था। वो छोटी-मोटी बातों पर ध्यान नहीं देते थे। वे साफ दिल के और सिद्धांतों वाले अफसर थे। सभी के साथ वह समानता का व्यवहार करते थे। ठाकुर उदयसिंह की सेहत कुछ अच्छी नहीं रहती थी इस कारण उन्होंने अपना स्थानांतरण वापस भदरवा कॉलेज में करा लिया था। उनके स्थान पर प्रो. देवरत्न शास्त्री जी नए प्राचार्य बने पर वो अच्छे प्रशासक नहीं सिद्ध हुए। उनके समय काल में छात्रों में अनुशासन की कमी आ गई

थी। शिक्षक वर्ग भी उनके पक्ष में नहीं था। किसी तरह उन्होंने अपना कार्यकाल पूरा किया।

प्रो. देवरत्न के स्थान पर प्रो. अयूब खान की नियुक्ति हुई। वे एक सुलझे हुए और कुशल प्रशासक थे। उनके आने से कॉलेज के वातावरण में एक नया परिवर्तन आया। उन्होंने पूरे शिक्षक वर्ग पर भी अपनी पकड़ बना ली। यह कहना उचित नहीं होगा कि कठुआ कॉलेज की भांति ही ऊधमपुर कॉलेज में भी शिवदत्त की छवि साफ रही। यहाँ आकर शिवदत्त गुटबंधी में फंस गए जिस कारण उनके काफी विरोधी हो गए थे। एक बार वाद-विवाद प्रतियोगिता में छात्रों के चयन की जिम्मेदारी शिवदत्त को सौंपी गयी तो वे छात्र जिन्हें चयनित नहीं किया गया था वे शिवदत्त के खिलाफ हो गए। कुछ प्रोफेसरों ने प्राचार्य महोदय से शिकायत की कि इनके खिलाफ सख्त कार्यवाही की जाये। प्राचार्य महोदय ने शिवदत्त के चरित्र से संबन्धित पुराने अभिलेखों को मंगवाया जिसमें उनके पुराने कॉलेजों के प्रशस्ति पत्र, तारीफ और राष्ट्रीय सम्मान को देखकर उन्होंने शिवदत्त के खिलाफ कोई भी कार्यवाही नहीं की। उन्होंने भी शिवदत्त को काफी प्रोत्साहन दिया।

शिवदत्त को भी यह एहसास हो गया था कि उधमपुर आकर वे गुटबंदी के चक्कर में फंस गए हैं यह चक्कर बहुत खराब है इसे उन्हें छोड़ देना चाहिए। जो लोग काम करने वाले होते हैं उन्हें कोई भी नजरंदाज नहीं कर सकता है। उनकी छवि अपने आप चमकने लगती है। साथ ही निकम्मे और निठल्ले लोगों की कहीं भी पहुँच नहीं होती है न ही कोई उन्हें पसंद करता है। शिवदत्त ने सोचा कि किसी से द्वेष और बैर करने से कोई लाभ नहीं है उससे अपनी ही छवि धूमिल होती है। इसलिए उन्हें अपने समय और शक्ति का सही उपयोग करना चाहिए। साथ ही सांस्कृतिक और साहित्यिक क्षेत्र में योगदान देना चाहिए।

उधमपुर कॉलेज का पुस्तकालय कठुआ कॉलेज से काफी बड़ा था और उसमें पुस्तकें भी उच्च्च कोटि की थीं। शिवदत ने अपना अधिक से अधिक समय पुस्तकालय में व्यतीत करना शुरू किया और साहित्य साधना में लग गए। जिस समय शिवदत्त कठुआ कॉलेज में थे उन्होंने 'डुग्गर की लोककथाएं'

नामक पुस्तक लिखी थी उधमपुर आने पर इस पुस्तक के लिए उन्हें 22 सौ रुपये कि सब्सिडी भी मिली थी। 1982 में यह पुस्तक छपी थी और 1984 में इस पुस्तक के लिए उन्हें दो हजार रुपये का सर्वश्रेष्ठ पुस्तक पुरस्कार से सम्मानित भी किया गया था। उन्होंने सोचा कि उन्हें कॉलेज की राजनीति से बाहर निकल कर साहित्य साधना के रास्ते पर आगे बढ़ना चाहिए। उधमपुर में कार्य करते हुए उन्होंने तीन पुस्तकों- 'डुग्गर की कहानी', 'डुग्गर के देवस्थान' और 'डोगरी लोक साहित्य'का लेखन कर उन्हें प्रकाशित किया।

शिवदत्त ने देखा कि उधमपुर में शिक्षकों में काफी द्वेष था तथा उनके पास आपस में राजनीति करने के अतिरिक्त किसी को और कोई भी काम नहीं था। उन्होंने वहाँ पर साहित्यिक वातावरण बनाने की पूरी कोशिश की। इसके लिए उन्होंने एक साहित्यिक संस्था के गठन का प्रस्ताव रखा जिसकी मंजूरी उन्हें मिल गयी और उस संस्था का नाम रखा गया 'उधमपुर साहित्य संगम'। इसमें उन्हें लोगों का सहयोग मिला और नित्य प्रति नए साहित्यिक कार्यक्रमों का आयोजन शुरू हो गया। कॉलेज की पत्रिका 'देविका' भी बहुत दिनों से बंद पड़ी थी प्राचार्य जी की अनुमति से इस पत्रिका का पुनः प्रकाशन शुरू हुआ प्रकाशन का काम शिवदत्त को सौंपा गया तो सर्वप्रथम उन्होंने उधमपुर के लेखकों के ऊपर एक लेख छापा। इसका परिणाम यह हुआ कि उधमपुर के वे सोये साहित्यकार जिनका लेखनी से रिश्ता ही छूट गया था उन्होंने कागज कलम उठाकर लिखना शुरू कर दिया। यह स्थानीय स्तर पर एक साहित्यिक चेतना को बढ़ाने में और पुनः जागृत करने में सहायक हुआ।

शिवदत्त को भी लगा कि उधमपुर में नए जागरण की शुरुआत हो गयी है। लोग प्रपंच प्रलाप के अतिरिक्त साहित्य, संस्कृति और धर्म के ऊपर भी चर्चा करने के लिए तैयार हो रहे थे। उन दिनों उधमपुर में कई और धार्मिक सभाओं का आयोजन हुआ जिसमें शिवदत्त को भी शामिल किया गया पर शिवदत्त पर कट्टरपंथिता का कोई भी रंग नहीं चढ़ा।

1980 में माँ आसो देवी के कहने पर शिवदत्त ने अपने गाँव के साथियों के सहयोग से पैंथल ग्राम में एक महाकाली के मंदिर का निर्माण कार्य शुरू

किया था। बड़ी मुश्किलों के बाद देवी माँ की कृपा से 1984 में चार साल के उपरांत मंदिर का निर्माण कार्य पूरा हुआ। उधमपुर में नौकरी के समय शिवदत्त का निवास स्थान उधमपुर ही था। पिता सावन मल भी उन दिनों जम्मू में रहते थे और पैंथल वे आते जाते रहते थे। शिवदत्त की माली हालत उन दिनों बहुत अच्छी नहीं थी। घर का गुजारा मुश्किल से चलता था। इस कारण कभी-कभी वो इंद्रजीत मल्होत्रा के लिए कुछ किताबें भी लिख लेते थे जिससे कुछ आर्थिक बोझ कम होता था।

14. पिता का देहांत

1983 में पिता सावन मल की तबीयत खराब होने के कारण शिवदत्त उन्हें पैंथल से उधमपुर ले आए। डाक्टरी इलाज से उनकी सेहत में सुधार तो हुआ पर डाक्टर ने शिवदत्त को यह भी बताया कि अब उनके जीवन के थोड़े ही दिन बचे हैं। 1984 में गर्मियों की छुट्टी में शिवदत्त पिताजी को लेकर पैंथल आ गए। सावन मल की सेहत ठीक न होने पर भी वो ईश्वर की पूजा-पाठ में लगे रहते थे। एक दिन उन्होंने शिवदत्त को अपने पास बुलाकर कहा कि गुरु महाराज की कृपा से मैंने अपना सारा जीवन राधा कृष्ण की भक्ति में गुजार दिया पर मुझे लगता है कि तुम्हारी आस्था अवतारवाद में नहीं है। तुम शिव का नाम लेकर शिवलिंग पर रोज जल चढ़ाया करो। तुम्हारे लिए इतना ही काफी है। मेरी इस बात को ही मेरी वसीयत समझना। अगस्त का महीना था। सारा दिन सावन मल सबसे बात करते रहे और उसी रात वो बीमार पड़े तो अपनी पुत्री से बोले की मुझे भगवान राम के दर्शन हुए। इतना कहकर उन्होंने दो-तीन बार सांस ली और फिर शरीर छोड़ दिया। उनके जाने से पूरे घर में एक सन्नाटा सा ही व्याप्त हो गया था। शिवदत्त को हर तरफ काफी खालीपन सा प्रतीत होने लगा था। उनका मन घर में कहीं लगता ही नहीं था। कुछ दिनों बाद अपनी छोटी पुत्री अलका को माँ के पास छोड़कर शिवदत्त पत्नी और बच्चों को साथ लेकर उधमपुर नौकरी पर लौट गए।

पिता के जाने के पश्चात शिवदत्त ने देखा कि माँ भी बुझी-बुझी सी रहने लगी थी। कभी सामने तो कभी छिप-छिप कर रोती रहती थीं। उनके

चेहरे की रौनक ही गायब हो गई थी। 1984 के बाद शिवदत्त का उधमपुर से पैंथल आना जाना लगा रहा था।

1984 के बाद शिवदत्त की माली हालत बहुत ही अधिक खराब थी। एक तो पिता के जाने के बाद दो-दो घरों की जिम्मेदारी और फिर बच्चों का बड़ी कक्षाओं में जाने के कारण किताबों-कापियों के भी बड़े खर्चे थे। पैसे भी शिवदत्त के पास नहीं होते थे। पैसों की कमी के कारण शिवदत्त बड़े ही दु:खी रहते थे। किसी तरह गुजारा चल रहा था। तभी आशा की एक किरण दिखाई दी 1980 में जब शिवदत्त शेख मुहम्मद अब्दुल्ला से पुरुस्कार लेने गए थे तो एक दरख्वास्त वेतनमान सुरक्षा के लिए भी दे आए थे। शिवदत्त का वेतनमान सुरक्षित हो गया था। वेतन बढ़ने के साथ-साथ 14 हजार रुपये की रकम बकाया राशि के रूप में भी मिली। वेतन बढ्ने से पारिवारिक दशा में कुछ सुधार हुआ।

उन दिनों उधमपुर में नयी-नयी हाउसिंग कालोनी बन रही थी। सामाजिक योगदान और शिक्षा में किए गये कार्यों को देखते हुए स्थानीय एम.एल.ए. की संस्तुति से हाउसिंग बोर्ड ने नियमत: एक प्लॉट शिवद्त्त के नाम एलाट कर दिया था। शिवदत्त ने 14 हजार रुपये देकर अदालत से अपने नाम डीड भी करा ली थी। साथ ही ऊधमपुर में रहने का मन भी बना लिया था और नए घर के सपने भी बुनने लगे थे।

पर नियति को शायद यह मंजूर नहीं था। 1985 में पैंथल में बहुत बरसात होने के कारण गाँव के घर की बाहरी दीवार गिर गयी जिसके कारण गाँव के सारे जानवर घर के अंदर घुसने लगे थे। माँ बहुत परेशान हो गई थी शिवदत्त घर पहुंचे तो घर की हालत देखकर घबरा गए। माँ बोली पहले पैंथल का घर देखो फिर उधमपुर के घर के बारे में सोचना। शिवदत्त उधमपुर के घर के बारे में सोचना भूल कर पैंथल के घर को सही करने में लग गए इसके कारण उनके पास जो भी जमाँ पूंजी थी वो समाप्त हो गयी।

पिता के स्वर्गवास के बाद एक दुखद घटना और घटी शिवदत्त की बहन शांति के पति अचानक ही बीमार पड़े डाक्टरों की जल्दबाजी से आपरेशन असफल होने से 31 जुलाई 1985 में उनका स्वर्गवास हो गया।

माँ यह सदमा बर्दाश्त नहीं कर पायी। उन्होंने भी चारपाई पकड़ ली और बीमार रहने लगीं। 1985 में बड़ी बेटी ने ग्रेजुएशन और बेटे ने टी.डी.सी. की परीक्षा उत्तीर्ण की। परिवार की स्थित की वजह से शिवदत्त ने अपने विभाग को अवगत कराया। उन लोगों की कृपा से शिवदत्त का स्थानांतरण जम्मू के एम. ए. एम. कॉलेज में हो गया।

24 अक्तूबर 1986 में शिवदत्त ने मौलाना अब्दुल कलाम आजाद कॉलेज जम्मू में कार्यभार संभाला। इस कॉलेज के प्राचार्य उस समय प्रो. राजेंद्र सिंह डडवाल थे उनका काम करने का अंदाज अनोखा ही था। इस कारण न तो वे ही खुश रहते थे और न ही उनके साथ काम करने वाले शिक्षक। शिवदत्त को लगता था कि वो कॉलेज में कोई चमत्कार करना चाहते थे जिसमें कोई उनका सहयोग नहीं कर रहा था। इस कारण वो अपना मकसद पूरा नहीं कर पा रहे थे। यह भी हो सकता था कॉलेज के कुछ शिक्षक बहुत सीनियर थे इस कारण भी वो उनसे काम नहीं करवा पा रहे थे।

इस कॉलेज के कुछ शिक्षक शिवदत्त के पुरानी जान-पहचान के भी थे। जिनमें से एक डोगरी के लेखक मदन मोहन शर्मा थे। इनके डोगरी उपन्यास और कहानियों का संकलन एक के बाद एक छपता रहता था। जिस समय शिवदत्त जम्मू कॉलेज में थे उन दिनों भी उनकी दो किताबें 'बर्फ' और 'अंबर छूए धरत नमानी' छपीं थीं, परंतु 'मच्छी: जाल मछेरे' के लिए उन्हें सब्सिडी नहीं मिलने के कारण वो बहुत दुःखी थे। सांस्कृतिक अकादमी ने शिवदत्त की कई पांडुलिपियाँ अस्वीकार कर दी थी। पहले शिवदत्त को लगा कि वो गाँव से आए थे इस कारण उनकी प्रतियों को अस्वीकार कर दिया जाता है। बाद में पता चला कि कला और संस्कृति अकादमी के अपने कई मानक हैं। बड़े- बड़े लेखकों की प्रतियाँ भी अस्वीकार हो जाती है। इससे उनके अंदर का दर्द कुछ कम हो गया। साथ ही उन्होंने नए जोश के साथ काम करना शुरू कर दिया। शिवदत्त ने मदन मोहन शर्मा से भी राय ली कि उन्हें शहरी रहन-सहन, आचार-व्यवहार की कोई जानकारी नहीं है इसलिए वे उनका मार्गदर्शन करें कि उन्हें किस-किस से बचना चाहिए, किसके पास जाना चाहिए और किससे दूर रहना चाहिए। मदन

मोहन शर्मा जी शिवदत्त की सादगी से बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने कहा- स्वाभाविक रहो, सावधान रहो, सुरक्षित रहो और संस्कारित रहो। यही कहीं भी किसी भी परिवेश में रहने का उत्तम तरीका है। शर्मा जी ने शिवदत्त को अपने अध्ययन और लेखन पर ध्यान रखने को कहा। उनकी सलाह को शिवदत्त ने गांठ बाँध लिया। जम्मू निवास के दौरान शिवदत्त ने पूरी कोशिश की कि वे न तो किसी के ज्यादा पास ही जाएँ और ना हीं किसी से दूर रहें। इस कॉलेज में पढ़ाई और अध्ययन का काम बड़े ही अच्छी तरह से चलता था शिक्षकों के बीच में कोई गुटबंदी नहीं थी। सब अपना काम बड़े ढंग से करते थे।

शिवदत्त की कक्षा में छात्रों की संख्या बहुत ज्यादा थी। छात्र पढ़ने में रुचि रखते थे परन्तु उनका उच्चारण बड़ा ही दोषपूर्ण था और उनके लेखन में भी बहुत गलतियाँ होतीं थीं। उनकी इस कमजोरी को समझकर शिवदत्त ने गद्य पढ़ाते समय उनके उच्चारण को सुधारने का बड़ा प्रयास किया परंतु डोगरी भाषा का असर फिर भी उन पर बना रहा। बड़े सारे विद्यार्थी महाप्राण की ध्वनि का उच्चारण अल्पप्राण के साथ करते थे। शिवदत्त ने उनके उच्चारण की शुद्धि के लिए बड़ा प्रयास किया। कभी कविता पाठ कराया, कभी अलंकारों का ज्ञान दिया, कभी वाचन की विधियों का आदर्श पाठ पढ़ाया। विद्यार्थियों के लेखन को शुद्ध करने के लिए वे उन्हें बीच-बीच में व्याकरण के नियम भी पढ़ाते थे। शिवदत्त की उम्मीद के विपरीत छात्रों ने भाषा सीखने में बड़ी रुचि दिखाई वे बिना नागा किए प्रतिदिन कक्षा में आते थे। उनके इस जोश को देखकर शिवदत्त को भी उन्हें पढ़ाने में बड़ा ही आनंद आता था।

मौलाना अब्दुल कलाम आजाद कॉलेज का पुस्तकालय बड़ा ही अच्छा था यहाँ पर हर विषय की किताबें थी। सर टाड की पुस्तक 'राजस्थान का इतिहास' का हिन्दी अनुवाद शिवदत्त को इसी पुस्तकालय में पढ़ने को मिला था। यहाँ पर शिवदत्त ने इतिहास, लोकसाहित्य, दर्शन, तर्कसाहित्य तथा समाजशास्त्र से संबन्धित कई किताबें पढ़ीं। शिवदत्त को इस कॉलेज में एक ही कमी खली कि यहाँ के शिक्षक आपस में बौद्धिक वार्ता नहीं करते थे।

साथ ही एक अच्छी बात जो यहाँ उन्हें देखने को मिले थी कि यहाँ के शिक्षक कभी किसी की बुराई या चुगली नहीं करते थे।

कॉलेज में आने के छह माह में ही एक अप्रैल 1987 को शिवदत्त की नियुक्ति जम्मू विश्वविद्यालय के डोगरी विभाग में एक अल्पकालिक शिक्षक के रूप में हो गयी। शिवदत्त के लिए यह बहुत बड़ी उपलब्धि थी। शिवदत्त ने अपने रोजगार का प्रारम्भ एक प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक के रूप में किया था फिर धीमें-धीमें प्रयास करते हुए वे डिग्री कॉलेज के शिक्षक बने परंतु उनके मन में एक दबी इच्छा रह गई थी कि उन्हें विश्वविद्यालय में पढ़ाने का अवसर मिले। उनकी इच्छा शायद ईश्वर ने सुन ली थी इसलिए ही उन्हें डोगरी विभाग में अल्पकालिक शिक्षक के रूप में पढ़ाने का अवसर मिल गया था। शिवदत्त को इस बात की बड़ी खुशी थी। विभाग में जाकर प्रतिदिन वे दो कक्षाएं लेते थे। विश्वविद्यालय में जाने से उनकी वहाँ के शिक्षकों और ज्ञानविदों से अच्छी जान पहचान हो गई थी। उसी वर्ष ही दूरस्थ शिक्षा विभाग में उनकी नियुक्ति एम.ए. हिन्दी के विद्यार्थियों को पढ़ाने के लिए कर दी गयी थी। इससे शिवदत्त को बड़ा उत्साह मिला एवं उनकी आर्थिक दशा में भी सुधार हुआ तथा जान-पहचान का दायरा भी बढ़ा।

शिवदत्त ने जम्मू रहते हुए अपने बच्चों को भी जम्मू के ही विश्वविद्यालय और विद्यालयों में प्रवेश दिलवा दिया था। उन्होंने रहने के लिए चाँद नगर में घर किराये पर ले लिया था जहां से बच्चों का कॉलेज भी पास ही था और ललित कला केंद्र का कार्यालय भी पास ही था जो कि शिवदत्त के लिए भी अच्छा था। ललित कला केंद्र में जाने से शिवदत्त को बहुत लाभ मिला था। डुग्गर के लोकनृत्य तथा उनकी शैलियों का ज्ञान भी अकादमी में जाने से हुआ। उन्होंने डुग्गर के वाद्य यंत्रों के केवल नाम ही सुने थे परंतु उन्हें यहाँ पर मूर्त रूप में देखने का अवसर मिला था। अलग-अलग प्रकार के लोकगीतों को सुनने का अवसर भी मिला। चित्र प्रदर्शनियों को देखने, चित्रकारों से मुलाकात करने से उनकी चित्रकला के प्रति जानकारी भी बढ़ी।

मौलाना अब्दुल कलाम आजाद कॉलेज में काम करते हुए शिवदत्त को कोई एक वर्ष दो महीने ही हुये थे कि उनकी बदली गवनमेंट कॉलेज ऑफ

एजुकेशन जम्मू कर दी गयी क्योंकि वहाँ पर एम. ए. हिन्दी के शिक्षक के साथ ही बी. एड. के शिक्षक की भी आवश्यकता थी और शिवदत्त ने बी. एड. किया हुआ था। इस कारण उन्हें वहाँ जाना पड़ा।

15. शोध साधना

1 दिसंबर 1987 में शिवदत ने सरकारी कॉलेज ऑफ एजुकेशन में अपना कार्य भार संभाला। बी. एड. कॉलेज बहुत ही छोटा कॉलेज था, जिसके परिसर को देखकर यह प्रतीत होता था कि वहाँ पहले कोई स्कूल रहा होगा।

बी.एड. कॉलेज में शिवदत्त को हिन्दी विषय पढ़ाना होता था। उनकी कक्षा में मात्र 30 छात्र थे इस कारण कठुआ, ऊधमपुर और एम.ए.एम. की तरह यहाँ शिवदत्त के ऊपर कोई भार नहीं था। एक पीरियड पढ़ाने के बाद वे सारा दिन खाली ही रहते थे। अपने को व्यस्त रखने के लिए उन्होंने साहित्यिक संस्थाओं और संगठनों में जाना शुरू कर दिया।

इन्होंने 'युवा हिन्दी लेखक संघ' संस्था के कई सम्मेलनों में हिस्सा लिया। विद्वानों के शोध पत्र सुने जिससे उन्हें हिन्दी की एक-एक विधा की जानकारी मिली। उनके अंदर आलोचनात्मक दृष्टिकोण विकसित होने लगा। इससे उनमें समीक्षा करने की शक्ति आई और उन्होंने 'शीराजा डोगरी' के लिए कुछ किताबों की समीक्षा भी लिखी।

हिन्दी की एक दूसरी संस्था थी जिसका नाम 'हिन्दी साहित्य मंडल' था। इस संस्था ने 1987 में राष्ट्रीय कवि 'मैथली शरण गुप्त' के ऊपर एक राष्ट्रीय स्तर का सम्मेलन आयोजित किया जिसकी अध्यक्षता गवर्नर जगमोहन जी ने की। इस सम्मेलन में ही शिवदत्त की पुस्तक 'डोगरा गाँव पैंथल' का विमोचन माननीय गवर्नर महोदय ने किया था। यह शिवदत्त के लिए एक बड़ा पल था। विद्वान और कर्मठ जगमोहन जी ने विमोचन करते हुए शिवदत्त कि प्रशंसा करते हुए कहा कि उन्हें स्थानीय संस्कृति और साहित्य पर विस्तृत कार्य करना चाहिए। यह शिवदत्त के लिए प्रेरणात्मक पल था।

हिन्दी के अतिरिक्त जम्मू में डोगरी से जुड़ी संस्था भी थी। डोगरी संस्था में कोई भी सम्मेलन होता तो शिवदत्त उसमें अवश्य ही सम्मिलित

होते थे। इस संस्था का गठन 1944 में हुआ था 1963 में श्री नरेंद्र खजूरिया जो इसके अध्यक्ष थे उन्होंने शिवदत्त को इस संस्था का सदस्य बनाया था पर तब शिवदत्त कभी-कभी ही इस संस्था में जाते थे। 1986 में शिवदत्त ने इस संस्था में जाना पुनः शुरू किया। जम्मू में रहते हुए शिवदत्त की जान पहचान कुछ डोगरी लेखकों से भी हुई थी जिससे डोगरी में कौन सा नया साहित्य लिखा गया और कौन सा छपा इसकी भी जानकारी भी उन्हें मिलती रही।

डोगरी से जुड़ा एक विभाग जम्मू विश्वविद्यालय में भी था जो कि आज भी है। यहां पर कई राष्ट्रीय स्तर की कार्यशालाएं आयोजित होती रहती थी। 18 दिसंबर 1982 से 4 जनवरी 1983 तक वहाँ पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया था जिसमें शिवदत्त को भी बुलाया गया था। यह कार्यशाला भाषा तथा व्याकरण पर थी। इस कार्यशाला में सम्मिलित होने का सबसे बड़ा लाभ शिवदत्त को यह हुआ कि उनका भाषायी ज्ञान बढ़ा। साथ ही शिवदत्त ने 'डुग्गर का भाषायी परिचय' नामक जो पुस्तक लिखी उसकी प्रेरणा का स्रोत यह कार्यशाला ही थी। शिवदत्त की यह पुस्तक 1992 में जालंधर से प्रकाशित हुई थी।

डोगरी विभाग ने लोकसाहित्य पर भी गोष्ठियाँ कारवाई। शिवदत्त इन गोष्ठियों में भी शामिल होते थे। शिवदत्त का लोकसाहित्य पर जितना भी काम है उसका श्रेय इन गोष्ठियों को ही जाता है। जम्मू विश्वविद्यालय का हिन्दी विभाग भी समय-समय पर गोष्ठियों का आयोजन करता रहता था। इनमे भाग लेने वाले विद्वानों के शोधपत्रों और परिचर्चाओं को सुनकर शिवदत्त को लगा कि उनके अंदर जो खोजी मन था वो जागने लगा है और उन्हें कोई और ही बड़ा काम करना है। उन्होंने गाँव-गाँव, जगह-जगह घूमना शुरू कर दिया। जब वे बाहर निकले तो पता चला कि वे अकेले ही नहीं थे। बहुत से लोग थे जो इस दौड़ में और साहित्य के काम में लगे हुए थे। जम्मू के इतिहास में एक नयी चेतना का युग शुरू हो गया था। डुग्गर के इतिहास, संस्कृति, परम्पराओं आदि पर काम बड़े जोरों शोरों से चल रहा

था। शिवदत्त की रुचि इतिहास और संस्कृति में थी। लोकसाहित्य पर उनकी दो पुस्तके प्रकाशित हो चुकीं थीं।

शिवदत्त ने अपने मन में विचार बनाया कि उन्हें डुग्गर की संस्कृति पर कुछ काम करना चाहिए। बी.एड. कॉलेज में उनके पास खास काम नहीं था। छात्रों के साथ परिचर्चा संवाद आदि करने से उनके पास पूरे जम्मू क्षेत्र की जानकारी उपलब्ध थी। चूंकि उनका लालन-पालन डुग्गर के एक सांस्कृतिक ग्राम में हुआ था इस कारण उनके लिए डुग्गर संस्कृति पर लिखना कोई मुश्किल काम नहीं था। उन्होंने भारत की प्रादेशिक संस्कृति के ऊपर भी कई किताबें पढ़ीं थीं जिसमें पद्मचन्द्र कश्यप की पुस्तक 'हिमाचल इतिहास और संस्कृति' ने उन पर काफी प्रभाव डाला था। 1988 में उन्होंने इस पुस्तक से प्रभावित होकर 'डुग्गर की संस्कृति' नामक पुस्तक की रचना की।

जम्मू में रहते हुए शिवदत्त को 'हिमाचल के देवी-देवता' नामक पुस्तक को भी पढ़ने का अवसर मिला। इस पुस्तक को पढ़ने के बाद शिवदत्त ने एक नयी पुस्तक की रचना प्रारभ की जिसका नाम रखा 'डुग्गर के लोक देवता'। इस पुस्तक की रचना करने हेतु सामाग्री इकट्ठी करने के लिए शिवदत्त ने गाँव-गाँव और मुहल्ले-मुहल्ले की यात्रा कर वहाँ वास किया। साथ ही कई दर्जनों धार्मिक, पौराणिक और सांस्कृतिक किताबों का अध्ययन किया। शिवदत्त की इस पुस्तक का प्रकाशन 1997 में हुआ। 'डुग्गर के लोक देवता' किताब की रचना के दौरान शिवदत्त को कई अजीबो गरीब रहस्य भरे अनुभव भी प्राप्त हुए। पैंथल से कुछ दूर डडूरा गाँव में एक शिव जी का मंदिर था। जिस दिन वहाँ पर यात्रा थी शिवदत्त भी वहाँ पर दर्शन के लिए गए तो उन्होंने देखा कि यात्रा के दौरान लोग आग पर नाच कूद रहे थे। शिवदत्त भी उस आग में कूद गए और नाचने लगे। अंगारों की तपिश इतनी थी कि जितनी सही जा सके। उसकी सेक शिवदत्त को बड़ी ही मीठी लगी। शिवदत्त ने आग की गर्मी को किस प्रकार ठंठा रखा जा सकता है यह विद्या जानने की बड़ी कोशिश की पर उन लोगों ने शिवदत्त को नहीं बताई। यह विद्या शिवदत्त के लिए आज भी रहस्य है। जम्मू में रहते हुये शिवदत्त नें एक और पुस्तक की रचना की जिसका नाम था 'डुग्गर के

अमर सेनानी'। इस पुस्तक का प्रकाशन 1992 में हुआ था। इस पुस्तक के दो संस्करण प्रकाशित हुए थे तथा स्कूलों में इस पुस्तक की बड़ी मांग थी।

बी. एड. कॉलेज में भी शिवदत्त का अधिकांश समय पुस्तकालय में ही बीतता था। वे वहाँ पर जो भी पुस्तकें पढ़ते थे उनमें ज्यादातर 'परा मनोविज्ञान' पर आधारित होती थीं ललित कला केंद्र की डोगरी समिति के लिए सरकार ने शिवदत्त का नाम चयनित किया था इस कारण उस संस्था में भी शिवदत्त का आना जाना बढ़ गया था। अकादमी के कई प्रकाशन थे और उनमें कवितायें भी छपती थीं। शीराजा डोगरी के संपादक ओम गोस्वामी और हिन्दी के संपादक रमेश मेहता थे। उन दिनों शीराजा का बड़ा नाम हुआ करता था। जिस प्रकार महावीर प्रसाद द्विवेदी' ने 'सरस्वती' पत्रिका का स्तर ऊँचा उठाया था वही काम ओम गोस्वामी जी ने शीराजा के लिए किया था। उन दिनों शीराजा डोगरी में लेख छपाना बड़े ही गर्व की बात थी। गोस्वामी जी ने शिवदत्त के छह लेख जब शीराजा डोगरी में छापे तो उनका नाम भी डोगरी लेखकों की श्रेणी में आ गया।

गोस्वामी जी के बाद शिवराम 'दीप' शीराजा के संपादक बने तो उन्होंने भी शिवदत्त के एक के बाद एक कई लेख शीराजा में छापे। जिससे शिवदत्त का हौसला बढ़ा और उन्होंने और भी कई लेख डोगरी में लिखे जो अन्य पत्र-पत्रिकाओं और शोध ग्रन्थों में भी प्रकाशित हुए।

जम्मू रहते हुए शिवदत्त को घूमने-फिरने तथा परिचर्चाओं में हिस्सा लेने के कई अवसर मिले। कई प्रदेशों में जाने का मौका भी मिला। जिसके सकारात्मक परिणाम रहे।

3

सेवा निवृत्ति से शोधावृत्ति

30 अप्रैल 1995 में शिवदत्त अपने शैक्षणिक कार्य-भार से मुक्त हो गए। सेवा निवृत्त होने के बाद शिवदत्त ने अपना निवास स्थान जम्मू में बनाया। शिवदत्त का छोटा पुत्र विशालाक्ष भी आई. टी. आई. करके उनके साथ रहने के लिए जम्मू आ गया था। वह वहाँ ट्रांसफार्मर बनाने का काम सीखता था। दोनों लोग मिलकर चाँद नगर जम्मू के अपने पुराने निवास स्थान पर रहने लगे।

जम्मू रहते हुए शिवदत्त की डोगरा कॉलेज में एक अल्पकालिक हिन्दी शिक्षक के रूप में नियुक्ति हो गई। कॉलेज से जो पैसे मिलते थे उससे उनका गुजारा बड़े आराम से हो जाता था।

जम्मू निवास के दौरान उन्होंने स्वामी योगानन्द जी से योग का प्रशिक्षण लेना प्रारम्भ कर दिया था। वहाँ कभी-कभी वे अपने पुत्र को भी ले जाये थे। योग का अभ्यास उन्होंने तीन महीने तक किया, जिससे उन्हें बड़ा शारीरिक लाभ हुआ तथा तनाव से भी मुक्ति मिली। योग के अतिरिक्त शिवदत्त को सैर का भी शौक था वह प्रातः काल बिना किसी रुकावट के प्रतिदिन सैर के लिए जाते थे। शाम की सैर भी उन्हें पसंद थी क्योंकि इस समय साथियों से मिलना, गप्पें मारना, हँसना और चुट्कुले सुनने-सुनाने से दिन भर की थकान दूर हो जाती थी। शिवदत्त को प्रायः संगीत सुनना बहुत पसंद था और सोते समय वह आल इंडिया रेडियो पर गजलें सुनते-सुनते सोते थे।

शिवदत्त प्रारम्भ में फिल्में देखने के बड़े शौकीन थे। उपन्यास और कहानियां पढ़ने में भी उनकी रुचि थी परंतु शोध के क्षेत्र में आने के

पश्चात उनकी ये रुचियाँ धीरे-धीरे कम होती गईं और इतिहास, पुरातत्व विज्ञान, समाज शास्त्र, दर्शन और भाषा-विज्ञान में उनकी रुचि बढ़ती चली गई।

खाने-पीने का उन्हें कोई विशेष शौक नहीं था। वे सादा भोजन ही खाते थे। शिवदत्त मांस-मंदिरा आदि से कोसों दूर रहे।

जम्मू में रहते हुए शिवदत्त के लेखन कार्य ने गति पकड़ी और उन्होंने डुग्गर के इतिहास की सामाग्री को एकत्र करके उसके लिए आर्थिक मदद हेतु जम्मू कला एवं संस्कृति अकादमी भेजा तथा डुग्गर के इतिहास को लिखते समय उन्हें जो दँत कथाएँ मिलीं उन्हें अलग करके मल्होत्रा ब्रदर्स को भेजा। शिवदत्त की 'दंतकथाएं' पुस्तक 1997 में प्रकाशित हुयी और 'डुग्गर का इतिहास' 1998 में प्रकाशित हुआ। इस पुस्तक हेतु उन्हें अकादमी से कुछ सब्सिडी भी मिली थी।

डोगरा कॉलेज में शिवदत्त ने कोई एक वर्ष पढ़ाया। फिर झोला, कैमरा और डायरी लेकर नयी खोज के लिए निकल पड़े। इस बार उनकी खोज का उद्देश्य डुग्गर के प्राचीन किलों की खोज करना, मंदिरों का सर्वेक्षण करना और प्राचीन गुफाओं की तलाश करना था। इसके लिए भूख प्यास की चिंता किए बगैर वे पूरे डुग्गर प्रदेश में घूमें। कई बार उन्हें खाली पेट सिर्फ पानी पीकर ही गुजारा करना पड़ता था। ऐसा नहीं था कि उन्हें किसी ने खाने पीने के लिए नहीं पूछा किन्तु वे सोचते थे कि यदि वे भोजन करने के लिए रुकेंगे तो उनका 1-2 घंटे का समय व्यर्थ ही नष्ट हो जाएगा। वे दिन रात नयी खोज की तलाश में भटकते रहते थे। जिस दिन उन्हें कोई मंदिर, या पुराना किला अथवा गुफा मिल जाती उस दिन को वह बहुत बड़ी उपलब्धि मानते थे। 1996-1997 में शिवदत्त की पुस्तके- 'डुग्गर के दुर्ग', 'डुग्गर के मंदिर' और 'डुग्गर के गुफा मंदिर' के नाम से प्रकाशित हुयीं।

1998 में शिवदत्त की 'डुग्गर के लोकगीत' नामक पुस्तक छपी इस किताब ले लिए शिवदत्त को कल्चरल अकादमी से आर्थिक मदद भी मिली थी। उल्लेखनीय है कि विवाह समारोह में शिवदत्त के द्वारा एकत्रित किए गए लोक गीतों ने लोगों का मन मोह लिया। बच्चों का विवाह समारोह,

डुग्गर संस्कृति की सादगी में रचा बसा एक सांस्कृतिक कार्यक्रम ही लगता था। समारोह में भी शिवदत्त की जनगोष्ठियाँ ही चलती रहती थीं। शिवदत्त मुख्य मेजबान थे। जिज्ञासु चर्चाओं के दौर में अन्य लोगों को भोजन इत्यादि के बारे में याद दिलाना पड़ता था। विवाह की रस्में, सदाचार तथा आपसी संस्कार शिवदत्त को अपनी जिज्ञासु प्रवृत्ति के शोधमय विषय से प्रतीत हो रहे थे। साथ ही साथ पारिवारिक दायित्वों से मुक्त होने का आत्मसुख भी था। परंतु छोटे बेटे का किसी सुनिश्चित रोजगार में न होना चिंता जनक भी था, इससे उनपर वित्तीय भार भी था। पारिवारिक कार्यक्रमों की वजह से शोध कार्य भी बाधित रहा। शोध कार्य तथा यात्राएं जमापूंजी से ही सम्पन्न होती थीं।

17 अप्रैल 1998 में शिवदत्त की छोटी बेटी का विवाह सम्पन्न हुआ। लड़के वाले तलाब तिल्लो के रहने वाले थे जहां पर शिवदत्त का ससुराल था। शिवदत्त ने अपनी पुत्री का विवाह अपने ससुराल से ही किया। इस विवाह के लिए शिवदत्त के साले ने उनकी बहुत मदद की। छोटी पुत्री के विवाह के कुछ ही दिनों के उपरांत 16 मई 1998 में शिवदत्त ने अपने बड़े बेटे नलीनाक्ष का विवाह मोनिका बाली से बड़ी सादगी के साथ किया। विवाह में शिवदत्त ने कोई दिखावा नहीं किया। पुत्र और पुत्री दोनों के विवाह में उन्होंने न तो दहेज लिया और न ही दिया इस कारण उनके ऊपर कोई भी आर्थिक भार भी नहीं पड़ा। हाँ एक ही महीने में दो बड़े काम होने के कारण भाग दौड़ काफी रही।

शिवदत्त का छोटा बेटा विशालाक्ष जम्मू में पद्मिनी कंपनी में सर्विस इंजीनियर था। फारुख सरकार ने जब दूसरी बार कश्मीर के शासन की बागडोर संभाली तो नौजवानों के लिए नौकरियाँ निकालीं। बिजली विभाग में भी नियुक्तियाँ हुईं। विशालाक्ष ने आई. टी. आई. किया हुआ था। चयन कमेटी ने उसे भी चुन भी लिया और 21 अप्रैल 1998 में उसने उधमपुर बिजली विभाग में अपने कार्य-भार को सँभाला। यह शिवदत्त के लिए एक निश्चिंत करने वाला क्षण था। अब वह पारिवारिक दायित्वों से मुक्त होने जैसा महसूस कर रहे थे।

1997-98 में एक और घटना घटित हुई। उधमपुर में 'शिवालिक कॉलेज ऑफ एजुकेशन' खुला। इस कॉलेज को हैप्पी फाउंडेशन के मालिक ने खोला था। उनके कॉलेज के लिए एक सेवा निवृत्त कॉलेज शिक्षक की आवश्यकता थी। इसके लिए उन्हें शिवदत्त से उपयुक्त कोई नहीं लगा। उन्होंने शिवदत्त से प्रार्थना की कि वे इस कॉलेज के प्राचार्य के पद को संभाल लें और उन्हें मार्गदर्शन प्रदान करें जिसे शिवदत्त ने सहर्ष स्वीकार कर लिया। शिवदत्त ने वहाँ कोई एक वर्ष कार्य किया। फिर अपने सामान को उठाया और नयी खोज की तलाश में निकल पड़े। इस कॉलेज में शिवदत्त को पढ़ाने का सबसे बड़ा लाभ यह हुआ कि यहाँ से प्राप्त पारिश्रमिक से शिवदत्त की अब तक की जो अप्रकाशित पुस्तकें थीं वो यहाँ आने के पश्चात प्रकाशित हो गईं।

इसी समय शिवदत्त ने 'शिवालिक प्रकाशन' के नाम से अपना एक प्रकाशन भी खोला। इस प्रकाशन का उद्देश्य, डुग्गर के इतिहास और संस्कृति विषय पर पुस्तकें छापना और फिर उन पुस्तकों को लोगों में मुफ्त में बांटना था। शिवदत्त को इस प्रकार मुफ्त पुस्तकें बाँटने में सुख का अनुभव होता था। ऐसी खुशी तो उन्हें अपनी प्रकाशित पुस्तकों के पुरस्कृत होने पर भी नहीं होती थी।

1998 में शिवदत्त ने एक यात्रा और की। यह यात्रा साहित्य अकादमी दिल्ली की थी। साहित्य अकादमी दिल्ली ने उन्हें डोगरी पुस्तकों को इनाम देने के लिए जूरी के सदस्य के रूप में नामांकित किया था। इस बैठक में शामिल होने के लिए शिवदत्त अपनी पत्नी के साथ कटरा से 26 दिसंबर को बस से निकले। किन्तु दिसंबर की कड़ाके की ठंड और कुहरे की वजह से चालक बस को नियत समय पर दिल्ली नहीं पहुंचा पाया था। शिवदत्त ने साहित्य अकादमी पहुंचकर वहाँ सचिव से भेंट की। उन्हें पता चला कि और भी लोग बैठक में उपस्थित नहीं हो पाये। इस कारण उस वर्ष डोगरी में किसी को भी पुरस्कार नहीं मिल पाया।

साहित्य अकादमी से निकलकर शिवदत्त ने लालकिला, चाँदनीचौक के साथ और भी कई स्थानों को देखा। उनकी पत्नी की इच्छा मथुरा बृंदावन

जाने की थी इसलिए वे बस द्वारा मथुरा गए वहाँ पर मथुरा बृंदावन के मंदिरों के दर्शन करके आगरा पहुंचे। आगरा में ताजमहल देखकर, जयपुर घूमते हुए अजमेर से पुष्करराज के दर्शन करते हुए वापसी में सूफी फकीर चिश्ती की जियारत गाह, झील से शहर की मनोरम सुंदरता का आनंद लिया फिर चित्तौढ़गढ़ का ऐतिहासिक किला देखकर वापस जम्मू लौट आए। जीवन के इस पड़ाव में डुग्गर राज्य के अलावा अन्य स्थानों से भी शिव निर्मोही जी का साक्षात्कार हुआ। हर स्थान को नजदीक से जानने की कोशिश ने उन्हें कई-कई दिनों तक एक ही स्थान पर रोका। धर्म पत्नी जब दूसरे स्थान पर चलने के लिए सामान बाँध रही होती तो शिवदत्त लेखन दर्शन हेतु बैठ जाते। इस यात्रा के अनुभव की नवीनता के साथ-साथ इन्होंने तीन पुस्तकें भी तैयार कर लीं थीं।

1999 में शिवदत्त के पास 'डुग्गर के मंदिर', 'पाडर : लोक और संस्कृति' तथा 'डुग्गर के शिलालेख' पुस्तकें प्रकाशन के लिए तैयार थी। इन पुस्तकों को प्रकाशित करवाने हेतु शिवदत्त के पास पर्याप्त धन नहीं था। अधिक पैसा तो दर्शन और पर्यटन में खर्च हो गया था। पैसों के लिए शिवदत्त ने एक बार पुनः शिवालिक कॉलेज ऑफ एजुकेशन के प्राचार्य के पद भार को संभाला।

1. शिक्षा संबंधी विचार

शिवदत्त दूसरी बार जब शिवालिक कॉलेज के प्रिंसिपल बने तो उन्होंने देखा कि इस सत्र में छात्रों की संख्या बहुत अधिक थी। कार्य भी बहुत ज्यादा था इसलिए उन्होंने अपना पूरा ध्यान शिक्षा के स्तर को ऊपर उठाने में लगा दिया। उन्होंने अभ्यास के लिए केंद्रीय विद्यालय, आर्मी पब्लिक स्कूल तथा अन्य दूसरे शिक्षा संस्थानों के शिक्षा के स्तर का निरीक्षण किया। इससे शिवदत्त को समझ में आया कि शिक्षा की नीतियों में बहुत सारी कमियाँ है। पर क्या इन कमियों को दूर किया जा सकता है? इसके लिए उनके पास कोई ठोस उत्तर नहीं था।

बहुत विचार करने के पश्चात वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि पूरे राष्ट्र में एक ही प्रकार की शिक्षा प्रणाली होनी चाहिए। देश के लिए केंद्रीय विद्यालय

की शिक्षा प्रणाली आदर्श है। यहाँ शिक्षा का स्वरूप समन्वित है। हिन्दी और अँग्रेजी का एक जैसा महत्व है। यह शिक्षा प्रणाली सभी के लिए सस्ती और उपयोगी है। जो शिक्षा संस्थान पाश्चात्य शैली की नकल करते हैं वे भारतीय शिक्षा व्यवस्था को और भी पीछे धकेल देते हैं। इसी के साथ देश की शिक्षा व्यवस्था में अलग-अलग वर्ग बन गए हैं। जिससे सोचने और समझने की दृष्टि में भी फर्क आ गया है।

शिवदत्त व्यवसायिक शिक्षा के घोर विरोधी रहे हैं। उनके मतानुसार शिक्षा का व्यवसायीकरण शिक्षा की मूल भावना से परे, शिक्षा के उद्देश्य को भटका देता है। यह एक सुदृढ़ एवं सांस्कृतिक समाज के स्थायित्व के लिए खतरा है। शिक्षा का व्यवसायीकरण शिक्षा के प्रसार को तो बल प्रदान कर देगा परंतु शिक्षा के सिद्धांतों और गुणवत्ता पर उसका असर अवश्य पड़ेगा। अधिकतर गैर सरकारी और स्वः पोषित विद्यालयों का स्तर, धनार्जन के उद्देश्य से ग्रसित हो शिक्षा के उद्देश्य से विमुख हो चुके हैं। यहाँ पर मानवीय मूल्यों, नैतिक सिद्धांतों अथवा सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों का त्याग किया जाता है। अभिभावक भी पाश्चात्य संस्कृति के मोहपाश में अपने बच्चों को इन ऊपरी चकाचौंध से सुसज्जित इन विद्यालयों में प्रवेश दिला देते हैं। संभवतः उपभोगवादी संस्कारों से ग्रसित, सामाजिक अवसान में लिप्त यह अभिभावक अपने ही बच्चों को अंधकार में धकेलकर उनका भविष्य नष्ट कर रहे हैं।

छात्रों की विद्यालयी शिक्षा के अतिरिक्त (ट्यूशन) के पक्ष में वे बिलकुल नहीं रहे हैं। उनका मानना रहा है कि प्रत्येक विद्यालय में उच्च स्तर, मध्य स्तर और निम्न स्तर तीनों श्रेणी के छात्र होते हैं। यह स्कूल की जिम्मेदारी है कि वह देखें कि किस प्रकारसे निम्न स्तर के छात्रों का स्तर ऊपर उठे। यदि कमजोर स्तर के छात्रों के लिए अतिरिक्त कक्षाएं की व्यवस्था की जाये तो यह एक अच्छी कोशिश होगी।

शिवदत्त नहीं चाहते कि कट्टर धार्मिक संस्थान शिक्षण संस्थायें चलाएं। वे मानते रहे हैं कि धार्मिक संस्थाएं अपने धर्म का विस्तार करना चाहती हैं। यदि धार्मिक संस्थाओं को शैक्षणिक संस्थाएं चलाने का अधिकार मिल जायेगा

तो यह शिक्षा के मूल प्रकाशमयी, वैज्ञानिक, तार्किक और सौंदर्यात्मक तत्व से छात्रों को विमुख करने का अन्याय होगा।

हाँ शिक्षा में धर्म निहित नैतिक शिक्षा के संबंध में शिवदत्त का मानना था कि नैतिकता के गुण पाठ्यक्रम में पढ़ाये जाने की अपेक्षा शिक्षण संस्थाओं को चाहिए कि वे यह गुण बच्चों में विकसित करें। इसके लिए शास्त्रों का विवेचन, दर्शन और नाटकों का मंचन किया जाना चाहिए। शिवदत्त के अनुसार विद्यालय का वातावरण सांप्रदायिक नहीं होना चाहिए। समस्त छात्रों के लिए शिक्षा की एक ही नियमावली विकसित होनी चाहिए।

विज्ञान के संबंध में शिवदत्त का मानना रहा है कि 'विज्ञान' शिक्षा का एक आवश्यक अंग होना चाहिए। जिसमे छात्रों को सिर्फ विज्ञान पढ़ाया ही नहीं जाना चाहिए बल्कि उनकी सोच भी वैज्ञानिक बनानी चाहिए।

साथ ही शिवदत्त का यह भी मानना है कि स्कूल सरकारी हो या गैर सरकारी उसके शिक्षकों का चयन करते समय बड़ी ही सूझ-बूझ की आवश्यकता है। शिक्षक ही देश के भविष्य के निर्माता हैं उनके चयन के समय सिर्फ उनके मेरिट को ही नहीं देखना चाहिए बल्कि उससे भी अधिक आवश्यक है कि यह देखा जाय कि उनका आचरण कैसा है और शिक्षा के प्रति उनका समर्पण भाव कैसा है।

शिवदत्त का मानना है कि शिक्षकों को प्रोन्नति उनकी वरिष्ठता के आधार पर न करके उनके कार्य के आधार पर की जानी चाहिए। एक आलसी निठल्ला शिक्षक सिर्फ अपने लिए ही नहीं वरन पूरे स्कूल के लिए कलंक होता है। उसके निठल्ले पन का असर छात्रों के भविष्य पर भी पड़ सकता है। साथ ही दिखावट और फैशन से शिक्षक जितना दूर रहेगा विद्यालय का वातावरण उतन ही सादगी पूर्ण रहेगा।

शिवदत्त कक्षा में प्रतियोगिता विधि के पक्ष में रहे हैं। वह इसका प्रयोग अपनी कक्षाओं में भी करते रहते थे। उनका मानना था कि इससे छात्रों को आगे बढ़ने में सहायता मिलती है।

सत्र पूरा होने पर शिवदत्त ने शिवालिक कॉलेज जाना छोड़ दिया। इसके पश्चात उन्होंने निश्चित किया कि वे अब अपना पूरा ध्यान, लेखन, चिंतन, विवेचन और शोध की ओर लगाएंगे। शिवदत्त को यह भी समझ में आया कि उन्होंने डुग्गर प्रदेश का जितना भी सांस्कृतिक सर्वेक्षण किया है वह पर्याप्त नहीं है। इसलिए इस बार उन्होंने डुग्गर की जनजातियों और डुग्गर के युग पुरुषों की जीवनी पर काम करने का विचार बनाया। साथ ही डुग्गर की यात्राओं के दौरान उन्होंने जिन सरोवरों को देखा था तथा जो आम लोगों की नजरों से ओझल थे उन पर पुस्तक लिखने का विचार बनाया। इन सरोवरों, नदी, नालों, जलकुंडों, झरनों पर सामग्री एकत्र करके उन्होंने 'डुग्गर की नदियां'नाम की पुस्तक लिखी जिसका प्रकाशन 2007 में हुआ।

2. नव निवास नव कार्य

शिवदत्त अपने लेखन कार्य के लिए नित नए विषयों की खोज करते थे जिन पर अभी तक कोई कार्य नहीं हुआ था। तभी उन्हें स्थानीय समाचार पत्र 'स्टेट टाइम्स' से पता चला कि जम्मू- कश्मीर राज्य में विकसित की जा रही कालोनियों में जिनके भी प्लाट हैं, उन्हें अपने घर बनवा लेने चाहिए अन्यथा उनकी जमीन वापस ले ली जाएगी। उधमपुर हाउसिंग कॉलोनी में शिवदत्त का भी प्लाट था। उन्होंने कई बार चाहा कि प्लाट पर काम शुरू करें किन्तु पारिवारिक परिस्थितियाँ अनुकूल न हो पाने के कारण यह कार्य प्रारम्भ नहीं हो पाया था।

1995 में सेवा निवृत्त होने के बाद भी शिवदत्त ने अपना निवास स्थान पैंथल ही बनाए रखा था। वहीं से उन्होंने अपनी पुत्रियों के विवाह संस्कार भी सम्पन्न किये थे। पैंथल गाँव का वातावरण उनकी जीवन शैली के अनुकूल था इसलिए वे वहाँ प्रसन्न थे। किन्तु हाउसिंग बोर्ड की विज्ञप्ति ने उन्हें अजीब सी उलझन में डाल दिया था। व्यक्तिगत रूप से शिवदत्त उस मकान को बनाने के पक्ष में नहीं थे क्योंकि उम्र के इस पड़ाव (बुढ़ापे) में मकान बनवाना उन्हें कठिन कार्य लग रहा था। परंतु वह उस प्लाट को छोड़ भी नहीं सकते थे। घर में सभी से सलाह मशविरा करने के बाद यह निष्कर्ष

निकला कि हमें छोटा सा ही सही मकान बनवा लेना चाहिए। उन्होंने उसी कॉलोनी में रहने वाले अपने भांजे को सफाई का काम सौंपा।

मकान का काम शुरू करने में सबसे बड़ी परेशानी थी पानी की व्यवस्था करना, शिवदत्त ने पी.एच.ई. कार्यालय से किसी तरह दौड़-धूप करके नल लगवाने की अनुमति प्राप्त की। नगर के प्रसिद्ध ज्योतिषी प्रभाकर जी से शुभ मुहूर्त निकलवाया और अप्रैल 2000 में बहन पुष्पा के मार्गदर्शन में भूमि पूजन का कार्य सम्पन्न हुआ।

भूमि पूजन के बाद जब शिवदत्त ने नींव का कार्य प्रारम्भ किया तो लोगों ने उन्हें सुझाव दिया की भवन का निर्माण वे लोहे के स्तंभों पर करें। राजगीरों ने 17 स्तंभों को खड़ा किया और उनसे दीवारों को जोड़ दिया। मकान दो शयन कक्षों, एक बैठक, एक रसोई और एक छोटे से बरामदे पर आधारित था। मकान का कार्य तो शिवदत्त ने प्रारम्भ कर दिया था परंतु इस बीच शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक दृष्टि से वे बहुत असंतुलित रहे। प्रतिदिन पैंथल से ऊधमपुर आना, सीमेंट, ईंटों की व्यवस्था करना, उनका पूरा दिन भाग-दौड़ में ही बीतता था। कभी-कभी उनका छोटा बेटा विशालाक्ष कुमार उनकी सहायता करने के लिए आ जाता था। निर्माणाधीन खंभों के बीच भी कंकड़, मौरंग बालू के टीले पर शिवदत्त अपनी पोथी जमा ही लेते थे। साथ ही राजगीरों और मजदूरों से बीच-बीच में संवाद भी चलता रहता था।

इसी बीच उनकी बहू गर्भवती हुई तो उनकी पत्नी अनुसूया को देखभाल के लिए अहमदाबाद जाना पड़ा। जुलाई 2009 में शिवदत्त की पुत्रवधू मोनिका ने द्वितीय पुत्र को जन्म दिया जिसका नाम रखा गया शौर्य।

मकान के कार्य को कुछ दिनों के लिए स्थगित करके शिवदत्त पोते को देखने के लिए अहमदाबाद गए और वहाँ कोई दो सप्ताह रहकर पत्नी के साथ वापस पैंथल लौट आए।

1 सितंबर 2009 में मकान निर्माण कार्य पुनः आरंभ करवाया। शिवदत्त के अथक परिश्रम के परिणाम स्वरूप 2010 में नए भवन का निर्माण कार्य

सम्पन्न हुआ। गृह प्रवेश का पूजन करवाकर शिवदत्त अपने नव निर्मित भवन में रहने के लिए आ गए।

शिवदत्त जब भवन निर्माण का कार्य करवा रहे थे तभी एक तांत्रिक ने शिवदत्त को बताया कि जिस भूखंड पर वे भवन निर्माण करवा रहे हैं वो अभिशप्त है। क्योंकि उस भूखंड के पास वाले नाले में एक साँप और सापिन रहते थे। किसी ने उन्हें देखकर पत्थर मारा तो साँप की मृत्यु हो गयी। साँप की मृत्यु से दुःखी होकर सापिन कुपित होकर पूरे भूखंड में उत्पात मचाने लगी।

शिवदत्त के मकान के पास ही देहरी शैली का एक मंदिर था। जिसमें नाग मूर्ति स्थापित थी। लोगों से उन्हें पता चला कि उनके मकान के आस-पास के जितने भी मकान हैं सबमें कुछ न कुछ गड़बड़ अवश्य है। इसीलिए सापिन के उत्पात से बचने के लिए गृह स्वामी ने इस मंदिर का निर्माण करवाया था। मकान निर्माण करवाते समय शिवदत्त पूरे समय डरे रहते थे कि कोई दुर्घटना न हो जाये। किसी मजदूर या राजगीर को चोट न लग जाये। शिवदत्त स्वयं भी सावधान रहते थे। किन्तु तांत्रिक की चेतावनी भी निरर्थक नहीं गयी थी शिवदत्त ने जल भंडारण के लिए जो गड्ढा बनवाया था एक रात एक गाय उसमें गिर गयी तीसरे दिन गाय का स्वामी गाय को ढूंढते हुए शिवदत्त के प्लाट के पास आया यो उसने देखा कि वह गाय गड्ढे के नीचे बैठी हुई है। साथियों के सहयोग से गाय के स्वामी ने गाय को निकाला, गाय सही सलामत थी। शिवदत्त ने बार-बार ईश्वर को धन्यवाद किया कि उनका मकान अभिशाप से बच गया।

जिस दिन यह घटना हुई थी शिवदत्त पैंथल में थे और उन्हें इस घटना का पता नहीं चल पाया था। इस घटना के बाद शिवदत्त ने प्रयास किया था कि वे अपना अधिक से अधिक समय अपने मकान में व्यतीत करें।

इस मकान में आने के पश्चात शिवदत्त को सबसे बड़ा यह लाभ हुआ कि उन्हें अपने पुराने मित्र मिल गए। उधमपुर के कॉलेजों में आयोजित होने वाले सांस्कृतिक और साहित्यिक कार्यक्रमों में भी शिवदत्त आमंत्रित रहते थे जिससे कि उनका कार्यक्षेत्र भी बढ़ गया।

सन 2011 में शिवदत्त ने अपने यात्रा संस्मरण के आधार पर एक पुस्तक लिखी जिसमें उनकी दुर्गम और दूर की यात्राओं का वर्णन था। इसमें से अधिकांश यात्राओं का वर्णन भी शिवदत्त ने अपनी आत्म कथा जीवन चक्र में किया था। उनके अतिरिक्त कच्छ यात्रा 2009, पालितान यात्रा 2009, कुल्लू यात्रा तथा श्री नगर यात्रा 2013 थी। इस पुस्तक का नाम रखा था 'जातरा चक्र'। इस पुस्तक का प्रथम संस्करण 2012 में प्रकाशित हुआ।

"जातरा चक्र" पुस्तक के प्रकाशन के बाद शिवदत्त ने अपने लिए शोध का विषय चुना - 'डुग्गर की जातियाँ एक अध्ययन"। इस पुस्तक के लिए शिवदत्त को बहुत भाग दौड़ करनी पड़ी। कभी गद्दियों कि बस्ती में जाते। उनसे संपर्क करते, कभी चनैनी, रामनगर के चक्कर लगाते। कभी गुज्जरों, बकरवालों, सप्पियों का इतिहास ढूँढने के लिए पहाड़ी स्थानों के चक्कर लगाते, इस शोध कार्य में शिवदत्त को सबसे बड़ी चुनौती नदियाला और नाग जाति की थी। नागों की बस्तियाँ रियासी जिले के नागौती क्षेत्र में अधिक थीं। इनके लिए शिवदत्त को बार-बार रियासी नाग परिवारों से मिलने जाना पड़ता था। बार-बार नाग परिवार के लोगों से मिलते-मिलते, शिवदत्त ने उनके रहन-सहन, भाषा व्यवहार और तो और उनकी निर्भीकता का बही अनुभव किया। गिर्थ जातियों की खोज में बसोहली क्षेत्र के चक्कर लगाने पड़े, बड्डु और मौलगी (डांगी) जातियों का इतिहास जानने के लिए पहाड़ों में घूमना पड़ा, खस प्रजाति की खोज में रियासी, किश्तवाड़, ऊधमपुर के पहाड़ों में बसी खस जातियों के गांवों में महीनों भटकना पड़ा। भोट जाति की खोज में शिवदत्त को पाडर प्रदेश भी जाना पड़ा। अनुसूचित जन जातियों, जन जातियों, पिछड़ी जातियों और उच्च जातियों की जीवन शैली का अध्ययन करने के लिए शिवदत्त को कई स्थानों के चक्कर लगाने पड़े। शिवदत्त के अथक प्रयासों के परिणाम स्वरूप इस पुस्तक की पाण्डुलिपि तैयार हुई। शिवदत्त ने अपनी इस पाण्डुलिपि को आर्थिक सहयोग के लिए ललित कला संस्कृति और भाषा अकादमी जम्मू कश्मीर को सौंपा।

2011 में जम्मू अकादमी ऑफ आर्ट कल्चर और लैंगवेजेज ने शिवदत्त के जीवन पर एक पुस्तक का प्रकाशन किया जिसका शीर्षक था- 'मोनोग्राफ

प्रो. शिव निर्मोही' यह पुस्तक डोगरी में थी और इस पुस्तक के लेखक थे प्रकाश प्रेमी जी। इस पुस्तक में उन्होंने शिवदत्त के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर आलोचनात्मक प्रकाश डाला था। डोगरी पाठकों को यह पुस्तक बहुत पसंद आई।

शिवदत्त जिन दिनों डुग्गर की जातियों पर काम कर रहे थे वह मानसिक रूप से काफी असंतुलित रहे थे। मई 2013 में शिवदत्त अपनी बहन शांति देवी के घर मस्तगढ़ गए हुए थे। उनके घर पर शिवदत्त का पैर फिसला और वे गिर गए उनके माथे और सिर में गंभीर चोटें आई। उनका भांजा उन्हें अस्पताल लेकर गया जहाँ डॉ. ने सरसरी तौर पर देखकर पट्टी बाँध दी। अगले दिन पत्नी जो की भाई की चारवर्षी पर गई हुई थी उनको लेकर वह उधमपुर वापस आ गए। उधमपुर आकर भी शिवदत्त ने कुछ दिनों तक डॉ. के.सी. शर्मा से पट्टी कराई। जिससे उन्हें लगने लगा था कि वे स्वस्थ हो गए थे।

जम्मू कश्मीर अकादमी ऑफ आर्ट, कल्चर एवं लंगवेजेज ने वर्ष 2011 की सर्वश्रेष्ठ पुस्तकों को सम्मानित करने के लिए 16 जून 2013 को एक समारोह श्रीनगर में आयोजित किया जिसमें शिवदत्त की पुस्तक "किश्तवाड़ संस्कृति और परंपरा" भी थी। अकादमी के आमंत्रण पर शिवदत्त श्री नगर चले गए। 17 जून को राज्य के वित्तमंत्री 'श्री राथर'जी ने अकादमी की ओर से शिवदत्त का भी सम्मान किया। 51000 रुपये का चेक, प्रशस्ति पत्र तथा स्मृति चिन्ह प्राप्त करके शिवदत्त अगले दिन वापस लौट आए।

जुलाई 2013 को डोगरी संस्था जम्मू ने शिवदत्त को 'डुग्गर का इतिहास और संस्कृति' विषय पर 15 पृष्ठों का एक शोध पत्र तीन दिनों में तैयार करने को कहा। शिवदत्त शोध पत्रों की तैयारी में जुट गए। जिसके लिए उन्हें अपनी ही पुस्तकों का गहन अध्ययन करना था। दो दिनों के बाद शिवदत्त के सिर में तीव्र पीड़ा हुई और जब वे बिस्तर से उठे तो उनका दायाँ पैर लडखड़ा रहा था। स्पष्ट बोलने में भी असुविधा हो रही थी। पैरों में पीड़ा होने के कारण वे हड्डियों के डॉ. को दिखाने गए तो उन्होंने फिजीशियन

को दिखाने की सलाह दी। फिजीशियन ने देखकर एक्स रे कराने का परामर्श दिया। एक्स रे की रिपोर्ट देखकर डॉ. ने स्पष्ट रूप से कहा कि सिर में ब्लड क्लाट है ऑपरेशन करना पड़ेगा। साथ ही शिवदत्त को सुपर स्पेसिलिटी हॉस्पिटल जम्मू रेफर कर दिया।

शिवदत्त ने सोचा कि ऐसे ही ठीक हो जाऊंगा किन्तु कुछ फर्क न पड़ने पर पत्नी के साथ सुपर स्पेसिलिटी हॉस्पिटल पहुंचे। वहाँ पर भी डॉ. ने ऑपरेशन की सलाह दी। वहाँ से निकल कर अपने साले कृष्णकांत के साथ उसके घर छन्नी हिम्मत गए। साले ने शिवदत्त को डॉ. अनिल शर्मा को दिखाया। सी टी स्कैन देखकर डॉ. अनिल शर्मा ने 25 अगस्त 2013 को शिवदत्त का ऑपरेशन किया जो कि सफल रहा। इस दौरान शिवदत्त के साले और उसकी पत्नी ने शिवदत्त की बड़ी सेवा की। इस बीच बड़ा बेटा भी अहमदाबाद से आगया था। छोटा बेटा साथ में ही था। 2 सितंबर को अस्पताल से छुट्टी मिली कुछ दिनों तक साले के घर में रहने के पश्चात वे वापस उधमपुर आ गए। शिवदत्त को पूर्ण रूप से स्वस्थ होने में तीन महीने लगे।

सन् 2014 में शिवदत्त की पुस्तक 'डुग्गर की जातियाँ' प्रकाशित हुई। शिवदत्त ने इसकी 50 प्रतियाँ देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों में मानार्थ प्रति के रूप में भेजीं। कुछ पुस्तकें स्थानीय विद्यालयों, विश्वविद्यालयों को भी भेंट कीं।

शिवदत्त ने अपने स्वास्थ्य के सुधरने के पश्चात पंचेरी ग्राम का भ्रमण किया। शिवदत्त डोगरी के प्रसिद्ध लेखक देशबंधु डोगरा नूतन को भी अपने साथ लेकर गए। वे लांदर तक गए और कई गोष्ठियों का आयोजन करके वापस लौट आए। वे श्याम लाल खजूरिया के साथ दमनोत भी गए और मोंगरी, दुबी गली आदि में गोष्ठियाँ करके वापस लौटे।

सन 2014 में शिवदत्त ने पंचेरी पर एक पुस्तक लिखी जिसका नाम था "पंचेरी : समाज और संस्कृति"। इस पुस्तक की पाण्डुलिपि तैयार की और आर्थिक सहयोग के लिए इसे केंद्रीय हिन्दी निदेशालय दिल्ली को भेजा।

एक दिन शिवदत्त पार्क में टहल रहे थे तभी उन्हें कुल्लू से ओम प्रकाश शर्मा का फोन आया कि भुट्टी वीवर्स कोओपरेटिव सोसाइटी ने शिवदत्त का नाम ठाकुर मौलू राम जीवंत पहाड़ी भाषा और संस्कृति राष्ट्रीय पुरुस्कार के लिए चयनित किया है। शिवदत्त 9 अगस्त को अपनी पत्नी, पुत्र और उसके परिवार के साथ कुल्लू पहुंचे। वहाँ की संस्थाओं ने शिवदत्त का बड़ा सम्मान किया। 10 अगस्त को शिवदत्त ने सम्मान ग्रहण किया और उसी शाम मंडी, हमीरपुर, ज्वालाजी, ब्रजेश्वरी देवी कांगड़ा से होते हुए 10 अगस्त शाम को वापस पैंथल पहुँच गए।

हिमांचल की यात्रा में शिवदत्त ने हिमांचल की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और प्राकृतिक धरोहरों का अवलोकन एक शोधार्थी के रूप में किया। धरोहरों पर शोधकार्य शिवदत्त ने पहले भी किया था। इस विषय पर शिवदत्त की कुछ पुस्तकें भी प्रकाशित हो चुकीं थीं। सन 2015 में शिवदत्त ने डुग्गर के राजमहलों पर एक पुस्तक तैयार की और उसे प्रकाशन के लिए साहित्य संगम पब्लिकेशन जम्मू को भेजा।

2015 में शिवदत्त जिस समय 'डुग्गर की ऐतिहासिक समाधियाँ' पुस्तक लिख रहे थे उसी समय उनकी छोटी बहू की नियुक्ति एक अध्यापिका के रूप में सांझी छत के स्कूल में हो गई। उसकी दो छोटी बेटियाँ थीं जिन्हें वो अपने साथ नहीं ले जा सकती थी। अतः बेटियों की देखभाल के लिए शिवदत्त पत्नी के साथ पैंथल चले गए। बहू के स्कूल में तीन महीने का अवकाश होता था। उस समय शिवदत्त उधमपुर चले जाते। इस प्रकार उनका पैंथल और उधमपुर आना-जाना लगा रहता था। साथ ही सर्दियों में कभी-कभी बड़े बेटे के पास अहमदाबाद भी चले जाते। बड़ा बेटा सर्जन टाबर के एक फ्लैट में किराये पर रहता था। उन्ही दिनों अहमदाबाद में एक नयी कॉलोनी का निर्माण कार्य प्रारम्भ हुआ जिसका नाम रखा गया था शांतिग्राम। बेटे ने भी इस कॉलोनी में फ्लैट लेने के लिए आवेदन दिया था। सौभाग्य स्वरूप यह आवेदन स्वीकार कर लिया गया था। शिवदत्त के आगे उसे आर्थिक सहायता देने का प्रश्न था। परंतु शिवदत्त अभी भी अपनी जमाँ पूंजी शोध यात्राओं में खर्च कर देते थे। इस कारण आर्थिक रूप से मदद करने में वे

असमर्थ थे। पुत्र वधू स्थानीय महाविद्यालय में प्राचार्या के पद पर नियुक्त थी इस कारण फ्लैट के लिए धन की व्यवस्था पुत्र ने स्वयं की हाँ बैंक से कुछ आर्थिक ऋण अवश्य लेना पड़ा था। घर के कागज हाथ में आते ही कुछ आवश्यक साज-सजावट करने के पश्चात जुलाई 2016 में वे लोग अपने इस नए घर में शिफ्ट हो गए थे।

जिन दिनों शिवदत्त स्कूल में अध्यापक थे किसी ज्योतिषी ने उनके लिए भविष्यवाणी की थी कि उनके तीन मकान होंगे शिवदत्त उसकी भविष्यवाणी सुनकर हँसे थे और बोले थे कि मैं एक साधारण सा अध्यापक मेरी स्थिति तो एक कमरा बनवा सकने की भी नहीं है मैं तीन घर कैसे बनवाऊंगा? किन्तु अहमदाबाद के नए मकान में आने के बाद शिवदत्त को लगा कि ज्योतिषी की भविष्य वाणी सत्य हो गई। वैसे वह ज्योतिष में विश्वास कम ही करते थे। परंतु कर्म सिद्धान्त के द्वारा भविष्य जानने का विज्ञान उनके लिए नया था। शिवदत्त का एक पैतृक मकान पैंथल में था, दूसरा हाउसिंग कॉलोनी उधमपुर में था और तीसरा शांतिग्राम गुजरात में हो गया था। 2016 के बाद शिवदत्त और भी व्यस्त हो गए। कभी पैंथल कभी उधमपुर, कभी शांतिग्राम में भाग दौड़ लगी ही रहती थी।

शिवदत्त का शांतिग्राम में मन कम ही लगता था। एक तो वहाँ पर कोई भी उनकी आयु वर्ग का नहीं था दूसरे उन्हें वहाँ न कोई शिक्षाविद मिला, न साहित्यकार, न ही पत्रकार। शांतिग्राम में उन्हें अपना जीवन बंदी के समान लगता था। इसलिए वे वहाँ थोड़े दिनों के लिए रहते और वापस लौट आते।

2017 में छोटी बहू का स्थानान्तरण कटरा हुआ तो शिवदत्त उधमपुर वापस चले गए और पुनः साहित्य साधना में जुट गए। सर्वप्रथम उन्होंने डुग्गर के शहीदी स्मारकों पर शोध किया और पुस्तक लिखकर जम्मू कश्मीर अकेडमी ऑफ आर्ट कल्चर और लैङ्ग्वेजेज को वित्तीय सहायता के लिए भेजी। इसी वर्ष शिवदत्त ने प्रकाशन हेतु तीन पुस्तकें- 'डुग्गर की ऐतिहासिक समाधियाँ', 'डुग्गर के सर' और 'डुग्गर के तालाब' प्रकाशन केंद्र को सौंपीं।

सन 2017 में शिवदत्त को राजस्व विभाग की ओर से 5 लाख रुपये की धनराशि मिली। यह धनराशि उन्हें उनके पैंथल की जमीन के मुआवजे

के स्वरूप में मिली थी जिसे नेशनल कार्पोरेशन ने अधिकृत कर लिया था। इस धनराशि का उपयोग शिवदत्त ने अपने पैंथल के मकान की ऊपरी तल को बनवाने में किया।

सन 2018 में शिवदत्त की चारों पुस्तकें - 'डुग्गर की ऐतिहासिक समाधियाँ', 'डुग्गर के शहीदी स्मारक', 'डुग्गर के सर' और 'डुग्गर के तालाब' प्रकाशित होकर आ गई थीं। इन पुस्तकों का प्रकाशन अक्षय प्रकाशन दिल्ली ने किया था। स्थानीय समाचार पत्रों में इन पुस्तकों बड़ी सराहना हुई। साथ ही स्थानीय समाचार पत्रों में इन पुस्तकों की समीक्षा भी प्रकाशित हुई।

2018 शिवदत्त के लिए बहुत भाग दौड़ का वर्ष रहा। वे चाहते थे कि पैंथल में उनके प्रवास के दौरान उनके कार्यों में जो शिथिलता आ गयी थी उसे वह पूरा कर सकें। इसके लिए शिवदत्त शोध के नए क्षेत्रों की खोज करने में जुट गए। वे श्री माता वैष्णो देवी विश्वविद्यालय में होने वाले साहित्यिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का हिस्सा भी बने रहे इससे उन्हें कई ज्ञान वर्धक जानकारियाँ भी प्राप्त हुईं।

बात सन 2018 की है। सितंबर महीने में दिल्ली से जम्मू कश्मीर रिसर्च सेंटर के निदेशक श्री आशुतोष भटनागर जी शिवदत्त से मिलने उनके निवास स्थान आए। उनके साथ गुजरात की नीरजा जी, बनारस के अभिषेक उपाध्याय जी, केंद्रीय विश्वविद्यालय जम्मू के डॉ. अजय सिंह जी, श्रेया जी तथा दिल्ली विश्वविद्यालय से भी दो तीन लोग आए हुए थे। उन लोगों ने करीब दो घंटे रुककर शिवदत्त की किताबों का अवलोकन किया और उनसे उनके शोधकार्यों से संबन्धित प्रश्न भी पूछे और वापस चले गए। आशुतोष जी ने अभिषेक उपाध्याय तथा श्रेया जी को पुनः उधमपुर भेजा वे लोग शिवदत्त की पुस्तकें लेने आए थे। जिन पुस्तकों की कम प्रतियाँ उपलब्ध थीं उनकी फोटो कॉपी करवा कर अपने साथ ले गए।

अक्तूबर माह में नीरजा जी पुनः अहमदाबाद से उधमपुर आयीं उन्होंने गांधीवाद पर लिखी अपनी पुस्तकें शिवदत्त को भेंट की और शिवदत्त की पुस्तकें लेकर गुजरात चली गईं।

इन गतिविधियों से शिवदत्त को ऐसा लगा कि जैसे कुछ लोग उनके कार्यों की जांच पड़ताल किसी विशेष उद्देश्य से कर रहे हैं।

वर्ष 2018 शिवदत्त के लिए अतिव्यस्त रहा। इस वर्ष शिवदत्त ने अपने जनपद उधमपुर की संस्कृति और विरासत पर एक पुस्तक लिखकर उसे हिन्दी निदेशालय दिल्ली को आर्थिक सहायता के लिए भेज दिया था। उधमपुर जनपद पर शिवदत्त ने जो पुस्तक लिखी वह दो खंडों में थी। इस पुस्तक का उन्होंने नाम रखा "उधमपुर : संस्कृति और विरासत"। केंद्रीय हिन्दी निदेशालय ने आर्थिक अनुदान प्रदान किया तो यह पुस्तक प्रकाशक को प्रकाशन के लिए सौंप दी।

वर्ष 2018 में शिवदत्त ने डोगरी में भी एक पुस्तक लिखी जिसका शीर्षक रखा "डुग्गर दी लोकवार्ता ते संस्कृति"। इस पुस्तक को शिवदत्त ने जे. एंड. के. अकादमी ऑफ आर्ट कल्चर एंड लैङ्ग्वेजेज को आर्थिक अनुदान के लिए भेजा। किन्तु इस पुस्तक पर अनुदान प्राप्त न हो पाने के कारण आज भी यह पुस्तक अप्रकाशित है।

एक रोचक घटना शिवदत्त के जीवन की और भी है। नवंबर 2018 में शिवदत्त अपनी पत्नी के साथ शांतिग्राम गए। शांति ग्राम जाने से पूर्व शिवदत्त 'जाग्रति' संस्था के संरक्षक डॉ. आर. सी. नागर से मिलने उनके घर गए तो उन्होंने शिवदत्त से कहा कि इस बार जब आप शांति ग्राम जाएँ तो मेरे लिए बड्ड नगर अवश्य जायेँ। बड्ड नगर मेरे पूर्वजों की स्थली है। आप वहाँ से मेरे लिए सरोवर का जल और हाटकेश्वर मंदिर की मिट्टी अवश्य लेकर आयें। वे चाहते थे कि उनके मरने के बाद उनके घर के लोग वह मिट्टी उनकी मृत्यु शैय्या के नीचे रखकर उसपर सरोवर के जल का छिड़काव करें। इससे उनकी मृत आत्मा को शांति मिलेगी। शिवदत्त ने उन्हें आश्वासन दिया कि वह उनके लिए जल और मिट्टी लेकर अवश्य आएंगे।

शिवदत्त ने शांतिग्राम पहुँचकर सर्वप्रथम अपने पुत्र को अपने शांतिग्राम आने का लक्ष्य बताया। तो वे तुरंत तैयार हो गए। रविवार को शिवदत्त पत्नी और पुत्र के परिवार के साथ बड्ड नगर के लिए निकले। शिवदत्त को बड्ड

नगर अति प्राचीन और ऐतिहासिक नगर प्रतीत हुआ। शिवदत्त ने वहाँ के सरोवरों, मंदिरों, बाजारों, शिक्षा संस्थानों, तथा ऐतिहासिक स्थानों का भ्रमण किया। कीर्ति स्तंभों का अवलोकन भी किया। वहाँ से शिवदत्त हाटकेशवर मंदिर भी देखने गए। शिवदत्त ने बड्ड नगर का वो स्थल भी देखा जहां पुरातत्व विभाग की ओर से बौद्ध संस्थान को ढूँढने के लिए खुदाई का काम चल रहा था। शिवदत्त ने वहाँ से मिट्टी एवं जल लिया और नगर का भ्रमण किया तथा विषनगर के मार्ग से अहमदाबाद वापस आ गए।

अहमदाबाद से शिवदत्त उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान की ओर से आयोजित होने वाली एक संगोष्ठी जो की 16 से 18 नवंबर को जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय के संस्कृत एवं प्राच्य विद्या अध्ययन संस्थान में हो रही थी उस में शामिल होने के लिए दिल्ली चले गए। इस गोष्ठी में देश के बड़े-बड़े विद्वान आमंत्रित थे। जिनसे मिलकर शिवदत्त को हार्दिक खुशी हुई। इस संगोष्ठी में शिवदत्त ने दो पत्र पढे। पहला शोधपत्र उन्होंने 'डुग्गर का लोकसाहित्य' शीर्षक पर पढ़ा और दूसरा 'डुग्गर की भाषा और बोलियाँ' शीर्षक पर पढ़ा। साथ ही साथ उन्होंने आयोजकों के कहने पर एक सत्र की अध्यक्षता भी की। 16 नवम्बर को कार्यक्रम के समापन के पश्चात शिवदत्त वहाँ से निकले और जम्मू होते हुए उधमपुर आ गए।

पुस्तक लिखने के साथ-साथ शिवदत्त पत्र पत्रिकाओं के लिए लेख भी लिखते रहे। सीराजा डोगरी, साढ़ा साहित्य, डुग्गर का सांस्कृतिक इतिहास, नयी चेतना, सोच साधना, डोगरी अनुसंधान इत्यादि प्रमुख पत्रिकाओं के लिए शिवदत्त नियमित रूप से लेख लिखते रहते थे।

वर्ष 2019 में शिवदत्त की व्यस्तता बहुत बढ़ गयी थी। श्री माता विश्वविद्यालय ने 20 से 30 मई में दर्शन तथा संस्कृति के तत्वाधान में राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित कार्यशाला में शिवदत्त को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया। देश भर से आए विद्वानों और शोधार्थियों ने शिवदत्त से प्रभावित हो उनसे घंटों संवाद किया। कई शोधार्थी छात्रों ने शोध विधि और प्रकाशन से संबन्धित प्रश्न भी किए। यद्यपि शिवदत्त मात्र मुख्य अतिथि के

रूप में गए थे फिर भी वह पूर्णकालिक रूप से कार्यशाला में उपस्थित रहे और अपनी तथा शोधार्थियों की जिज्ञासा को पोषित करते रहे।

पर्यटन विभाग जम्मू कश्मीर ने मानसर विकास प्राधिकरण के सहयोग से विश्वविरासत दिवस 2018 के उपलक्ष्य में मनवाल में जो कार्यक्रम आयोजित किया था उसमें भी श्री शिवदत्त को मुख्य वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया था। पर्यटन विभाग ने तवी दर्शन के अंतर्गत 15 जून को जो कार्यक्रम आयोजित किया गया उसमें भी शिवदत्त को मुख्य अतिथि बनाया गया था और उनका सम्मान भी किया गया। इसी प्रकार लगभग हर महीने ही वे किसी न किसी गोष्ठी के लिए आमंत्रित होते रहते थे।

नब्बे के दशक में शिवदत्त से लेखकों ने अपनी पुस्तकों की भूमिका एवं समीक्षात्मक लेख लिखने का अनुरोध भी किया था।

अब तक शिवदत विख्यात हो चुके थे। उनकी ख्याति दूर-दूर तक फैल चुकी थी। शिवदत्त से प्रभावित होकर कई लेखकों ने उनके जीवन और कृतित्व पर लेख लिखे जो कि हिन्दी, अँग्रेजी एवं डोगरी पत्र पत्रिकाओं में बराबर छपते रहे। शिवदत्त की पुस्तक "किश्तवाड़: संस्कृति और परंपरा" का सुनीता भड्वाल जी ने डोगरी में अनुवाद भी किया।

वर्ष 2019 में शिवदत्त को कई पारिवारिक परेशानियों का सामना भी करना पड़ा। जिससे वे मानसिक तनाव में भी रहे। वर्ष 2019 में शिवदत्त ने स्थानीय संस्थाओं के सहयोग से कई साहित्यिक तथा सम्मान समारोहों का आयोजन भी किया। जिसमें वरिष्ठ एवं योग्य जन भी थे।

4

यात्राएं

1. पारिवारिक एवं शोध यात्राएं

जम्मू रहते हुए डुग्गर प्रदेश से बाहर शिवदत्त की पहली यात्रा पूर्वी बंगाल से उड़ीसा की थी। ये शिवदत्त की पारिवारिक यात्रा भी थी। अगस्त 1989 में उनके बड़े बेटे नलीनाक्ष के लिए इंदिरागांधी फिल्म इंस्टीट्यूट बहरामपुर से सीनोमेटोग्राफी की डिग्री के लिए साक्षात्कार के लिए बुलावा आया। 7 सितंबर 1989 को जम्मू से सियालदाह ट्रेन पकड़ कर शिवदत्त पुत्र को लेकर कलकत्ता पहुँचे। उस दिन वो बड़े बाजार में गुरुद्वारे में ठहरे। अगले दिन मैट्रो में बैठ कर उन्होंने महाकाली मंदिर के दर्शन किए। फिर चिड़ियाघर, गांधी मैदान, विक्टोरिया संग्रहालय तथा तारा मण्डल भी देखा। पूरा दिन कलकत्ता घूमने के बाद रेलवे स्टेशन से जगन्नाथपुरी के दर्शन का टिकट लेकर रेल में बैठे तो ट्रेन पूरी तरह से भरी हुई थी। किसी तरह उन्हें बैठने की जगह मिली। रेल के अंदर उन्होंने लोगों के द्वारा आदिवासियों के साथ बुरा व्यवहार होता हुए देखा तो वे बहुत उदास हुए उन्हें गांधी जी की दक्षिण की यात्रा का प्रसंग याद आ गया जिसमें गांधी जी के पास टिकट होने के बाद भी अंग्रेज ने उनके सामान को बाहर फेंक दिया था और बोला था कि तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई कि तुम अंग्रेजों के डिब्बे में बैठो। शिवदत्त सोचने लगे थे कि अगर सभी भारत वासी हैं तो फिर इनके साथ ऐसा व्यवहार क्यों? वे पुरी पहुँचे सामान धर्मशाला में रखकर समुद्र में स्नान के लिए गए, समुद्र की लहरों ने उनके मन को बहुत प्रभावित किया। स्नान करके जब वो मंदिर में पहुंचे तो मंदिर की स्थापत्य कला को देखते ही रह

गए। अपने जीवन में इतने विशाल और भव्य मंदिर को उन्होंने पहले कभी भी नहीं देखा था। मंदिर में दर्शन कर वो कोणार्क मंदिर गए। शिवदत्त जिन दिनों प्रभाकर की परीक्षा की तैयारी कर रहे थे तो उनके पाठ्यक्रम में जगदीश माथुर का एक नाटक 'कोणार्क' भी था। उन्होंने जब से यह नाटक पढ़ा था उनके मन में ये इच्छा थी कि अपने जीवन काल में एक बार उन्हें कोणार्क' मंदिर जाने का अवसर मिले। यहाँ आकर उनकी यह इच्छा पूरी हो गयी। इस मंदिर की स्थापत्य कला ने उनके मन को बहुत प्रभावित किया था। उन्होंने लिंगराज मंदिर के दर्शन भी किए। फिर वहाँ से बहरामपुर चले गए। अगले दिन बेटे का साक्षात्कार था वे संस्थान पहुंचे तो पता चला कि वहाँ पर बहुत सारे छात्र साक्षात्कार देने आए हुए थे। उत्तर भारत से तो कोई भी नहीं था। अधिकतर लोग उड़ीसा से ही थे। बेटे ने साक्षात्कार दिया उसका चयन भी हो गया परंतु उसने वहाँ रुकना नहीं पसंद किया वहाँ के वातावरण और परिवेश में सहज रूप से समन्वित न हो पाने के कारण वे जम्मू वापस लौट गए।

उड़ीसा की आपकी यात्रा भले ही दस दिनों की थी पर इस यात्रा में उन्हें बंगाली जीवन शैली और उड़ीसा के कलात्मक जीवन की जो झलकियाँ देखने को मिलीं उनका बिम्ब बहुत दिनों तक उनके दिमाग पर बना रहा। उन्होंने इन दस दिनों में बंगाली समाज का जो रूप देखा उससे ही वह बड़े प्रभावित हुए। बंगाली परिवार का रहन-सहन, खाना-पीना सब उन्हें अपने समाज से अलग ही लगा। उनके व्यवहार में जो शैक्षणिक अनुशासन था उसकी भी कमी भी उन्हें अपने समाज में दिखाई दी। उन्हें महसूस हुआ कि किसी भी समाज के सांस्कृतिक और भौतिक उत्थान के लिए शिक्षा एवं शैक्षणिक अनुशासन अत्यन्त ही आवश्यक है।

उड़ीसा का लोक जीवन भी उन्हें अपने जीवन से अलग ही लगा। हाँ, उड़ीसा और अपने समाज में एक समानता उन्हें यह लगी कि वहाँ के लोग बड़े ही परंपरा वादी थे और वे लोग भी रूढ़ियों में जकड़े हुए थे। उड़ीसा की मंदिर स्थापत्य कला एवं उन्नत मूर्ति कला देखकर उन्हें लगा कि डुग्गर प्रदेश इस क्षेत्र में भी बहुत पीछे है। उड़ीसा से लाये हुए पर्यटन साहित्य

का अध्ययन उन्होंने कई दिनों तक किया। जब भी उस यात्रा की वो याद करते वो यही कहते कि बंगाल सच में ही बंग भूमि है और उड़ीसा हमारी जुली संस्कृति का केंद्र है।

उड़ीसा से वापस लौटने के बाद शिवदत्त को त्रिचनापल्ली जाने का अवसर मिला वहाँ पर इलाहाबाद की 'भाषा संगम' संस्था भारती दासन विश्वविद्यालय के सहयोग से राष्ट्रीय कवियों के ऊपर एक परिचर्चा का आयोजन कर रही थी। आयोजन की तिथि 29 दिसंबर से 31 दिसंबर तक निश्चित हुई थी। भाषा संगम की एक संस्था जम्मू में भी थी। उसके कर्ता-धर्ता डॉ. बाली के कहने पर शिवदत्त ने इस परिचर्चा में जाने का मन बनाया था। 24 दिसंबर को रेल पर बैठ कर 27 दिसंबर को वह विजयवाड़ा पहुँचे, वहाँ से मद्रास पहुँच कर उन्होंने अन्ना दुराई और रामचन्द्र जी की समाधियों के दर्शन किए, स्नेक गार्डेन देखा, रास्ते में ही उन्हें प्रेसीडेंसी कॉलेज की इमारत भी दिखी जिसको देखकर उन्हें डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्ण की याद आई उनका नाम भी इस कॉलेज से जुड़ा हुआ था। मद्रास के बाजार, भवन देखकर समुद्र की लहरों का आनंद उठाते हुए वो बस पर बैठकर पाडिचेरी पहुँच गए।

रात एक होटल में बिताकर सुबह थोड़ा घूम-फिर कर वह अरविंद आश्रम गए। वहाँ उन्होंने आश्रम के कक्ष देखे मधुर संगीत सुना और फिर पांडिचेरी शहर की सैर की। पांडिचेरी उन्हें फ्रेंच शैली का का शहर प्रतीत हुआ। समुद्र के साथ सड़क के किनारे-किनारे कई फ्रांसीसी नायकों की मुर्तीयां देखीं। समुद्र की लहरों का चट्टान से टकराना अनोखा संगीत पैदा करता था। वहाँ इन्होने संग्रहालय, जवाहर बाल भवन की एक वाटिका भी देखी।

पांडिचेरी शिवदत्त को बहुत ही अच्छा, शांत और आकर्षक शहर लगा। उन्हें यह भी अच्छा लगा कि वहाँ पर लोग हिन्दी बोलते और समझते भी थे। शाम को बस पर बैठे तो रात 12 बजे वो त्रिची पहुंचे। वहाँ पर भारती दासन का एक बोर्ड दिखा तो वो उधर ही पहुँच गए वहाँ पर चार विद्यार्थी बैठे हुए थे वे शिवदत्त को ले जाने के लिए ही आए थे। वे शिवदत्त को लेकर सम्मेलन स्थल पहुंचे। सम्मेलन के संयोजक ने जिस कक्ष में उनके रहने की व्यवस्था की थी उन छात्रों ने उसमें उन्हें पहुंचा दिया।

सम्मेलन अगले दिन 11 बजे शुरू हुआ उसमें करीब डेढ़ सौ से ज्यादा लोगों ने भाग लिया। ज्यादातर लोग तमिलनाडु, कर्नाटक तथा केरल से थे। कुछ जम्मू-कश्मीर, उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश से थे। परिचर्चा का विषय था : डोगरी कवि दत्तू, तमिल कवि भारती दासन एवं हिन्दी कवि जयशंकर प्रसाद की काव्य साधना। उद्घाटन और भाषण के बाद कुछ छात्रों ने कवि दत्तू, जयशंकर प्रसाद और भारती दासन के जीवन दर्शन और रचनाओं पर अपने शोधपत्र पढ़े। इन शोध पत्रों में कोई नया पन नहीं होने के कारण शिवदत्त का मन सेमीनार में नहीं लगा। हाँ शाम को तमिल कलाकारों ने जो सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया वह शिवदत्त को बड़ा ही मोहक लगा।

अगले दिन सुबह वह मीनाक्षी मंदिर देखने के लिए मदुरई चले गए क्योंकि तमिल साहित्य को पढ़ते समय उन्होंने मीनाक्षी मंदिर के बारे में बहुत सुना था। मीनाक्षी मंदिर कलाकारी का अद्भुत नमूना था। इसे देखकर उनकी आँखें चौंधिया गयी थीं। वहाँ पर उन्होंने मूर्तियों के संग्रहालय देखे, राजमहल और उनकी नाट्यशालाएँ भी देखीं।

तीसरे दिन की गोष्ठी में वे पूरे समय ही उपस्थित रहे। गोष्ठी के पश्चात संयोजक के साथ त्रिचनापल्ली की सैर की और रंगनाथ जी का मंदिर देखा। तमिल विश्वविद्यालय देखने के लिए वे नदी के पार गए। तमिलनाडु के विलक्षण मंदिर वृहदीश्वर मंदिर को देखा आसमान को छूता यह मंदिर द्रविड़ देश के चौल वंशीय राजा के स्थापत्य प्रेम का एक प्रतीक था। यह मंदिर शिव जी को समर्पित था।

गोष्ठी 31 दिसंबर को समाप्त होनी थी और शिवदत्त की वापसी का टिकट 5 जनवरी का था इसलिए वो गोष्ठी के बाद कोयंबटूर चले गए। पूरा दिन शहर घूमे, बड़े-बड़े संस्थान देखे, तमिल फिल्म देखी और उसके पश्चात कन्याकुमारी जाने का कार्यक्रम बनाया और कन्याकुमारी पहुँच गए। कन्याकुमारी पहुँचने में उन्हें पूरा एक दिन लगा। वहाँ पहुँचकर सब से पहले विवेकानंद जी की शिला देखने गए। वहाँ उनके मन को बड़ी ही शांति मिली, शिवदत्त वहाँ पर करीब एक घंटा व्यतीत करने के पश्चात और फिर वापस आकार गांधी मंदिर के साथ-साथ दूसरे मंदिर देखने के बाद तिरुअनंतपुर की बस

पकड़ कर केरल की राजधानी पहुंचे वहाँ पर पद्मनाभ जी के दर्शन किए और फिर रिक्शे में बैठकर पूरा शहर और सचिवालय घूमा। रात की बस में में बैठकर कोयंबटूर वापस पहुँच गए।

घर वापसी के लिए उनके पास दो दिनों का समय बाकी था इसलिए ऊटी सैर का विचार बनाकर बस पर बैठ गए। बस पहाड़ी रास्तों पर चलती हुई ऊटी पहुंची। पहाड़ी के ऊपर से ऊटी शहर का नजारा उन्हें बहुत ही सुंदर लगा। वहाँ की झील शिवदत्त को बड़ी छोटी लगी परंतु पेड़ों में लिपटी हुई ऊटी उन्हें बहुत हो मनोरम लगी। पूरा दिन उन्होंने ऊटी के बाजारों और बागों को देखा फिर शाम को वापस लौटे। अगले दिन दोपहर को उनकी वापसी की ट्रेन थी। उन्होंने अपने सामान को व्यवस्थित किया और थैला लेकर ट्रेन में बैठ गए। ट्रेन ने उन्हें चौथे दिन जम्मू पहुंचाया। अपना सामान लेकर जब वे घर पहुंचे तो वह बड़े ही खुश थे। उड़ीसा, तमिलनाडु और केरल की यात्रा करके वो अपने आप में बड़ा ही हल्का और अच्छा महसूस कर रहे थे। जिसका कारण यह था कि एक तो उन्हें इन सारे प्रदेशों के लोगों के रहन-सहन, संस्कृति, खान-पान की जानकारी मिली दूसरे इन सारे प्रदेशों के नृत्य, संगीत, एवं स्थापत्य कला को सुनने और देखने का सुनहरा अवसर मिला। इन यात्राओं ने उन्हें डुग्गर संस्कृति के अलावा देश भर की विभिन्न कला संस्कृतियों का ज्ञान करवाया था। अब उन्हें नए परिप्रेक्ष्य में कला और संस्कृतियों, उनकी समानताओं तथा भारत की समृद्धि की अनुभूति थी।

इन प्रदेशों के मंदिरों के दर्शन करने के साथ-साथ शिवदत्त जहां भी गए उन्होंने वहाँ के मंदिरों के ऊपर लिखी हुई किताबें भी खरीदीं जिनको पढ़कर उन्हें तमिलनाडु, केरल और उड़ीसा के मंदिरों की स्थापत्य कला, उनकी शैलियों, तथा उप शैलियों का भी ज्ञान हुआ। द्रविण शैली की उपशैलियों का भी उन्होंने अध्ययन किया। पल्लवी शैली, चोल शैली, पाण्डेय शैली तथा मदुरई शैली का अध्ययन ही नहीं किया बल्कि इन शैलियों में निर्मित मंदिर देखकर और इनके अंदर की चित्रकारी को देखकर इनके बीच के अंतर का भी ज्ञान हुआ। इस यात्रा के दौरान देखे गए मंदिरों और उनकी भव्यता ने शिवदत्त को डुग्गर के मंदिरों पर काम करने की प्रेरणा दी।

शिवदत्त पूर्व से दक्षिण की अपनी यात्रा के दौरान हुए अनुभवों की यादों में अभी खोये हुए ही थे कि तभी 'हिन्दू-विश्व-विद्यालय बनारस' से उन्हें 'नवीनीकरण कोर्स' का बुलावा आ गया। यह कोर्स तीन हफ्ते के लिए था और इस कोर्स का आयोजन सरिस्ता विश्व-विद्यालय अनुदान आयोग द्वारा शिक्षकों के लिए किया गया था।

बनारस में पढ़ने का शिवदत्त का बचपन का सपना था। बनारस पूरे भारत में सदियों से विद्या के मंदिर के रूप में जाना जाता था। बनारस देखने की शिवदत्त की बड़ी इच्छा थी इसलिए अपने प्राचार्य से अनुमति लेकर हिमगिरि में बैठकर 15 फरवरी 1990 की सुबह वे बनारस पहुँच गए। उनके रहने की व्यवस्था छात्रावास में की गई थी। इस कोर्स में भाग लेने के लिए देश के अलग-अलग प्रदेशों से कई प्रतिभागी आए हुए थे। जिसमें से कोई लेखक, कोई कहानीकार, कोई आलोचक तो कोई कवि भी था। उनके साथ में रहकर शिवदत्त के ज्ञान में बढ़ावा हुआ। वहाँ उन्हें कई विद्वानों के भाषण को भी सुनने का भी अवसर मिला। जिससे उनकी आंतरिक चेतना जगी। बनारस में उनके कई नए मित्र भी बने जिनके साथ बाद में भी पत्र व्यवहार चलता रहा और उन्हें हिन्दी के क्षेत्र में होने वाले नए साहित्यों के सृजन की जानकारी मिलती रही।

बनारस में निवास करते हुये शिवदत्त ने कई तीर्थ स्थानों के चक्कर भी लगाए। सबसे पहले वो अयोध्या और फैजाबाद गए और फिर इलाहाबाद गए। इलाहाबाद में उन्होंने संगम में स्नान भी किया। उसके बाद वो गया गए जहां पर उन्होंने अपने पिताजी का पिंड दान किया। फिर बौद्धगया गए वहाँ पर उन्होंने कई देशों के बौद्ध भवन भी देखे जो कि उन देशों की स्थापत्य कला के अद्भुत नमूने थे। बौद्धगया में बुद्ध जी के विशाल मंदिर को दिखकर तो वो आश्चर्यचकित ही रह गए। जहां पर कई विदेशी अपने रीति-रिवाजों के अनुसार पूजा-अर्चना करने में व्यस्त थे। वहाँ पर उन्होंने उस वृक्ष के भी दर्शन किए जिसके नीचे बैठकर महात्मा बुद्ध जी ने तपस्या की थी। उसके बाद उन्होंने संग्रहालय देखा और मगध विश्वविद्यालय भी देखने गए।

बनारस में रहते हुए वह भी जितेंद्र मिश्र के साथ वे भारतेन्दु हरिश्चंद्र, जयशंकर प्रसाद के घर को भी गए। जितेंद्र मिश्र उन्हें कबीर चौरा भी लेकर गए और उनकी मुलाकात बनारस के कई साहित्यकारों और पत्रकारों से भी कराई। एक दिन संयोजक भी उन्हें लेकर सारनाथ गए जहां उन्होंने मुंशी प्रेमचन्द्र का पुराना घर, सारनाथ बौद्ध मंदिर एवं कई पुराने स्मारक और स्तूप देखे।

कोर्स 6 मार्च 1990 को पूरा हुआ, दूसरे दिन सात मार्च को बनारस से निकलकर वे 8 मार्च को जम्मू पहुँच गए। 9 मार्च को वे कॉलेज गए तो पता चला कि उनके लिए पंजाब विश्वविद्यालय से एक पत्र आया है जिसमें उन्हें पटियाला लोक साहित्य कांग्रेस के अधिवेशन में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया गया है। प्राचार्य को जब इन्होने बताया तो उन्होंने तुरंत जाने की अनुमति प्रदान कर दी।

11 मार्च को वह अपना सामान लेकर जम्मू से निकले और 12 मार्च को पटियाला पहुँच गए। इस सम्मेलन में शामिल होने के लिए विदेश से भी लोग आए हुए थे। सम्मेलन का माहौल बड़ा ही बौद्धिक और सकारात्मक था। इस सम्मेलन में शिवदत्त की मुलाकात कई महारथी साहित्यकारों से हुई। पटियाला के एक कन्या महाविद्यालय ने उन्हें अगले दिन अपने कॉलेज में आमंत्रित किया। वहाँ पर उन लोगों ने पंजाबी लोक कला पर एक प्रदर्शनी का आयोजन किया था। उन लोगों ने पंजाबी लोक संगीत का मंचन भी किया जो बहुत ही कुशलता के साथ किया गया था। यह सम्मेलन तीन दिनों तक चला। शिवदत्त के लिए यह सम्मेलन ज्ञान बढ़ाने वाला सिद्ध हुआ। 1989 से 1990 तक शिवदत्त ने बहुत सी यात्राएं की जिसमें से कुछ साहित्यिक थी तो कुछ निजी यात्राएं भी थी।

12 अप्रैल 1989 को शिवदत्त अपनी पत्नी के कहने पर ज्वाला देवी के दर्शन की यात्रा पर गए। ज्वाला देवी वह जब पहुंचे तो करीब रात का एक बज रहा था वहाँ पर इतनी ज्यादा भीड़ थी कि उनको ठहरने के लिए कोई भी जगह नही मिली। उन लोगों ने रात एक सराय के बाहर ही सोकर बिताई। प्रातः माँ ज्वाला देवी के दर्शन करके वो कांगड़ा पहुंचे और बृजेश्वरी

माता के दर्शन किए। वहाँ से निकलकर पठानकोट पहुंचे और रात कांवड़ियों की सराय में बिताई। सबेरे बस से लखनपुर और लखनपुर से बसोहली पहुंचे। बसोहली में उन्होंने थोड़ा समय घूमकर बिताया फिर बलौर वाली बस पर बैठ गए। बस पहाड़ी पर पहुंची तो उन्हें एक पुराना मंदिर दिखा। उन्होंने एक जानकार आदमी से उस मंदिर के बारे में पूछा तो उसने जवाब दिया कि यह एक बहुत पुराना मंदिर है। इस मंदिर की खुदाई में एक मूर्ति मिली है जो कि एक पंत के घर पर रखी हुई है। उनको उत्सुकता हुई कि वह उस मूर्ति को किसी प्रकार से देख सकें। उन्होंने बस के ड्राइवर से इसके लिए प्रार्थना भी की पर उसने बस नहीं रोकी इस कारण वो मूर्ति के दर्शन नहीं कर पाये। उनका मन किया कि वो बस से तुरंत उतर जाएँ और मूर्ति को देख कर आयें पर पत्नी के साथ होने के कारण वो नीचे नहीं उतरे हाँ मन में उन्होंने यह विचार बनाया कि पुनः इस मंदिर को देखने आएंगे। इसी बस में उनकी मुलाकात एक डोगरी कवि खजूर सिंह से भी हुई जिनसे हुई चर्चा ने उन्हें बहुत प्रभावित किया। खजूर सिंह जी से उस प्राचीन मंदिर मूर्ति पर भी चर्चा हुई। उसी दिन शिवदत्त ने महानपुर के मंदिर के दर्शन किए, फिर बलौर के हरिहर के मंदिर के दर्शन करके सुकराला पहुंचे। 15 अप्रैल 1989 उन्होंने तीसरी बार माता मल्ल भवानी के दर्शन किए और फिर घर वापस आ गए। पत्नी के लिए तो यह यात्रा धार्मिक थी परंतु शिवदत के लिए ये यात्रा खोजी यात्रा थी जिसमें उन्होंने बसोहली के मंदिरों के खंडहर देखे, महानपुर के जगदंबा मंदिर के शिलालेख पढे। सुकराला, रामकोट और मांडली के ऐतिहासिक स्थान भी देखे।

इसके बाद शिवदत्त ने एक और यात्रा प्रारम्भ की जिसमे वे रामगढ़ से बाबा चमेयाल तक गए। रास्ते में उन्होंने एक पाकिस्तानी गाँव देखा जिसमें बहुत सारे घर जाटों के थे। चमेयाल के बाद नंदपुर का शहीदी स्मारक देखा और सरहदी इलाकों से होते हुए जम्मू वापस आ गए। शिवदत्त ने ये यात्रा जून 1989 में की थी। उनकी इस यात्रा का उद्देश्य स्थानीय लोक- देवताओं की खोज और लोक स्थानों के साथ जुड़े स्थानों की पहचान करना था, और उससे जुड़ी हुई साहित्य एवं संस्कृति की जानकारी जुटाना था।

ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व की एक यात्रा इन्होने पलाँवाला, खौड़ और ज्योंडिया के क्षेत्र में भी की। इस यात्रा में उनके गाइड मास्टर ऋषिपाल सिंह जी थे। उन्होंने शिव दत्त को कई स्थानीय जोगियों से मिलाया। उनसे मिली लोकगाथाओं की जानकारी के आधार पर उन्होंने भाऊ कबीले और उनके क्षेत्रों बंदाला और समरालाके ऊपर एक शोध पत्र भी तैयार किया।

इसके बाद उन्होंने मास्टर बुआदत्ता के साथ अंबरां के ऐतिहासिक स्थानों की भी खोज की। दरिया पार के कई गांवों के भी चक्कर लगाए। डॉ. सुखदेवसिंह छाड़क, डॉ. ज्ञान सिंह और मास्टर ध्यान सिंह के साथ सोहल गढ़ और सुमह के क्षेत्रों का सांस्कृतिक सर्वेक्षण किया।इसी वर्ष पत्नी के साथ लाटी धूना के इलाके को भी देखने गए। वहाँ से लौटे तो सुद्ध महादेव रुके। जहां पर उन्होंने स्वतन्त्रता सेनानी नरातू देवी का साक्षात्कार भी किया। सुद्ध महादेव से चनैनी पहुंचे और रास्ते में दिखने वाले सभी सांस्कृतिक स्थलों को और उनकी उपयोगिता को भी कलम बद्ध किया।

शिवदत्त की यात्राएं चलती रही और वो एक स्थान से दूसरे स्थान जाते रहे। नयी नयी जगहों पर जाना उनके बारे में जानकारी एकत्र करना और फिर उन्हें अपनी लेखनी के माध्यम से कागज पर उतारना उनका शौक था और इसमें उन्हें आंतरिक खुशी की अनुभूति होती थी।

कहते हैं कि जीवन का भी चक्र है जो अपने हिसाब से चलता रहता है कभी खुशी कभी गम, कभी अच्छी घटनाएँ तो कभी दुर्घटनाएँ, कभी खुशियों की बौछारें तो कभी गम के छींटें। इन सब के साथ ही शिवदत्त का जीवन भी बीता। जिसमें से झटका देने वाली घटना 1987 में घटी जब शिवदत्त का छोटा बेटा विशालाक्ष बीमार पड़ा। उसका मुंह सूज गया तो पता चला की गुर्दे की कोई बीमारी है। पहले गाँव में ही दवा दारू की पर कोई भी लाभ नहीं हुआ।

शिवदत्त शनिवार की छुट्टी पर घर आए तो देखा की बेटे ने चारपाई पकड़ ली थी। उसे बार-बार झटके पड़ रहे थे और बीच-बीच में वो बेहोश भी हो जा रहा था। पत्नी उसका सिर गोद में रखकर रो रही थी। बेटे

की हालत देखकर शिवदत्त घबरा गए। उस पूरी रात कोई भी नहीं सो पाया। बेटा भी बीच बीच में उठता और बेहोश हो जाता। सुबह उठते ही महाकाली के मन्दिर गए और बेटे के लिए मन्नत मांगी। घर पहुंचे तो देखा कि बेटा चारपाई पर बैठा है। शिवदत्त बेटे को लेकर जम्मू गए और बच्चों के अस्पताल में भर्ती कराया जहां करीब पंद्रह दिन उसका इलाज चला तो वह ठीक हो गया।

जम्मू में निवास करते हुए 1987 में ही शिवदत्त भी बीमार हुए और आठ दस दिनों के लिए उनका भी इलाज डॉ. राजकुमार के संरक्षण में हुआ। इन दिनों शिवदत्त की बीमारी में उनकी अच्छी देखभाल उनके अपने साले ने की।

इसी समय एक अच्छी घटना भी हुई कि उनकी बड़ी बेटी निधि की नौकरी लगी और वो प्राथमिक विद्यालय में शिक्षक के रूप में नियुक्त हुई।

शिवदत्त हर शनिवार को जम्मू से पैंथल जाते रहते थे। वो सितंबर महीने का आखिरी शनिवार था शिवदत्त की बस रामनगर में दुर्घटनाग्रस्त हो गयी ड्राइवर की सीट के साथ शिवदत्त का सिर टकराया माथे और नाक पर गहरी चोट लगी और फिर वो पूरा खून से नहा गए। किसी तरह वो वैन से अस्पताल पहुंचे। डाक्टर ने माथे पर टांके लगाए और नाक भी देखी तो पता चला कि नाक की हड्डी सही सलामत है। कुछ दिन वो जम्मू में ही रहे इसी बीच उन्हें एक दुखद घटना भी मिली कि उनकी ताई जी का देहांत हो गया पर जख्मी होने के कारण वो कटरा नहीं जा पाये।

तीसरे दिन उनका बड़ा बेटा नलिनाक्ष घबराया हुआ आया और बोला कि दादी की तबीयत बड़ी खराब है आप घर चलो। शिवदत्त अभी गली तक ही पहुंचे थी कि रास्ते में ममेरा भाई मिला। उससे सूचना मिली की माँ का देहांत हो गया है। शिवदत्त के लिए यह बड़ी ही दुखद घटना थी। किसी तरह वो रात में बस से पैंथल पहुंचे और अगले दिन माँ का अंतिम संस्कार किया। माँ के जाने से शिवदत्त बड़े दुखी थे। उन्हें लगा कि वो इस संसार में अकेले ही रह गए हैं उन्हें माँ का बड़ा सहारा था। उन्हीं के भरोसे सभी

को छोड़कर वह जगह-जगह घूमते रहते थे, माँ ने ही उन्हें स्वावलंबी बनाया था। यद्यपि वो ज्यादा पढ़ी लिखी नहीं थी फिर भी दिमाग की बड़ी ही धनी माहिला थीं उन्ही के कहने पर शिवदत्त देवी-देवताओं को पूजते थे। साथ ही हमेशा यही कोशिश करते थे की उनके किए गए कार्यों से माँ को कोई कष्ट न पहुंचे।

माँ ने शिवदत्त को यह शिक्षा दी थी यदि वे अपनी बहनों से अच्छे संबंध बनाकर रखेंगे तो उन्हें कभी भी किसी के आगे हाथ नहीं फैलाना पड़ेगा। शिवदत्त ने माँ की इस बात को सिर माथे पर रखा और हमेशा अपनी बहनों से अच्छे संबंध बनाकर रखे थे और बहनें भी शिवदत्त का पूरा ध्यान रखती थीं।

माँ के जाने के बाद शिवदत्त का दो घरों की व्यवस्था करना मुश्किल था। दूसरे उन्हें जम्मू का शहरी जीवन रास नहीं आया था। कसबाई जीवन शहरी जीवन की झूठी शान शौकत से ज्यादा ही अच्छा था या फिर जम्मू में अकेले रहते हुए उनका मन उचाट हो गया था। इसलिए उन्होंने उधमपुर जाने का मन बनाया। उनकी यह मनोकामना जल्दी ही पूरी हुई। उनकी बदली सरकारी महिला कॉलेज उधमपुर में हो गई।

11 जून 1990 को इन्होंने महिला कॉलेज उधमपुर में अपनी उपस्थिति दर्ज की। छोटी बेटी अलका का महिला कॉलेज में और छोटे बेटे विशालाक्ष को आई. टी. आई. उधमपुर में प्रवेश दिला दिया। शिवदत्त की आर्थिक स्थिति इतनी अच्छी नहीं थी कि वो दो-दो घरों की जिम्मेदारी उठा सकते इसलिए उन्होंने पैंथल ही अपना निवास स्थान बनाया और पैंथल से उधमपुर प्रतिदिन आना जाना प्रारम्भ कर दिया।

महिला कॉलेज एक छोटा सा कॉलेज था। उसमें छात्रों की संख्या तीन सौ से भी कम थी और पढ़ाने के लिए कुल 13 शिक्षक। हाँ एक बात यहाँ पर अच्छी यह थी कि सारे शिक्षक शिक्षा के प्रति समर्पित थे और उनमें किसी प्रकार की कोई खींच-तान न होने के कारण कॉलेज का वातावरण बड़ा ही शांत था। यह कॉलेज अस्पताल की एक पुरानी इमारत में था जहां पर मरीजों के कमरों को ही कक्षा भवन में परिवर्तित कर दिया गया था।

1995 में शिवदत्त को सेवा से निवृत्त होना था। इस कारण उन्हें बड़ी बेटी की शादी की चिंता भी होने लगी थी। बेटी के रिश्ते के लिए रियासी, कटरा, जम्मू, ऊधमपुर, रामनगर कई जगह बात चलाई पर कहीं बात नहीं बनी। उनके कॉलेज के पुस्तकालय में जग्हानू के एक गुप्ताजी थे उन्होंने शिवदत्त को जग्हानू के पंडित हरदत्त के पुत्र योगेंद्र के बारे में बताया तो शिवदत्त ने अपनी बहन और जीजा से बात की। उन लोगों ने देख सुन कर 4 दिसंबर 1992 की शगुन की तिथि निश्चित करके सारे रिश्तेदारों के साथ शगुन भेजा पर किस्मत को शायद कुछ और ही मंजूर था। उसी रात शिवदत्त के जीजा हेमराज जी की तबीयत खराब हुई और उन्होंने शरीर छोड़ दिया। उनके चले जाने से तो शिवदत्त को लगा कि जैसे वो अनाथ हो गए हो पर बड़ी बाहन पुष्पा ने शिवदत्त का हाथ थामे रखा और पल-पल उनका साथ दिया।

24 अप्रैल 1993 को शादी की तिथि निश्चित हुई थी। घर के कुछ करीबी रिश्तेदारों को बुलाकर शिवदत्त ने बिना टेंट, बिना शामियाने के और बिना किसी दिखावे के बेटी का विवाह सादे समारोह के साथ संपन्न करवाया। हालांकि लोगों ने बड़ी नुक्ताचीनी की कि शिवदत्त ने बड़ी कंजूसी की परंतु उन्होंने किसी की परवाह नहीं की। बड़ी बहन पुष्पा ने विवाह के कार्यों को सम्पन्न कराने में अपनी पूरी जान लगा दी। बेटी की विदाई के बाद शिवदत्त को मानसिक संतुष्टि का एहसास हुआ।

2. नव शोध यात्रा

1995 में शिवदत्त को सरकारी सेवा से विश्राम लेना था इसलिए तीन वर्ष पहले ही उन्होंने 1992 में यह सोचना प्रारंभ कर दिया था कि सेवा निवृत्ति के बाद वो क्या करेंगे। उन्होंने पहले सोचा कि वो समाज सेवी बनेंगे। पर उन्हें लगा कि यह कार्य वो नहीं कर पाएंगे। फिर उन्होंने सोचा कि वो राजनीति में चले जाएँगे परंतु यह कार्य भी उन्हें अनुकूल नहीं लगा। अंत में उन्हें एक ही कार्य उचित लगा वो था डुग्गर के इतिहास पर नए सिरे से काम करना। डुग्गर के इतिहास पर काम करने से पहले जरूरी था कि ऐतिहासिक स्थानों का भ्रमण किया जाय, गोष्ठियाँ की जाएँ, उन पर

चर्चा की जाएँ, अपनी सुख-सुविधाओं का त्याग किया जाय साथ ही अपने प्रदेश और संस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिए स्वयं को समर्पित कर दिया जाय।

देश के कई स्थानों की यात्रा करके, कई विद्वानों के कार्य को देखकर, कई परिचर्चाओं में भाग लेने के उपरांत शिवदत्त ने यह निष्कर्ष निकाला कि प्रत्येक प्रदेश में कुछ लोग अवश्य होते हैं जिन्हें अपने सुख और आराम से अधिक अपनी भाषा, साहित्य और सांस्कृतिक विरासत के प्रचार-प्रसार में अधिक सुख और प्रसन्नता मिलती है। शिवदत्त ने फैसला किया कि आतंकवाद की परवाह किए बिना ही उन्हें अपने जीवन को एक साधक की तरह डुग्गर के इतिहास और संस्कृति की खोज के लिए अर्पित कर देना जरूरी है।

शिवदत्त ने सेवा निवृत्त होने से तीन वर्ष पूर्व ही इसकी योजना तैयार कर ली। यहाँ वहाँ से कुछ धन एकत्र किया। साथ ही उन्होंने सेवा निवृत्त होने पर मिलने वाले धन का उपयोग इस कार्य के लिए करने का विचार बनाया। डुग्गर के इतिहास और संस्कृति से प्रेम रखने वाले विद्वानों से संपर्क करके अपनी नयी कर्म भूमि के लिए 'शुद्ध-महादेव' को चुना और वहाँ पर पहला सेमिनार किया। यहीं से शिवदत्त के जीवन की नव शोध यात्रा, कर्मयुद्ध के रूप में प्रारम्भ हुई।

इतिहास की खोज के लिए शिवदत्त ने डुग्गर के इतिहास की कई पोथियों का गहन अध्ययन किया। बहुत सी किताबें उर्दू में थीं और शिवदत्त का उर्दू में ज्ञान कम था इसलिए उन्होंने उर्दू का भी अभ्यास किया। इसके बाद शिवदत्त ने नीलमत पुराण, राज तरंगिणी और कश्मीर के इतिहास के ऊपर लिखी वे सारी किताबें पढ़ी जो महिला कॉलेज उधमपुर की लाइब्रेरी में उपलब्ध थीं। इसके बाद हिमाचल प्रदेश के इतिहास को भी पढ़ा। ठाकुर गोवर्धन सिंह द्वारा लिखा 'हिमाचल का इतिहास' उन्हें बहुत उपयोगी लगा उन्होंने चंबा, गुलेर, नूरपुर और कुल्लू के इतिहास में डुग्गर के प्रसंग भी पढ़े। इसके पश्चात पंजाब के इतिहास के ऊपर जितने भी ग्रंथ मिले उनका भी बड़ी बारीकी और लगन के साथ अध्ययन किया।

डुग्गर के स्थानीय इतिहास की जानकारी रखने वाले विद्वानों के साथ मुलाकातें भी की और उनसे जरूरी सूचनाएं भी एकत्र कीं। उन दिनों रामनाथ

सिंह फोनिया भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग की कश्मीर शाखा के अधीक्षक थे। शिवदत्त ने उनसे भी पुरातत्व संबंधी महत्वपूर्ण स्थानों की जानकारी एकत्र की।

जम्मू कश्मीर की कल्चरल अकादमी ने जून 1992 में लेखकों का एक शिविर पटनीटॉप क्षेत्र में आयोजित किया था। अकादमी ने शिवदत्त को भी इस सम्मेलन में भाग लेने के लिए निमंत्रण भेजा था। लेखकों के सम्मेलन से जब शिवदत्त वापस आए तो उन्होंने शुद्धमहादेव स्थान पर चनैनी के इतिहास और संस्कृति के ऊपर एक परिचर्चा करवाने का प्रारूप तैयार किया। जम्मू के साथियों के साथ सलाह मशवरा भी किया और उस गोष्ठी के लिए 28 से 29 नवंबर 1992 की तिथि निश्चित की गयी। इस गोष्ठी में जम्मू और उधमपुर के बड़े-बड़े विद्वान शामिल हुए इस सम्मेलन का संचालन डॉ सुखदेव सिंह चाड़क जी ने किया। स्थानीय अखबार ने इस सम्मेलन की कामयाबी के बारे में बहुत विस्तार से लिखा। इससे शिवदत्त का हौसला बढ़ा और उन्होंने दूसरे सेमिनार की तैयारी भी शुरू कर दी। दूसरा सेमिनार 9 मई 1993 में चढ़ेआई के इतिहास और उसकी संस्कृति पर था। इस सेमिनार में पांच पेपर पढ़े गए जिनके विषय स्थानीय इतिहास, लोक देवता, घग्घा बाग, जिज्ज प्रजाति थी। सेमिनार का संचालन श्री सूरज श्राफ ने किया। डॉ. सुखदेव सिंह चाड़क मुख्य अतिथि थे। इस सेमिनार का सारा खर्चा श्री अमरनाथ शर्मा जी ने किया। इसके पश्चात शिवदत्त ने अगस्त माह में एक सेमिनार पंचारी में आयोजित किया जिस का संचालन डॉ. धनीराम शास्त्री जी ने किया। दूसरे दिन शिवदत्त वहाँ पर भी गए जहां पर शंकरी देवता का निवास स्थान था। साथ ही वहाँ का प्रसिद्ध मेला भी देखा।

2 जनवरी 1994 में बल्लौर के इतिहास के ऊपर गोष्ठी आयोजित की गयी। वहां से वापस लौटने पर बबौर के स्मारक के ऊपर भी गोष्ठियाँ की गयी। 3 मार्च 1993 में शिवदत्त रामनगर गए वहां की समृद्ध विरासत को देखकर उन्हें लगा कि रामनगर के इतिहास और उसकी संस्कृति के ऊपर भी संगोष्ठी करवानी जरूरी है क्योंकि रामनगर डोगरी लेखकों का गढ़ था। उन्होंने रामनाथ फोनिया से संपर्क किया और 19-20 नवम्बर 1994 में संगोष्ठी

की घोषणा कर दी। यह संगोष्ठी बहुत सफल रही इस सम्मेलन के बाद रामनगर के स्थानीय लेखकों में एक नई चेतना आई। रामनगर के पश्चात शिवदत्त का ध्यान जसरोटा की तरफ गया। सन 1995 में मनसा राम चंचल के साथ मिलकर उन्होंने जसरोटे के इतिहास के ऊपर भी संगोष्ठी की।

बसोहली का शहर भी शिवदत्त के लिए हमेशा से ही आकर्षण का केंद्र था। वहां की विरासत, समृद्ध और इतिहास गौरवमय था। वहां पर श्री शिव दोवलिया ने एक संगोष्ठी की। इस बार उन लोगों ने विश्वविद्यालय का सहारा लिया वहां के उप कुलपति को संगोष्ठी का मुख्य अतिथि बनाया। 13 अप्रैल 1996 में 'बसोहली इतिहास और उसकी संस्कृति' विषय पर संगोष्ठी को आयोजित किया गया। सेमिनार में बाहर से भी कई लोग सम्मिलित हुए। इस संगोष्ठी में बसोहली चित्रकला की प्रदर्शनी भी लगाई गई। यह संगोष्ठी बहुत ही सफल रही। डुग्गर के इतिहास और संस्कृति की खोज के लिए चंद्रभागा और झेलम के विस्तार में फैले क्षेत्र की जांच-पड़ताल भी जरुरी थी। इसलिए अगस्त 1994 में शिवदत्त ने जिला राजौरी का चक्कर लगाया और जगह जगह गोष्ठियाँ आयोजित कीं। रजौरी जिले में संगोष्ठी के बाद वह पहाड़ियों के ऊपर चढ़े तथा वहाँ पर उन्होंने पुराने खंडर देखे। सुंदरवनी की स्थानीय संस्कृति के बारे में जानकारी एकत्र की। इस दौरान वह कालाकोट गए और वहां का पंचनाडा मंदिर देखा। रजौरी थन्ना मंडी गए वहां पर श्री जी.ए. मीर के घर विश्राम भी किया। शिवदत्त गांव गांव जगह जगह घूमते रहे और वहां की जानकारी एकत्र करते रहे। इन यात्राओं से शिवदत्त को डुग्गर के इतिहास और संस्कृति से जुड़ी अहम जानकारी प्राप्त हुई।

इसके पश्चात भी शिवदत्त के कदम नहीं रुके और वे चलते रहे यात्राएं करते रहे। अपनी इस यात्रा में उन्होंने कई मंदिर देखे, किले देखे, महल देखे, कई शिलालेख देखे, कई धार्मिक स्थल देखे, फिर भी शिवदत्त को आत्मसंतुष्टि प्राप्त नहीं हुई। अपने हाथ में झोला, कैमरा और डायरी लेकर गाँव-गाँव, शहर-शहर घूमने लगे और वहाँ से प्राप्त जानकारी को अपनी डायरी में लिखने का प्रयास करते। साथ ही जहां भी कोई भी गोष्ठी होती

उसके बारे में एक रिपोर्ट बनाकर डोगरी टाइम्स में छपने के लिए भेज देते। शिवदत्त की यात्राओं की खबर अखबारों में छपने से लोगों में उनकी पहचान भी बनने लगी थी। उन्होंने मीरा साहब, सतवारी, कपूरगढ़, बसोहली, जसरोटा, बड़ी ब्रामहण, हीरनगर, सांबा, अखनूर, सुचेतगढ़, किश्तवाड़, आदि कई जगहों की रिपोर्टिंग दैनिक कश्मीर टाइम्स में करवाई।

शिवदत्त को इन्दिरा गांधी मानव संग्रहालय भोपाल से पारंपरिक लोक विधाओं से संबन्धित एक परिचर्चा मे भाग लेने का निमंत्रण आया। यह परिचर्चा 21 से 23 जनवरी 2002 में चिंतपूर्णी में थी। इस सेमिनार में कुल 30 लोग शामिल थे जिसमें ज्योतिषी, तांत्रिक, संगीतकार, वैज्ञानिक और डॉक्टर शामिल थे।

इस संगोष्ठी में शिवदत्त अपनी पत्नी के साथ गए थे। उनकी पत्नी की इच्छा हिमांचल प्रदेश देखने की थी। तीन दिन उन्होंने चिंतपूर्णी और ज्वाला जी घूमकर बिताए फिर चिंतपूर्णी से बिलासपुर गए। रिवाल्सर की झील से गुम्पा देखते हुए वे मणिकरण पहुंचे। अगले दिन मनाली गए फिर कुल्लू से मंडी, बैजनाथ, पालमपुर, कांगड़ा, से ज्वाला देवी केरास्ते पठानकोट होते हुए जम्मू वापस आ गए।

शिवदत्त केबेटे नलीनाक्ष की नियुक्ति 2002 में अरविंद मिल्स अहमदाबाद में हुई तो उसने माँ और पिता को अहमदाबाद आने के लिए कहा। शिवदत्त 19 मार्च 2003 में रेल द्वारा अहमदाबाद पहुंचे। स्टेशन पर उनके पुत्र और पुत्र वधू दोनों ही उन्हें लेने पहुंचे थे। माँ पिताजी जी को लेकर वे अपने निवास स्थान कर्णावती पहुंचे। शिवदत्त की इच्छा थी गुजरात घूमने की इसलिए दो दिन कर्णावती में ठहरकर वे गांधीनगर अक्षर धाम मंदिर देखने निकले। मंदिर के दर्शन करके और गांधी नगर घूमकर शाम को उन्होंने जामनगर देखा। रात की बस से वे प्रातः द्वारिका गए वहाँ पर स्नान करने के पश्चात उन्होंने भगवान रणछोड़ जी का मंदिर देखा। मंदिर के दर्शन करकेवो लोग गोमती के दर्शन के लिए गए। उस समय गोमती का पानी बहुत कम था। गोमती नदी देखने के पश्चात उन्होंने द्वारिकापुरी का चक्कर लगाया और फिर बेंट द्वारिका जी के दर्शन के लिए वे लोग किश्ती से गए जो कि

द्वारिकापुरी से कोई 32 किलोमीटर दूर समुद्र के बीच बने एक टॉपू पर था। जहां जाते हुए इन्होंने रास्ते में नागेश्वर मंदिर के दर्शन भी किए।

बेंट द्वारिका में दो मंदिर थे। एक रणछोड़ राय का दूसरा शंखोद्वार का। द्वारिका जी से लौट कर वे लोग सोमनाथ के लिए निकले। जिसका मार्ग अत्यंत सुंदर और मनोरम था। कई नदी, नाले, पहाड़ पार करके शाम को वे पोरबंदर पहुंचे। पोरबंदर उनके लिए महातीर्थ के समान था क्योंकि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने इस स्थान पर जन्म लेकर इस धरती को पवित्र किया था। कुछ क्षण वहाँ रुकने के पश्चात वे लोग वहाँ से निकल पड़े और शाम सात बजे सोमनाथ पहुंचे।

सोमनाथ तीर्थ शिवदत्त को बहुत ही आकर्षक लगा। समुद्र के किनारे स्थित भगवान भोलेनाथ का मंदिर 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक है। रास्ते में उन्हें भगवान कृष्ण की समाधि मंदिर के भी दर्शन हुए। इसके उपरांत हिंगलाज माता का मंदिर, सूर्यनारायन जी का मंदिर, रामचन्द्र जी का मंदिर, भीमेश्वर महादेव जी का मंदिर, नृसिंह जी का मंदिर, सिद्धनाथ महादेव का मंदिर, बलदेव जी के मंदिर के साथ-साथ और भी कई मंदिर देखकर वे जूना गढ़ पहुंचे। जूनागढ़ एक रमणीक स्थल है। यहाँ पर इस्लामी संस्कृति के भी बहुत से चिन्ह मिलते हैं। जूना गढ़ से वे लोग गिरिनार पर्वत पहुंचे। पहाड़ चढ़ने में उन्हें बहुत ही आनंद का अनुभव हुआ। पहाड़ पर उन्होंने जैन मंदिरों के समूह देखे जिसमें नेमीनाथ, पारसनाथ, वस्तूपाल, तेजपाल के कलात्मक मठ के अतिरिक्त कई हिन्दू मठ, गौ मुखी गंगा, राणकदेवी का महल और राजुल की गुफायें भी देखी। उन्होंने दत्तात्रय जी के दर्शन भी किए। उसके पश्चात जूनागढ़ से अहमदाबाद होते हुए कर्णावती लौट आए।

कर्णावती से अगले दिन सभी लोग माउंटआबू के लिए निकल गए। माउंटआबू पहुँचकर सर्वप्रथम उन्होंने ब्रह्मकुमारी के आश्रम को देखा। रास्ते में उन्हें एक पुराना शिव मंदिर और कुछ खंडहर भी दिखे। रात में सर्वोदय रेल से वे लोग दिल्ली पहुंचे वहाँ पर उन्होंने राजघाट, विजयघाट, शक्तिस्थल आदि स्मारक के दर्शन करके रात्रि में बस से जम्मू और फिर वहाँ से कटरा पहुँच गए।

गुजरात और सौराष्ट्र की यात्रा से शिवदत्त को बहुत कुछ सीखने को मिला। गुजरात के लोगों की शालीनता, नम्रता, क्षमाशीलता, ने शिवदत्त के मन को बहुत प्रभावित किया था। सौराष्ट्र के लोग उन्हें बहुत ही भले मानस लगे किन्तु आर्थिक दृष्टि से वे लोग गुजरातियों से बहुत पिछड़े थे। उनके रहन-सहन और जीवन शैली में भी पर्याप्त अंतर था। इस यात्रा में शिवदत्त को गुजरात और सौराष्ट्र के मंदिरों की वास्तुकला का ज्ञान हुआ। शिवदत्त ने महसूस किया कि दोनों के मंदिरों की स्थापत्य कला में पर्याप्त अंतर था। सौराष्ट्र के मंदिरों के लिए प्रस्तर की शिलाओं का प्रयोग किया गया था जबकि गुजरात के मंदिरों में इनका प्रयोग कम था। शिवदत्त ने गिरिनार में जो मंदिर देखे थे उनकी वास्तुकला माउंट आबू के मंदिरों से उन्नत श्रेणी की थी।

सौराष्ट्र, माउंट आबू और गुजरात तीनों स्थानों पर जैन मत का समान प्रभाव था। शिवदत्त को यहाँ के लोग शांत, धार्मिक और दयालु स्वभाव के लगे। इस क्षेत्र के लोगों में जो अहिंसावाद का प्रभाव था वह शायद जैन धर्म का ही प्रभाव था। शिव और शक्ति की महत्ता इस प्रदेश में उतनी ही अधिक थी जितनी शिवदत्त के अपने प्रदेश में थी।

गुजरात से लौटने के बाद दो तीन महीने शिवदत्त अपने लेखन और अध्ययन कार्य में व्यस्त रहे। सितंबर महीने में शिवदत्त की पत्नी ने उनसे नासिक कुम्भ और गोदावरी में स्नान की इच्छा प्रकट की। 28 सितंबर 2003 में शिवदत्त जम्मू से सर्वोदय ट्रेन में बैठे। इस बार उनकी यात्रा का मुख्य आकर्षण मध्य प्रदेश के वे स्थान थे जिन्हें उन्होंने नहीं देखा था। ट्रेन जब दिल्ली पहुंची तो बारिश शुरू हो चुकी थी। दो दिन पश्चात वे लोग अहमदाबाद पहुंचे। वहाँ पहुँचने पर भी बारिश रुकने का नाम नहीं ले रही थी। रात्रि पुत्र के घर में बिताकर अगले दिन ही ये लोग नासिक के लिए निकल पड़े। प्रातः छह बजे वे नासिक पहुंचे। सुबह-सुबह भीड़ कम होती है यह सोचकर स्नान के लिए रामकुंड पहुंचे। गोदावरी में स्नान कर माँ-बाप का पिंड दान किया। आस-पास के सारे मंदिरों के दर्शन करने के पश्चात त्रयम्बकेश्वर की बस में बैठ कर त्रयम्बकेश्वर पहुंचे। स्नान करके निकले तो देखा कि

मंदिर के बाहर बड़ी लंबी लाइन लगी हुई थी। दर्शन किए बिना वापस लौटना यह अच्छी बात नहीं थी। इसलिए पाँच सौ रुपये देकर विश्राम के लिए एक कमरा किराये पर लिया। शाम को पुनः लाइन में खड़े हुए तो देखा कि इस समय लाइन प्रातः से भी अधिक लम्बी है। किसी तरह चलते-चलते दर्शन हुए परंतु पुलिस ने वहाँ भी रुकने नही दिया। मन भर के शिवदत्त एवं उनकी पत्नी को दर्शन न कर पाने का दुःख तो था परंतु मन में इस बात का संतोष तो था कि जिस काम के लिए आए थे वो काम तो पूरा हो गया। तीसरे दिन त्रयम्ब्केश्वर में भ्रमण कर वे नासिक के लिए चल पड़े। जब वे नासिक पहुंचे तो उस दिन तीसरा स्नान था इस कारण बस वाले ने उन्हें कोई छह किलोमीटर पीछे ही उतार दिया था। वे लोग पैदल ही चल पड़े। रास्ते में सैकड़ों लोग थे जो स्नान के लिए जा रहे थे। करीब दो बजे वे लोग राम कुंड पहुंचे। स्नान कर के वह बस अड्डे पर आ गए। वहाँ पर उन्हें कुछ लोग बिहार के दिखे जो भीमशंकर जा रहे थे। वे लोग भी उनके साथ चल पड़े। सहयात्रियों से चर्चा करते हुए उन्होंने उनके रहन-सहन और यात्रा के अनुभवों की चर्चा की। रात में उन्होंने मंदिर के दर्शन किए और फिर रात में ही वापस लौट लिए। सुबह सात बजे पूना की बस में बैठकर दस बजे पूना पहुंचे। उन्होंने रात की ट्रेन का टिकट लिया। परंतु टिकट प्रतीक्षा सूची का मिला क्योंकि ट्रेन रात की थी तो उन्होंने सोचा कि दिन में भ्रमण किया जाय और शाम तक सीट की भी पुष्टि हो जाएगी। वह सारा दिन पूना घूमें, दलित अकादमी, पारसियों के मंदिर और मुख्य स्थानों को देखा। शाम को जब वह ट्रेन के लिए पहुँचे तो उन्हें पता चला कि ट्रेन में उनकी शायिका की पुष्टि नहीं हुई है। अर्थात उनका टिकट भी स्थायी नहीं हुआ था। टिकट परीक्षक से वार्ता की तो बड़ी मिन्नत के बाद उसने, उम्र को देखते हुए ट्रेन में बैठने की अनुमति दे दी। दो रातों का सफर था। पहली रात दोनों ही पति-पत्नी ने ट्रेन की फर्श पर अखबार और चादर बिछाकर गुजारी। दिन में शिवदत्त ने लोगों से मित्रता कर ली। अपने अनुभवों से लेखपत्रों की चर्चा की और लोगों के अनुभव इकट्ठा करते-करते कब शाम हो गयी पता ही नहीं चला। तीन की सीट पर चार-पाँच लोग बैठे थे। मुश्किल ही सही परंतु दिन व्यतीत हो गया। रात में आधी शायिका मिली।

इस रात भी बैठकर और जमीन पर बिछाकर अगले दिन की प्रतीक्षा की कि कब ट्रेन जम्मू तवी स्टेशन पहुँच जाये। तीसरे दिन वह जम्मू पहुंच गए। शिवदत्त के लिए यह यात्रा भी विस्मृत न करने वाली यात्रा थी।

यात्रा से लौटने के कुछ दिन बाद मास्टर विद्याधर जी शिवदत्त के पास उनके छोटे बेटे विशालाक्ष के लिए एक लड़की का रिश्ता लेकर आये। वह लड़की पास ही के सिरा गांव के श्री तिलकराज बारात की पुत्री थी। उसका नाम सोनिका था और उसने बी.ए. किया हुआ था। बात आगे बढ़ी तो 9 फरवरी 2004 को शादी की तारीख निश्चित हो गई।

बड़ी सादगी और बिना किसी दिखावे के शिवदत्त ने अपने कुछ खास करीबी रिश्तेदारों की उपस्थिति में अपनी बाकी संतानों की ही भाँति विशालाक्ष का विवाह कार्य सम्पन्न करवाया।

इस विवाह में उनके बड़े बेटे ने भी आर्थिक मदद की। छोटे बेटे ने भी विवाह से पहले सभी आवश्यक वस्तुएँ पहले से ही बना लीं थीं। इसलिए बड़े बेटे पर भी कोई अतिरिक्त भार नहीं पड़ा। शादी की सारी तैयारी शिवदत्त की बड़ी बहन पुष्पा ने की थी इस कारण शिवदत्त पर भी कोई भार नहीं पड़ा।

छोटे पुत्र के विवाह के बाद शिवदत्त अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों से मुक्त हो गए थे।

2004 में कुम्भ महापर्व का आयोजन उज्जियनी में होना था। शिवदत्त की पत्नी की वहाँ जाने की बड़ी इच्छा थी। शिवदत्त के पास भी उन दिनों कोई खास कार्य नहीं था इसलिए 12 अप्रैल 2004 को वे लोग पैंथल से कुम्भ में जाने के लिए निकल पड़े। 6 बजे शाम को जम्मू से बस पकड़ी तो सुबह आठ बजे हरिद्वार पहुंचे। बस वाले ने उन्हें कनखल उतार दिया जो कि कोई पाँच किलोमीटर पीछे था। किसी तरह हाँफते हुए 12 बजे वे लोग हरि की पौढ़ी पहुंचे। स्नान करने के पश्चात रात में करीब आठ बजे ट्रेन से दिल्ली पहुंचे। ट्रेन में ही किसी से पता चला यहाँ की अगली ट्रेन

निजामुद्दीन स्टेशन से मिलेगी इसलिए वे लोग आटो रिक्शा करके सीधे निजामुद्दीन स्टेशन पहुंचे। टिकट लेकर सामान्य डिब्बे में ही बैठ गए। डिब्बा खचाखच भरा हुआ था इस कारण उन्हें बड़ी असुविधा हुई। किसी तरह सुबह 9 बजे भोपाल पहुंचे। वहाँ से बस अड्डे पर पहुंचे तो उज्जैन की बस तैयार खड़ी थी। जहां पर जगह मिली वहीं पर वह लोग बैठ गए। इस हड़बड़ में भोपाल का पूरा शहर तो वे नहीं घूम पाये किन्तु रास्ते में जो झीलें आयीं वे देख ली। तीन घंटे की यात्रा के बाद वे उज्जैन पहुंचे। सामान रखकर क्षिप्रा नदी में स्नान किया फिर उज्जैन के बाजार में स्थित चार धाम मंदिर के दर्शन किए। वहाँ से पैदल ही महाकालेश्वर मंदिर के दर्शन के लिए गए। इस मंदिर के भित्ति चित्रों को देखकर शिवदत्त को एक अलग ही अनुभूति हुई। इस मंदिर में भी दर्शन के लिए लाइन लगी हुई थी किंतु व्यवस्था अच्छी होने के कारण उन्हें ज्यादा इंतजार नहीं करना पड़ा। मंदिर के अंदर किसी को भी जाने की इजाजत नहीं थी इसलिए महाकालेश्वर लिंग के दूर से ही दर्शन कर के वे बाहर आ गए। उज्जैन शिवदत्त को बड़ा ही उजड़ा हुआ शहर प्रतीत हुआ। महाराजा विक्रमादित्य की राजधानी होने के कारण इतिहास के साहित्य में इस स्थान का जितना अधिक व्याख्यान किया गया था वह शिवदत्त को मात्र कोरी गाथा ही लगा। फिर भी गणेश जी की मूर्ति, हरि सिद्धदेवी का मंदिर, श्री राम मंदिर, गोपाल मंदिर, काल भैरव, श्री मंगल नाथ, भर्तहरि गुफा, संदीपनि का आश्रम, सिद्ध वट गढ़, कालिका देवी, गणेश वेधशाला, नवग्रह मंदिर आदि देखने योग्य स्थान थे। उज्जैन की पवित्र भूमि को प्रणाम करके वे बस पर बैठकर रात्रि दस बजे इंदौर पहुंचे। रात वहीं पर होटल में विश्राम किया और प्रातः काल बस पकड़कर ज्योतिर्लिंग ओंकारेश्वर जी के दर्शन के लिए निकल पड़े। यह यात्रा शिवदत्त को बहुत ही रोमांचक लगी। पहाड़ों को चीरती हुई सड़कें और उन पर दौड़ती हुई बसों से बाहर का दृश्य शिवदत्त को बड़ा ही मोहक लगा। वे लोग मानधाता पहुंचे और नर्मदा नदी में स्नान किया तथा पुल पार करके मंदिर के परिसर में दर्शन किए और वापस लौटकर गुफा के दर्शन किए। पत्नी की इच्छा टटोलकर शिवदत्त ने वहाँ पर नौका-विहार भी किया।

कुछ देर वहाँ देखने योग्य स्थलों को देखकर वह बस अड्डे से बस लेकर इंदौर पहुंचे। इंदौर से बस लेकर छह बजे अहमदाबाद लौट आए। तीन दिन अहमदाबाद में रहकर झील जू, साबरमती आश्रम देखा, आसाराम बापू का आश्रम देखा, कई मंदिर भी देखे और अहमदाबाद से ट्रेन पर बैठ कर जम्मू पहुँच गए। शिवदत्त की यह यात्रा 13 दिनों की थी।

पर्व से संबन्धित एक यात्रा शिवदत्त ने अगस्त 2004 में भी की थी। उनकी पत्नी ने आस-पास की महिलाओं का अनुसरण करके भगवान शिव के मंदिर में जाके छह इतवार को दिये जलाए थे और फिर उनका मोख (उद्यापन)भी किया था। उसे यह भी ज्ञात हुआ था कि यदि वो मनमास में गंगा में स्नान करेगी तो उसे पुण्य मिलेगा। पत्नी ने अपने मन की बात शिवदत्त से की, शिवदत्त को जब ट्रेन का टिकट नहीं मिला तो बस में बैठकर वे हरिद्वार पहुंचे। हरि की पौढ़ी में स्नान किया फिर बाजार घूमने निकले। वो रात शिवदत्त ने हरिद्वार में ही बिताई। दूसरी सुबह देहरादून की बस पकड़कर देहरादून पहुंचे। वहाँ से बस लेकर मसूरी गए। मसूरी के बारे में उन्होंने बहुत कुछ सुना था परंतु वहाँ पर पहुँचने पर निराशा ही हाथ लगी क्योंकि वहाँ पर कोई भी स्थान ऐसा नहीं था जो देखने योग्य हो। हाँ रास्ते के दृश्य बहुत ही सुंदर थे इसलिए वे उन्हें ही देखते रहे। मसूरी पहुँचकर उन्होंने मालरोड पर एक कमरा लिया उसमें सामान रखकर पत्नी के साथ घूमने निकल पड़े। सामने ही उन्हें मसूरी का पुस्तकालय दिखाई पड़ा। वे बहुत ही प्रसन्न हुए सोचने लगे कि चलो कोई चीज तो ऐसी है जो देखने योग्य है। पुस्तकालय बहुत पुराना था। शिवदत्त ने कुछ पुस्तकें पढ़ने के लिए खरीदीं और पुस्तकालय से बाहर आ गए। आस-पास का बाजार घूमे। रास्ते में ही उन्हें गोविंदगढ़ के एक दंपत्ति मिल गए तो उनसे थोड़ी-बहुत बात-चीत और जान-पहचान हुई। रात मसूरी में ही बिताई। सुबह उठे तो देखा कि बहुत ज्यादा बारिश हो रही थी। उन्हें वापस भी लौटना था। किसी तरह वे बस अड्डे पहुँचे। बस से देहरादून, देहरादून से सहारनपुर, सहारनपुर से अंबाला पहुंचे। अंबाला में बहुत भयंकर बाढ़ आई हुई थी। सड़क रास्ते सभी दरिया बने हुए थे। वह बड़ी मुश्किल से वे लुधियाना पहुंचे और वहाँ से रात की बस लेकर कटरा और फिर पैंथल पहुंचे।

पत्नी को तीर्थों की यात्रा कराने के बाद शिवदत्त को लगा कि उन्होंने अपने पति-धर्म का पालन किया है।

जम्मू के बाहर के विश्वविद्यालयों से भी शिवदत्त को, परिचर्चाओं में शामिल होने के लिए आमंत्रण आते रहते थे। कई बार वे उसमें सम्मिलित होने जाते थे और कई बार अधिक व्यस्त होने के कारण नहीं भी जाते थे। शिवदत्त को एक बार शेख बाबा चेयर पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़ से आमंत्रण आया। उन्होंने सूफी कवियों पर दो दिवसीय सेमिनार 9 से 10 फरवरी 2002 में रखा हुआ था। साहित्य अकादमी की देख-रेख में आयोजित होने वाले इस सेमिनार में देश के प्रसिद्ध विद्वान भाग ले रहे थे। सेमिनार के संयोजक श्री दीपक मनमोहन सिंह ने शिवदत्त को जम्मू कश्मीर के सूफी संत कवियों पर एक शोध पत्र प्रस्तुत करने के लिए कहा।

शिवदत्त के लिए ये नया विषय था। डुग्गर की तो उन्हें जानकारी थी किन्तु कश्मीर के संबंध में उनकी जानकारी कम थी। इस कार्य को करने के लिए उन्होंने सूफी परंपरा, उसके इतिहास और साहित्य से संबन्धित जरूरी साहित्य पढ़ा और शोध पत्र तैयार किया। यह शोधपत्र उन्होंने 9 फरवरी को पढ़ा। उपस्थित विद्वानों ने उनके शोध पत्र की बड़ी प्रशंसा की। जम्मू लौटकर उन्होंने डुग्गर की सूफी परंपरा पर काम करना शुरू किया और एक नई पुस्तक 'डुग्गर के दरवेश' का प्रकाशन 2005 में स्वयं के ही प्रकाशन केंद्र में किया।

शिवदत्त को एक आमंत्रण इंडियन सोसाइटी फॉर बुद्धिस्ट स्टडीज से आया। यह संस्थान राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर में तीन दिवसीय सम्मेलन 1 से 3 अक्तूबर 2004 में आयोजित कर रहा था। इस संस्था के सचिव ने शिवदत्त को डुग्गर में बौद्धमत विषय पर शोधपत्र पढ़ने के लिए बोला था। शिवदत्त ने अध्ययन करके शोधपत्र तैयार किया और जयपुर पहुंचकर अपने लिखे हुए शोधपत्र को पढ़ा। उस सम्मेलन में आए हुए विद्वानों को सुनकर शिवदत्त को एक नयी पुस्तक लिखने की प्रेरणा मिली। इस सम्मेलन के संयोजक ने आखिरी दिन उन्हें राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय, त्रिवेणी धाम और पुराने किले के दर्शन कराए। त्रिवेणी धाम के संत शिरोमणि श्री

नारायण दास के दर्शन भी उन्होंने किए। उनका संबंध श्री रामानन्द संप्रदाय से था। राजस्थान में रामानन्द जी के नाम पर एक विश्वविद्यालय भी था। शिवदत्त ने अपनी कुछ पुस्तकें नारायण दास जी को उपहार स्वरूप भी दीं।

जयपुर जाने और कई विद्वानों के संपर्क में आने से शिवदत्त को बौद्ध दर्शन को और करीब से जानने का अवसर मिला। जयपुर से लौटकर वे मथुरा और वृन्दावन गए और वहाँ से अपने साथ निंबार्क साहित्य लेकर वापस जम्मू आए।

जयपुर से लौटकर शिवदत्त ने दो पुस्तकों की रचना की। 'डुग्गर में बुद्धमत' और 'डुग्गर के निम्बार्क संत'। 'डुग्गर में बुद्ध मत' का प्रकाशन साहित्य संगम जम्मू ने 2005 में किया और 'डुग्गर के निम्बार्क संत' का प्रकाशन शिवदत्त ने स्वयं के ही प्रकाशन केंद्र में किया। साहित्य संगम ने शिवदत्त की एक और पुस्तक का प्रकाशन किया जिसका नाम था 'डुग्गर की ऐतिहासिक नारियां' इसकी प्रेरणा शिवदत्त को चित्तौरगढ़ की यात्रा से मिली थी।

9 अगस्त को शिवदत्त की रेडियो स्टेशन में नाग देवतों पर रिकॉर्डिंग की गई थी। वहाँ से लौटने पर शिवदत्त को पता चला कि बड़े बेटे का पुत्र दिव्याक्ष बीमार है और अस्पताल में भर्ती है। दूसरे दिन सुबह ही शिवदत्त अपनी पत्नी के साथ अहमदाबाद के लिए निकले पड़े और सीधे अस्पताल पहुँच गए। उस समय तक पोते की हालत में बहुत सुधार था। तीसरे दिन उसे अस्पताल से छुट्टी मिल गयी और वे उसे घर ले आए। उस समय उनका पुत्र माइम नगर सर्जन टावर में रहता था। उसे बैंगलोर काम पर जाना था और पुत्र वधू भी स्कूल में विज्ञान की शिक्षिका थी। इसलिए पोते की देखभाल के लिए दोनों ही अहमदाबाद में ही रुक गए।

अगस्त का महीना और बारिश के मौसम में न अंदर चैन था और न बाहर। शिवदत्त के जिज्ञासु एवं भ्रमणीय चित्त के लिए यह बहुत ही मुश्किल वक्त था। यात्राओं में ट्रेन और बस की सीट न मिलने से होने वाले कष्ट से भी मुश्किल। शिवदत्त समय बिताने के लिए माइम नगर के नारायण स्वामी

के मंदिर जाने लगे। वहाँ पर आए हुए लोगों से गपशप करने में अच्छा समय बीत जाता था।

एक दिन शिवदत्त मंदिर में बैठे थे उस दिन ज्यादा भीड़ भी नहीं थी। उनके मन में विचार आया कि वे कोई नयी पुस्तक लिखें। फिर सोचने लगे कि किस विषय पर लिखूँ। कुछ विचार करने पर निष्कर्ष निकाला कि आत्मकथा लिखूँ। वह घर से खाली हाथ ही आए थे इसलिए स्टेशनरी की दुकान पर गए वहाँ से कागज का दस्ता लेकर आए और आत्म कथा लिखनी प्रारम्भ की। शुरू-शुरू में कुछ परेशानियाँ आयीं पर धीरे-धीरे सब समझ में आने लगा कि क्या लिखना है और वे लिखते चले गए।

29 अगस्त को जन्माष्टमी थी और उन्हें घर वापस भी लौटना था। तब-तक वे 150 पृष्ठ लिख चुके थे। 15 पृष्ठ ट्रेन में लिखे और 26 को जम्मू पहुँच गए। कटरा पहुँच कर रात बहन के घर बिताई और सुबह पैंथल पहुंचे। अक्टूबर 2005 में शिवदत्त ने अपनी पुस्तक आत्म कथा को सम्पूर्ण करके एक अजीब से सुख का अनुभव किया।

पोते की सेहत की खबर लेने एक बार फिर से वे दिसंबर महीने में अहमदाबाद गए। 17 दिसंबर को जम्मू से चलकर 18 दिसंबर को वे अहमदाबाद पहुंचे। बहू को छुट्टियाँ थी और बेटे ने भी छुट्टी ले ली थी। पुत्र की कार से सभी 23 दिसंबर को अहमदाबाद से चलकर रात अम्बा जी पहुंचे। रात में ही दर्शन कर सभी ने रात अम्बा जी के ट्रस्ट भवन में बिताई। स्थापत्य कला की दृष्टि से यह एक विलक्षण मंदिर था। इसके ऊपर चाँदी की परत चढ़ी थी।

अम्बा जी से निकल कर वे लोग आबू रोड आए और फिर वह नाथद्वार के लिए चल दिये। करीब तीन किलोमीटर चलने के पश्चात उन्हें हल्दी घाटी का बोर्ड दिखाई दिया पता चला कि वह रोड हल्दी घाटी जाती है। यह घाटी वहाँ से कोई 25 किलोमीटर दूर थी। हल्दी घाटी के रास्ते में भीलों की बस्तियाँ थीं। शिवदत्त ने सोचा कि हल्दी घाटी की मिट्टी का रंग हल्दी की तरह पीला था शायद इसीलिए हल्दी घाटी कहते थे। रास्ते में

महाराणा प्रताप का एक स्मारक और संग्रहालय भी दिखा। वे इस वीर भूमि से निकल कर नाथ द्वार की ओर चल दिये। नाथ द्वार एक छोटा सा शहर था। इसमें भगवान श्री कृष्ण जी का एक मंदिर था जिसके गर्भ गृह में प्रतिष्ठित मूर्ति कला की दृष्टि से बेजोड़ थी। नाथ द्वार से वे लोग उदयपुर गए और रात उदय पुर में ही बिताई। उदयपुर की झील, महल, बाग और संग्रहालय को देखकर वे लोग उसी रात अहमदाबाद लौट आए। रास्ते में पहाड़ी पर माँ वैष्णो देवी का बना हुआ प्रतिरूप मंदिर भी दिखा। अहमदाबाद से वे लोग मुंबई गए और एक दिन में पूरी मुंबई घूमकर वापस अहमदाबाद लौट आए।

अहमदाबाद में रहते हुए शिवदत्त के हाथ 21 दिसंबर का गुजराती अख़बार लगा। अख़बार में विज्ञापन था कि केंद्रीय निदेशालय ने आर्थिक सहायता पाने के लिए लेखकों की पृविष्टियाँ मांगी थीं। इस विज्ञापन ने शिवदत्त को बहुत अस्थिर कर दिया था। उनकी इच्छा थी कि वे भी अपनी पाण्डुलिपि भेजें। इसकी अंतिम तारीख 30 जनवरी थी। शिवदत्त ने आठ दस दिन और अहमदाबाद में बिताए और फिर 30 दिसंबर का टिकट लेकर 31 दिसंबर को 12 बजे वे पैंथल लौट आए। शिवदत्त ने जुलाई 2005 में किश्तवाड़ विषय पर आयोजित एक संगोष्ठी में भाग लिया था और पेपर भी प्रस्तुत किया था। उन्होंने अपने शोध के लिए एकत्रित सामाग्री के साथ कार्य करना शुरू किया और पुस्तक 'किश्तवाड़ की संस्कृति और परंपरा' लेख पर काम करना प्रारम्भ कर दिया।

1 जनवरी से 28 जनवरी तक उन्होंने पुस्तक तैयार की और 29 जनवरी को पत्नी को साथ लेकर दिल्ली पहुंचें। 30 जनवरी को उन्होंने हिन्दी निदेशालय में अपनी पुस्तक जमा की। पत्नी की इच्छा संगम में स्नान करने की थी इसलिए दिल्ली से लखनऊ की बस में बैठ कर कानपुर गए, वहाँ से इलाहाबाद पहुंचे। उसी दिन संगम में स्नान किया और बनारस के लिए निकल पड़े। बनारस के होटल में सामान रखकर बाबा विश्वनाथ के दर्शन किए, आरती में शामिल हुए, गंगा जी के दर्शन किए, रात होटल में बिताकर सुबह अयोध्या के लिए निकल पड़े। अगले दिन राम जन्मभूमि के दर्शन किए, आस-पास के दूसरे मंदिर देखे और सरयू में स्नान भी किया। वह अयोध्या

से चलकर लखनऊ पहुंचे और वहाँ से दिल्ली की बस पकड़कर दिल्ली पहुंचे। जम्मू की ट्रेन दिल्ली से मिली। अगले ही दिन वे जम्मू पहुँच गए।

जुलाई 2006 में शिवदत्त ने लद्दाख की यात्रा की। इस यात्रा में उनके साथ उनका भांजा विधु मंगोत्रा, प्रभाकर जी, बहन पुष्पा और शांति भी थीं। एक दिन श्रीनगर में बिताया, दूसरे दिन कारगिल और तीसरे दिन लेह पहुंचे। वहाँ पर उन्होंने पेगांग झील देखी। लेह से मनाली होते हुए जम्मू वापस लौट आए।

फरवरी 2007 में शिवदत्त पत्नी को लेकर गंगासागर गए, वहाँ से जगन्नाथ पुरी, गया और पटना गए, पटना से काठमाण्डू गए वहाँ पर पत्नी को पशुपति नाथ के दर्शन कराके गोरखपुर के रास्ते घर वापस लौट आए।

अक्तूबर 2007 में शिवदत्त ने कुमाऊँ की यात्रा भी की। हल्द्वानी, नैनीताल, भीमताल, अल्मोड़ा, डीडीहाट, धारचूला, पिथौरा गढ़ की सैर की और टनक पुर के रास्ते वापस लौटे। इस यात्रा में उन्हें डुग्गर और कुमाऊँ की सांस्कृतिक शैली में बहुत समानताएं दिखाई दी।

शिवदत्त की यात्राओं का सिलसिला चलता रहा 15 फरवरी 2008 में पत्नी को लेकर पुनः अहमदाबाद गए और अप्रैल तक रहे। इस बार उनके बेटे नलीनाक्ष में उन्हें पावागढ़, पाटण, नीलसरोवर, सूर्य मंदिर, डाकोर और लोथल की सैर कराई। ये सारे स्थान पुरातत्व और ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण थे। उन्होंने गुजरात विश्वविद्यालय, गुजरात विद्यापीठ और स्थानीय गुरुकुल भी देखा।

अगस्त 2007 में शिवदत्त को कल्चरल अकादमी से पता चला कि उनकी पुस्तक के लिए सब्सिडी मंजूर हो गई है। इस पुस्तक के लिए उन्हें 12, 510/- रुपये की सब्सिडी मिली थी। शिवदत्त पाण्डुलिपि लेकर साहित्य संगम गए और प्रकाशक को पुस्तक थमाई उनकी यह पुस्तक 2007 में प्रकाशित हुई थी।

शिवदत्त की पुस्तक आत्मकथा भी तैयार थी किन्तु उनके पास इसको प्रकाशित करने हेतु पर्याप्त धन नहीं था। इस लिए उन्हें धन की आवश्यकता

थी। उन्होंने आर्थिक सहयोग के लिए केंद्रीय भाषा मैसूर को भी लिखा किन्तु वहाँ से जवाब आया कि वे आत्मकथा के लिए सब्सिडी नहीं देते हैं। शिवदत्त निराश तो हुए किन्तु हार नहीं मानी। वे कल्चरल अकादमी में 'जीवन चक्र' की प्रति जमा करवा कर वापस लौट आए। 2007 में अकादमी ने कुछ पुस्तकों के लिए सब्सिडी मंजूर की थी उनमें से एक नाम शिवदत्त की पुस्तक का भी था। अकादमी ने 13055/- रुपये की सब्सिडी मंजूर की थी। केंद्रीय हिन्दी निदेशालय ने शिवदत्त की पुस्तक 'किश्तवाड संस्कृति और परंपरा' में आवश्यक संसोधन करने के लिए वापस भेज दी थी। शिवदत्त ने आवश्यक संसोधन करके इसे आर्थिक सहयोग के लिए कल्चरल अकादमी भेजा। शिवदत्त की इस पुस्तक के लिए भी उन्हें सब्सिडी मंजूर हो गई।

इसी समय शिवदत्त की पुस्तक 'डुग्गर के योगी: स्वामी नित्यानन्द' भी छपी। इस पुस्तक के सह लेखक प्रकाश प्रेमी थे। इस पुस्तक को स्वामी नित्यानन्द शोध केंद्र उधमपुर ने प्रकाशित किया।

सन 2009 में शिवदत्त ने अपनी आत्मकथा 'जीवन चक्र' नाम से लिखी यह पुस्तक शिवदत्त की डोगरी भाषा में लिखित प्रथम पुस्तक थी जिसका प्रकाशन शिवालिक प्रकाशन ने किया। अपनी आत्मकथा को लिखने से पूर्व शिवदत्त ने कई महापुरुषों की आत्मकथाओं का अनुशीलन किया। शिवदत्त अपनी आत्मकथा 'जीवन चक्र' पुस्तक का विमोचन डोगरी लेखक सम्मेलन में करवाना चाहते थे। इस सम्मेलन का आयोजन जेएंडके अकादमी आफ आप आर्ट कल्चर एंड लैंग्वेज के द्वारा उधमपुर में किया जा रहा था। शिवदत्त ने इस संबंध में अधिकारियों से चर्चा की तो उन्होंने पद्मश्री पद्मा सचदेवा की पुस्तक का विमोचन तो किया परंतु शिवदत्त के निवेदन को साफ तौर पर मना कर दिया। जब इस बात का पता शिवदत्त को चला तो वे निराश हो गए परंतु उन्होंने पुस्तक का विमोचन हुए बिना ही अपनी पुस्तक सम्मेलन में आए हुए लगभग 200 डोगरी लेखकों को भेंट की जिससे उन्हें काफी आत्म संतुष्टि हुई। इसी सम्मेलन में शिवदत्त ने 'जिला उधमपुर की डोगरी कविता की देन' शोध पत्र को भी पढ़ा जिसके लिए उनकी काफी सराहना हुई। इसी सम्मेलन में अकादमी के सचिव जफर

इंकलाब मन्हास ने अकादमी की तरफ से शिवदत्त को उनकी साहित्य सेवाओं के लिए सम्मानित भी किया। यह सम्मेलन 21 मार्च से 22 मार्च 2009 में 2 दिनों तक चला। इस सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य उधमपुर में साहित्य चेतना पैदा करना था शिवदत्त चाहते थे कि उनकी पुस्तक 'जीवन चक्र' को अधिक से अधिक लोग पढ़े इसलिए 50 पुस्तकें अपने थैले में डालकर 28 अप्रैल को जम्मू आ गए और जम्मू विश्वविद्यालय के कई विभागों को भेंट कीं। साथ ही जम्मू के कॉलेजों और साहित्य केंद्र में भी पुस्तकें बाटीं।

वर्ष 2009 में शिवदत्त ने अपना शोधकेन्द्र किश्तवाड़ चुना। किश्तवाड़ शिवदत्त के लिए विशेष आकर्षण का क्षेत्र था। इस क्षेत्र की बहुरंगी संस्कृति से शिवदत्त बहुत प्रभावित थे। किश्तवाड़ पर शिवदत्त ने जो शोध कार्य किया उसे उन्होंने 'किश्तवाड़ संस्कृति और परंपरा' के नाम से पुस्तक के रूप में प्रकाशित करवा कर उसे किश्तवाड़ संस्कृति के अध्येता माननीय जिला आयुक्त को समर्पित किया।

5

नव अलंकरण नव सम्मान

1 जनवरी 2020 के सूर्य के उदित होने के साथ साथ लोगों को नव वर्ष की शुभकामनाएं देने और लेने में पूरा दिन हर्षोल्लास में बीता। इसी समय इनकी चार नयी पुस्तकें प्रकाशित हुईं थीं। जिनके नाम थे 'डुग्गर के ऐतिहासिक स्मारक', 'डुग्गर की ऐतिहासिक समाधियाँ', 'डुग्गर के सर' और 'डुग्गर के तालाब'। स्थानीय पत्र-पत्रिकाओं में इनकी समीक्षायें भी छपी थी। पत्रकार ओ. पी. गुप्ता और डॉ. ललित गुप्ता ने डुग्गर की धरोहरों पर लिखित इन पुस्तकों की खुलकर समाचार पत्रों में चर्चा की थी। इसके बाद लोहड़ी का पर्व आया। डोगरा समाज में इस पर्व को विशेष महत्व दिया जाता है। इस पर्व को सपरिवार मनाने की प्रथा है। शिवदत्त पर्व को परिवार के साथ मनाने के लिए पैतृक गाँव पैंथल चले गए। पैंथल में अपनी ये नयी पुस्तकें बांटने के लिए साथ ले गए थे। 17 जनवरी को अपनी ये पुस्तकें कटरा में मित्रों को भेंट कीं।

प्रोफेसर शिवदत्त निर्मोही लगभग एक सप्ताह अपने पैतृक गाँव पैंथल में ही रहे और वहाँ रहकर उन्होंने अपनी नई पुस्तकों के लिए पाँच विषय चुने- 1. डुग्गर की परा-विद्या, 2. डुग्गर की बावलियाँ, 3. उधमपुर संस्कृति और विरासत, 4.डुग्गर के सन्त, 5. डुग्गर का लोक संगीत। इन विषयों से संबन्धित सामग्री लेकर वे उधमपुर वापस लौट आए।

कुछ दिन ऐसे ही बीत गए, शिवदत्त फिर से अपने लेखन कार्यों में जुट गए। वह 25 जनवरी कि सुहानी सुबह थी जब शिवदत्त अपनी कुर्सी पर आराम से बैठकर चाय की चुसकियाँ ले रहे थे। अचानक ही फोन की

घंटी बजी शिवदत्त ने चाय पीना छोड़कर फोन उठाया तो उधर से आवाज आई मैं गृह मंत्रालय दिल्ली से बोल रहा हूँ आपको अलंकरण करने का प्रस्ताव भारत सरकार के विचाराधीन है। अंतिम निर्णय शाम को होगा। सुनते ही शिवदत्त के हाथों से फोन का रिसीवर नीचे गिर गया। उनका शरीर काँप रहा था। उन्होंने काँपते हाथों से रिसीवर उठाकर कान से लगाया। उधर से आवाज आ रही थी "यदि आपके पक्ष में निर्णय होगा तो आप यह सम्मान स्वीकार करेंगे?" शिवदत्त ने जवाब दिया यदि ऐसा होता है तो यह अलंकरण मेरे प्रदेश के लिए गौरव का विषय होगा। मेरे प्रदेश का मान-सम्मान बढ़ेगा। शिवदत्त का जवाब सुनते ही उधर से फोन कट गया।

शिवदत्त के मन में एक अजीब सी बेचैनी हो रही थी कि न जाने क्या होगा। सारा दिन फोन का इंतजार करते रहे। रात्रि का भोजन नियत समय पर करने के पश्चात वे यह सोच कर विश्राम करने चले गए कि अब कोई फोन नहीं आएगा।

रात्रि में करीब नौ बजे फोन की घंटी बजी तो शिवदत्त ने फोन उठाया उधर से आवाज उनके एक मित्र विक्रम गुलाटी की थी वह फोन पर जोर से बोले प्रो. साहब आपको भारत सरकार ने पद्मश्री पुरस्कार से अलंकृत करने की घोषणा की है। ऐसा मुझे मेरे दिल्ली के एक मित्र ने बताया है। शिवदत्त ने उनका धन्यवाद किया और फोन रखकर जैसे ही लेटे फोन की घंटी पुनः घनघना उठी। फोन पर जस्टिस जी. डी. शर्मा थे जो कि शिवदत्त के सहपाठी थे। उन्होंने बड़े स्नेह के साथ बधाई दी और यह भी बताया कि यह शिवदत्त के परिश्रम और विशेष योगदान के साथ-साथ प्रदेश का गौरव है।

इसके पश्चात फोन की घंटी बजने का सिलसिला प्रारम्भ हो गया। उन्हें हर तरफ से बधाई के फोन आने लगे। रात में ही उन्हें स्थानीय समाचार पत्रों से फोन। आए वे शिवदत्त से उनकी फोटो की मांग कर रहे थे। शिवदत्त उन्हें फोटो भेज सकें ऐसी कोई व्यवस्था उनके पास नहीं थी। इसलिए वे बहन के घर गए और भांजे विधु से मदद ली। किन्तु रात 12 बजे पुनः समाचार पत्रों से फोन आने लगे तो उन्होंने बेटे नलीनाक्ष और बेटी अलका को यह काम सौपा।

26 जनवरी को गणतन्त्र दिवस का पवित्र दिन था। प्रात: 5 बजे से ही शिवदत्त के घर फोन की घंटियाँ बजने लगीं। 25 जनवरी के रात्रि के समाचार में पद्मश्री पुरस्कारों की घोषणा हो चुकी थी। सारा दिन बधाई देने वालों का तांता लगा रहा था। उस दिन करीब 2000 से भी ज्यादा लोगों के बधाई के फोन आए। कई संस्थाओं की और से लोग उनका सम्मान और अभिनंदन भी करने आए।

27 जनवरी को स्थानीय और राष्ट्रीय स्तर के समाचार पत्रों में शिवदत्त को पद्मश्री मिलने का समाचार प्रकाशित हुआ। जिसके कारण उन्हें देश और विदेश में रहने वाले संबंधियों और मित्रों के फोन आए थे। कई स्थानीय और राष्ट्रीय स्तर के टी.वी. चैनलों ने शिवदत्त के साक्षात्कार को प्रसारित किया। जिसने उनके बारे में सुना, उन सबने उनको बधाई दी। 28 जनवरी को भी बधाइयों का सिलसिला लगा रहा। इसी दिन जम्मू कश्मीर राज्य के पूर्व उपमुख्य मंत्री और उनकी पत्नी ने भी बधाई संदेश भेजा। सभी लोगों के संदेश प्राप्त करके शिवदत्त आत्म विभोर हो गए।

29 जनवरी को सिटीजन क्लब शिवदत्त के सम्मान में एक भव्य समारोह का आयोजन किया था। जिसमें 300 से अधिक वरिष्ठ नागरिकों, पत्रकारों, साहित्यकारों, कलाकारों तथा वाणिज्य जगत के लोगों ने भाग लिया। कई लोगों ने शिवदत्त के व्यक्तित्व और कृतित्व पर भाषण दिया। कुसुम अंतरा जी ने उनके व्यक्तित्व और कृतित्व पर एक कविता भी पढ़ी थी जिसकी सभी बहुत सराहना की।

30 जनवरी को पैंथर पार्टी के प्रधान बलवंत सिंह मनकोटिया ने उनका सम्मान किया। 31 जनवरी को सीनियर सिटीजन फोरम कटरा ने उनका सम्मान किया। 1 फरवरी को स्नातकोत्तर महाविद्यालय उधमपुर में उनका सम्मान हुआ था। 2 फरवरी को शहीद कृष्ण सिंह मेमोरियल वेल्फेयर कमेटी उरलिया ने शिवदत्त के साथ उनकी पत्नी अनुसूया जी का भी सम्मान किया। 3 फरवरी को मास्टर हेमराज पाधा मेमोरियल कमेटी ने उनका सम्मान किया था।

3 फरवरी को वे श्री माता वैष्णो देवी विश्वविद्यालय के प्रो. अनिल तिवारी के आमंत्रण पर उनको धन्यवाद अर्पित करने भी गए थे। डॉ. अनिल तिवारी ही वो महानुभाव थे जिहोंने सितंबर 2019 में इनका नाम पद्मश्री के लिए प्रस्तावित किया था। उनसे पहले जे. एंड के. अकेडमी ऑफ आर्ट कल्चर एवं लैंगवेजेज ने भी 2017 में शिवदत्त से पद्मश्री के लिए उनका जीवन वृत्त मांगा था। 2018 में इसी अलंकरण के लिए शिवदत्त का नाम डुग्गर हेरिटेज सोसाइटी उधमपुर ने भी प्रस्तावित किया था किन्तु तब उनका चयन नहीं हुआ था। उनके नाम की अनुशंसा कहते हैं कि जम्मू-कसमीर रिसर्च सेंटर दिल्ली ने भी की थी।

5 फरवरी को डोगरी के प्रख्यात साहित्यकार देश बंधु डोगरा नूतन और उनकी पत्नी दर्शना ने भी उन्हें बधाई संदेश भेजा। इन सभी के अतिरिक्त फ्रीडम फाइटर फाउंडेशन जम्मू, इतिहास विभाग जम्मू विश्वविद्यालय, आर्य समाज शाखा ऊधमपुर, राष्ट्रीय सेवक संघ जम्मू कश्मीर रिसर्च सेंटर दिल्ली, भारत तिब्बत सीमा दल, समाधान फाउंडेशन जम्मू, डोगरा सदर सभा जम्मू की उधमपुर शाखा, के. सी. किड्स स्कूल उधमपुर, ब्राह्मण सभा अनेकों संस्थाओं ने शिवदत्त का सम्मान किया। कइयों ने पत्र लिखकर शुभकामनायें दी। इनके अतिरिक्त कई अन्य संस्थाएं भी थीं जिन्होंने शिवदत्त का सम्मान किया उनमें स्नातकोत्तर महाविद्यालय उधमपुर, एस. पी. स्कूल उधमपुर, प्रागैसिव यूथ सोसाइटी रामनगर, मेरी पहचान संस्था, जम्मू, आकाशवाणी जम्मू, दूरदर्शन केंद्र जम्मू, जन संघर्ष मोर्चा, उधमपुर, केंद्रीय राज्यमंत्री जितेंद्र सिंह, माउंट लिटरा स्कूल, कठुआ, तुषार मेमोरियल ट्रस्ट, उधमपुर, नेहरू युवा केंद्र गढ़ी, श्री कैलख ज्योतिष एवं वैदिक संस्थान ट्रस्ट रामपुर, जम्मू, सृजन, उधमपुर, जम्मू-कश्मीर राष्ट्र भाषा प्रचार समिति, जम्मू, केंद्रीय हिन्दी निदेशालय, लोक संगीत कला केंद्र, जम्मू, डोगरी संस्था, जम्मू, राजकीय हायर सेकेन्डरी स्कूल, पैंथल, भारतीय योग संस्थान उधमपुर शाखा, डुग्गर हेरिटेज सोसाइटी, उधमपुर, भारत स्काउट गाइड एसोसियएशन, जम्मू, सबरस साहित्य संगम, कठुआ, डोगरी साहित्य संस्था धमवाल तथा जागृति उधमपुर आदि उल्लेखनीय हैं।

3 अप्रैल 2020 को गृहमंत्रालय भारत सरकार की ओर से शिवदत्त को राष्ट्रपति भवन में आयोजित होने वाले समारोह में आमंत्रित किया गया किन्तु कोरोना-19 महामारी के प्रकोप की वजह से यह कार्यक्रम स्थगित हो गया था।

शिवदत्त उधमपुर में ही थे तभी उन्हें सूचना मिली कि उनका छोटा बेटा बीमार है और अस्पताल में भर्ती है शिवदत्त भांजे के साथ अस्पताल पहुँचें तो पता चला कि जांच के बाद डॉ. ने उन्हें छुट्टी दे दी थी। शिवदत्त उसे लेकर पैंथल आ गए। बेटे का स्वास्थ्य ठीक नहीं होने के कारण वहीं पर रुक गए। अगले दिन उन्हें सूचना मिली कि उनके उधमपुर वाले घर में चोरी हो गयी थी। वे बेटे के साथ उधमपुर वाले घर पहुंचे घर की अस्त-व्यस्त हालत देखकर उन्होंने निश्चित किया कि आज के बाद वो यहीं रहेंगे।

अप्रैल 2020 में कोरोना का संक्रमण पूरे देश में फैला तो उधमपुर भी उसके प्रभाव से नहीं बच पाया। कोरोना के संक्रमण के कारण लोगों का घर से निकालना बंद हो गया सारा माहौल डर और घुटन भरा हो गया था।

शिवदत्त ने समय व्यतीत करने के लिए घर में पड़ी हुई पुस्तकों का अध्ययन करना प्रारम्भ किया। अप्रैल और मई के महीने में उन्होंने 20 के करीब पुस्तकों का अध्ययन किया था। जिसमें अधिकांश हिन्दी और डोगरी में थी। उन्होंने परा-मनोविज्ञान पर भी पुस्तकें पढ़ीं। पुस्तकें पढ़ने के साथ-साथ उन्होंने लिखना भी प्रारम्भ किया।

सन 2018 में उन्होंने 'डुग्गर के तालाब' और 'डुग्गर के सर' पुस्तकें लिखीं थीं। उसके बाद उनका ध्यान बावलियों पर आकर्षित हुआ डुग्गर की शोध यात्रा के दौरान उन्होंने जिन-जिन बावलियों को देखा था उनका वर्णन अपनी डायरी में किया था। उन समग्रियों को एकत्र किया और पुस्तक लिखना प्रारम्भ किया। डुग्गर प्रदेश में बावलियों की संख्या हजारों में थी। इसलिए सब बावलियों का वर्णन एक पुस्तक में करना उनके लिए संभव नहीं था। उन्होंने अपनी पुस्तक के लिए जिन बावलियों का चयन किया उनका संबंध ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, धार्मिक तथा पर्यावरण से किसी न किसी प्रकार अवश्य था। इन बावलियों का वर्गीकरण उन्होंने जनपद के

आधार पर किया था। अगस्त में उनकी यह पुस्तक पूर्ण हुई और उन्होंने प्रकाशन के लिए प्रकाशक श्री सुदेश महाजन को सौप दी।

सितंबर माह में उन्होंने एक नवीन विषय पर काम करना प्रारम्भ किया जो था परा-मनोविज्ञान। इस पुस्तक पर पर्याप्त सामाग्री शिवदत्त के पास पहले से ही थी। इसलिए पुस्तक को लिखने में शिवदत्त को कोई खास कठिनाई नहीं हुई। नवंबर मास तक यह पुस्तक भी पूर्ण हुई और इन्होने छपने के लिए प्रकाशक को भेज दी।

2 अक्तूबर को ही शिवदत्त ने तीसरी पुस्तक भी लिखनी प्रारम्भ कर दी और उसका शीर्षक रखा 'डुग्गर के संत'। प्रातः काल में वे डुग्गर की परा विद्या पर काम करते और शाम को डुग्गर के संतों पर। परा विद्या पर काम समाप्त होने के पश्चात उन्होंने अपना पूरा ध्यान डुग्गर के संतों पर लगाया। इसके लिए उन्होंने कई संतों की जीवनियों को पढ़ा और उससे संबन्धित जानकारी एकत्र की।

पुस्तकों पर कार्य करने के साथ ही उनका अभिनंदन समारोहों और सम्मान समारोहों में भी जाना लगा रहा। पद्म श्री की घोषणा के बाद उन्हें डुग्गर की साठ से अधिक संस्थाओं ने सम्मानित किया।

जम्मू-कश्मीर (केंद्र शासित)सरकार की और से भी 25 जनवरी 2021 को शिवदत्त को लाइफ टाइम एचीव मेंट अवार्ड प्रदान करने की घोषणा की गई। इस अवार्ड की घोषणा के बाद शिवदत्त को कई साहित्यिक और सांस्कृतिक संस्थाओं ने बधाई संदेश भेजे।

शिवदत्त ने डुग्गर के लोकसंगीत पर जनवरी 21 में शोध कार्य करना प्रारम्भ किया ही था की उनकी दो पुस्तकें डुग्गर की 'परा-विद्या' और 'डुग्गर की बावलियाँ' छपकर उनके हाथ में पहुँच गईं। 'उधमपुर : संस्कृति और विरासत' सितंबर मास में छपी तथा 'डुग्गर के संत' पुस्तकें प्रकाशनार्थ हैं। शिवदत्त का शोध कार्य निरंतर चल रहा है। यह विस्मयपूर्ण है कि यह छियासी वर्ष का ओजपूर्ण व्यक्तित्व, आज भी कलम के सिपाही के रूप में पूरी चौकसी के साथ डोगरी संस्कृति कि सेवा में तत्पर है। जीवन की

अत्यंत कठिन परिस्थितियों तथा समाज और प्रदेश की राजनैतिक अथवा भौगोलिक परिस्थितियाँ भी कभी भी इस कर्मयोगी को उसके अध्ययन और लेखन से विमुख नहीं कर पायीं। आज भी वह अपने सरल स्वभाव से जल के समान सभी की ज्ञान पिपासा और स्वाभाविक सहायता हेतु तत्पर रहते हैं। शिवदत्त जो की जन सामान्य में शिव निर्मोही के नाम से विख्यात हैं, वह नयी पीढ़ी के लिए एक उदाहरण हैं। अपने शोध संकलन और साहित्य संकलन से उन्होंने डोगरी संस्कृति और साहित्य को सहेजने और सुरक्षित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई हुई है। और यह यात्रा निरंतर है......।

6

शिवदत्त के शोध साकार

कृतियाँ

1. डुग्गर की लोक गाथाएँ

डुग्गर की लोकगाथाएं प्रो. शिवदत्त निर्मोही जी की प्रकाशित प्रथम शोधपरक कृति है। इस पुस्तक का प्रकाशन 1982 में राधाकृष्ण एंड को. जम्मू द्वारा हुआ था। यह पुस्तक सात अध्यायों में विभाजित है।

प्रथम अध्याय में लोक गाथा के रूप-स्वरूप, परिभाषा, लोकगाथाओं की उत्पत्ति, निर्माण सिद्धान्त तथा वर्गीकरण पर विस्तृत चर्चा है।

द्वितीय अध्याय में आलोचनात्मक शैली में लोक गाथाओं का परिचय दिया गया है। इस अध्याय को लेखक ने चार वर्गों में रखा है देवगाथाएं, देवी गाथाएँ, नाग देवताओं की गाथाएँ तथा कुल देवताओं की गाथाएँ। इस अध्याय में कुल 42 गाथाओं पर प्रकाश डाला गया है।

तृतीय अध्याय में ऐतिहासिक गाथाओं पर प्रकाश डाला गया है। इस अध्याय में 21 गाथाओं पर प्रकाश डाला गया है। ऐतिहासिक गाथाओं में मियां नाथ, राजा किरपाल देव, राजा अमर सिंह जंदराहियाँ की गाथाएँ प्रमुख हैं।

चतुर्थ अध्याय में योग परक गाथाओं का विवरण है। इस अध्याय में कुल छह गाथाएँ संकलित हैं। जिनमें भरथरी, राजा गोपी चन्द्र तथा पीर नारंग नाथ की गाथाएँ उल्लेखनीय हैं।

पंचम अध्याय प्रणय गाथाओं पर आधारित है। इसमें राजा हौंस, कुंजु चौचलों, सुन्नी-मक्खू, आदि की गाथाओं का विरणात्मक परिचय दिया है।

छठे अध्याय में डुग्गर की लोक गाथाओं का साहित्यिक मूल्यांकन किया गया है। इस अध्याय के अंतर्गत रस परिपाक, प्रतीक विधान तथा छन्द योजना पर प्रकाश डाला गया है।

सप्तम अध्याय में डुग्गर की लोकगाथाओं का सामाजिक और सांस्कृतिक स्तर पर क्या महत्व है इस बात पर प्रकाश डाला गया है।

डुग्गर के लोक साहित्य पर लिखित यह पहली पुस्तक है। इस पुस्तक में शिवदत्त ने लोकगाथाओं की परिभाषा, स्वरूप, उत्पत्ति, सिद्धान्त से लेकर देवी, देवताओं, नाग देवताओं, कुल देवताओं, ऐतिहासिक गाथाओं, प्रणय गाथाओं तथा डुग्गर की लोकगाथाओं का विवरणात्मक परिचय दिया है। इस पुस्तक को पढ़कर हमें लोक गाथाओं का ऐतिहासिक और सांस्कृतिक दृष्टि से क्या महत्व है इस बात का पता चलता है। इस पुस्तक में लोकगाथाओं से संबन्धित विस्तृत जानकारी उपलब्ध है। लोक साहित्य में रुचि रखने वाले पाठकों के लिए यह पुस्तक अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकती है।

2. डोगरा गाँव पैंथल

डोगरा गाँव पैंथल का प्रकाशन 1986 में हुआ। इस पुस्तक को मल्होत्रा ब्रदर्स पक्का ड़ंगा, जम्मू ने प्रकाशित किया था। 92 पृष्ठों पर आधारित इस पुस्तक को लेखक ने अपने स्वर्गीय पिता को समर्पित किया है।

पैंथल प्रो. निर्मोही जी की जन्मभूमि है। इस पुस्तक को पढ़ने से लगता है कि इस पुस्तक को लिखकर लेखक ने अपनी जन्म भूमि का ऋण चुकाया है।

इस पुस्तक में गाँव की भौगोलिक स्थिति, ऐतिहासिक पृष्ठिभूमि, गाँव का नामकरण, गाँव की संरचना, गाँव का विकास और इतिहास के अतिरिक्त गाँव के पुनर्निर्माण का वर्णन किया गया है।

प्रो. निर्मोही जी ने गाँव के सांस्कृतिक पक्ष को उजागर करने के उद्देश्य से गाँव के लोगों के सामाजिक और आर्थिक जीवन के साथ-साथ धार्मिक आस्थाओं, पर्व त्योहारों, लोक नृत्यों, लोक वाद्य यंत्रों, लोक क्रीड़ाओं, लोक

अनुष्ठानों, लोकदेवताओं, लोक कलाओं तथा लोक साहित्य का अंकन भी अति संक्षिप्त शब्दावली में किया है।

लेखक ने गाँव में साहित्यिक चेतना जागृत करने का श्रेय स्वामी नित्यानन्द और हिन्दी के प्रख्यात कवि रामेश्वर 'करूण' को दिया है। रामेश्वर 'करुण'से प्रभावित होकर गाँव के युवा कवि दीनू भाई पंत ने आधुनिक डोगरी कविता को नयी दिशा दी।

डोगरा गाँव पैंथल लेखक की दृष्टि में सरस्वती पुत्रों की साधना स्थली है। इस गाँव के साहित्यकारों ने राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाकर गाँव के गौरव को बढ़ाया है।

इस पुस्तक में लेखक ने अपनी जन्मस्थली पैंथल ग्राम की विशेषताओं का वर्णन किया है। जिसके अंतर्गत डोगरा गाँव पैंथल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, गाँव का विकास, वहाँ के पर्व त्योहारों, लोक नृत्यों, लोक अनुष्ठानों, लोक देवताओं, लोकसाहित्य, स्वामी नित्यानन्द, कवि रामेश्वर 'करुण आदि का वर्णन किया है जिससे हम पैंथल ग्राम के अतीत और वर्तमान काल की विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है। एक स्थान विशेष की विस्तृत एवं रोचक वर्णन किस प्रकार से किया जा सकता है, पाठकों के लिए यह पुस्तक इस बात का मनोहर एवं लेखकों के लिए एक मनोहारी अनुभव है। पैंथल, ग्राम डुग्गर संस्कृति के साधकों का एक महत्वपूर्ण स्थल रहा है। श्री माता वैष्णो देवी के त्रिकूट पर्वत के चरणों में स्थित इस ग्राम क्षेत्र की साधना ही है कि इसके परिक्षेत्र में भारत के श्रेष्ठ संस्थानों में एक श्री माता वैष्णो देवी विश्वविद्यालय, श्री माता वैष्णो देवी नारायणा सुपरस्पेशयलिटी अस्पताल और नर्सिंग विद्यालय इत्यादि अपनी सेवा से लोगों को लाभान्वित कर रहे हैं।

3. डुग्गर के देव स्थान

डुग्गर के देवस्थान पुस्तक विनोद बुक डिपो, पक्का ड़ंगा, जम्मू-कश्मीर धर्मार्थ ट्रस्ट के आर्थिक सहयोग से सन 1988 में प्रकाशित हुई। यह पुस्तक नौ अध्यायों में समाहित है। लेखक ने 162 पृष्ठों की इस पुस्तक की रचना धार्मिक पर्यटन को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से की। 1992 में इस पुस्तक का द्वितीय संस्करण भी प्रकाशित हुआ।

इस पुस्तक के प्रथम अध्याय में डुग्गर के देवताओं का उल्लेख जातियों-प्रजातियों के आधार पर किया गया है।

द्वितीय अध्याय में डुग्गर के आदिदेव महादेव के मंदिरों और स्थानों का संक्षिप्त विवरण दिया गया है। इस अध्याय में शुद्ध महादेव, विल्केश्वर, कामेश्वर, वीरेश्वर, साम्मेश्वर सहित 33 महादेव मंदिरों का वर्णन है।

तृतीय अध्याय देवी पीठों एवं शक्ति स्थलों पर आधारित है। इसमें 33 शक्ति स्थलों का विवरण दिया गया है। जिनमें - वैष्णो देवी, सुकराला देवी, सरथल देवी, बाला सुंदरी, महालक्ष्मी एवं महामाया आदि प्रमुख हैं।

चतुर्थ अध्याय में नाग देवताओं के मंदिरों और स्थलों का विवरण है। जिनमें-वासुकि नाग, भैड़ नाग, समुद्र नाग, काई नाग, शेष नाग, बोला नाग, मणि सर नाग आदि प्रमुख हैं।

पंचम अध्याय में नाथ पीठों का परिचयात्मक विवरण है। इन पीठों में सिद्ध गौरैया पीठ, सिद्ध विरवा पीठ, सिद्धपीठ पीरखोह, सिद्ध सहज नाथ पीठ आदि प्रमुख हैं।

षष्टम अध्याय में वैष्णव मंदिरों का वर्णन किया गया है।

सप्तम अध्याय में गुरुद्वारों, कबीर मठो, रविदात आदि मंदिरों का वर्णन किया गया है।

अष्टम अध्याय में मस्जिदों एवं चर्चों का परिचय दिया गया है।

नवां अध्याय नदियों, पवित्र जल कुंडों एवं गुफाओं पर आधारित है।

इस पुस्तक में लेखक ने डुग्गर प्रदेश के देवता, आदिदेव महादेव के मंदिरों, देवी पीठों, शक्ति स्थलों, नाग देवताओं के मंदिरों, वैष्णव मंदिरों, मठों, मस्जिदों, गुरुद्वारों का परिचय दिया है। साथ ही डुग्गर प्रदेश के पवित्र जलकुंडों, नदियों एवं गुफाओं आदि का वर्णन किया गया है। यह पुस्तक पर्यटकों को विशेष दृष्टि प्रदान करती है। जिससे पर्यटकों की संख्या में भी अभिवृद्धि हुई है। पर्यटन के नए अनुभवों तथा डुग्गर क्षेत्र की संस्कृति और समाज के दर्शन में यह पुस्तक पर्यटन के विस्तार की दृष्टि से बहुत ही उपयोगी सिद्ध हो सकती है।

4. डुग्गर की संस्कृति

डुग्गर की संस्कृति पुस्तक का प्रकाशन नरेंद्रा पब्लिशिंग हाउस, जालंधर से 1988 में हुआ। यह पुस्तक 168 पृष्ठों में लिखी गई है। इस पुस्तक को लेखक ने आठ अध्यायों में विभाजित किया है।

प्रथम अध्याय में डुग्गर की भौगोलिक स्थिति का परिचय है। जिसमें डुग्गर की नदिया, जंगल, खनिज पदार्थ, वहाँ की कृषि व्यवस्था, वहाँ के फल-फूल, जड़ी बूटियाँ, यातायात के साधन और पर्यटन स्थलों का संक्षिप्त परिचय दिया है।

दूसरे अध्याय का संबंध इस भूखंड के राजनीतिक इतिहास से है। इस अध्याय में लेखक ने प्राचीन ग्रन्थों के अंत:साक्ष्य और बहि:साक्ष्य के आधार पर डुग्गर की प्रारम्भिक रूपरेखा प्रस्तुत की है। इसी अध्याय में प्राचीन इतिहास के संदर्भ में यहाँ के प्राचीन राज्यों यथा मद्र जनपद, दार्वा भिसार, दार्व, बब्बापुर, बल्लपुर, खसाल, विसालता आदि का विवरण दिया है।

तीसरे अध्याय में प्रागैतिहासिक और वर्तमान जातियों और प्रजातियों का परिचय दिया गया है। इन जातियों में नाग, जक्ख, पिशाच, डामर, कोली और खस पुरानी डोगरा जातियाँ थीं। आर्य जातियों में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र के अतिरिक्त भारत के अलग अलग क्षेत्रों से आई जातियों का विवरण दिया गया है। आर्येतर जातियों- शक, कुषाण गुर्जर, गद्दी, आदि का संक्षिप्त परिचय दिया है।

पुस्तक का चौथा अध्याय जन-जीवन से संबन्धित है। इसमें गाँव, नगरों, नगरोटों की संरचना, गृह निर्माण, गृह सामग्री जैसे अनाज रखने के बर्तन, अनाज कूटने पीसने के साधन, रसोई के बर्तन, गाँव के पूजा स्थलों, पंचायतों आदि का वर्णन किया गया है।

पांचवें अध्याय में लेखक ने जनमानस की धार्मिक और सांस्कृतिक परम्पराओं पर प्रकाश डाला है। इस अध्याय में शिव, शक्ति, वैष्णव, सिक्ख, जैन, बौद्ध, मुसलिम और ईसाई धर्म को मानने वालों की धार्मिक जीवन शैली को दर्शाया गया है।

षष्टम अध्याय में डुग्गर संस्कृति में प्रचलित प्रमुख संस्कार पद्धतियों की जानकारी दी गयी है। जिनमे गर्भाधान संस्कार, सीमांतोंन्नयन संस्कार, नामकरण संस्कार, अन्नप्राशन, चूड़ाकर्म, मुंडन और विवाह आदि प्रमुख हैं।

इस पुस्तक का सप्तम अध्याय डुग्गर में प्रचलित लोक विश्वासों पर आधारित है। यहाँ पर खेती-बाड़ी, भूत-प्रेत, टोना-टोटका, के साथ संबंध रखने वाले कई लोक विश्वास प्रचलित हैं। कब किस दिशा में जाना चाहिए तथा किस मंत्र से कौन सा रोग दूर किया जा सकता है इन सबके बारे में लोगों की अपनी आस्था है इन सारे लोकविश्वासों की संक्षिप्त जानकारी इस अध्याय में दी गयी है।

पुस्तक का अष्टम अध्याय डुग्गर की लोक कलाओं तथा साहित्य पर आधारित है। लोक कलाओं में लेखक ने स्थापत्य कला मूर्ति कला, चित्रकला, काष्ठ कला आदि के संबंध में जानकारी दी है। साथ ही डोगरी, भद्रवाही. गोजरी, संस्कृत, पंजाबी तथा उर्दू साहित्य पर विस्तृत प्रकाश डाला है।

डुग्गर की संस्कृति पुस्तक में लेखक ने डुग्गर प्रदेश की भौगोलिक स्थिति, नदियों, जंगल, खनिज पदार्थों, डुग्गर प्रदेश के राजनीतिक इतिहास, प्रागैतिहासिक और वर्तमान जातियों का परिचय, गाँव नगरों की रूपरेखा, जनजीवन तथा लोगों की धार्मिक आस्थाओं, परम्पराओं और डुग्गर प्रदेश में प्रचलित संस्कारों, लोकविश्वासों एवं लोक कलाओं का परिचय दिया है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि इस पुस्तक में हमें डुग्गर प्रदेश की संस्कृति से संबन्धित विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है।

इस पुस्तक की भाषा सरल और बोध गम्य है और सभी वर्ग के लोगों के लिए आसानी से ग्राह्य है।

5. डुग्गर का लोक साहित्य

डुग्गर का लोक साहित्य पुस्तक का प्रकाशन विनोद बुक डिपो, पक्का डंगा, द्वारा सन 1988 में जम्मू कश्मीर ललित कला, संस्कृति एवं भाषा अकादमी के आर्थिक सहयोग से किया गया था। इस पुस्तक में कुल 236 पृष्ठ हैं। यह पुस्तक दस अध्यायों में विभाजित है।

डुग्गर का लोक साहित्य पुस्तक के प्रथम अध्याय में डुग्गर प्रदेश की भौगोलिक और ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि के बारे में बताया गया है।

इस पुस्तक के द्वितीय अध्याय का संबंध डुग्गर प्रदेश में बोली जाने वाली बोलियों से है। जिनमे प्रमुख रूप से कंडयाली, काँगड़ी, भटेआली, सिरमौरी, मंडयाली, चमेआली तथा गद्दी आदि बोलियों का रूप और रचना की दृष्टि से संक्षिप्त विवरण दिया गया है।

तृतीय अध्याय लोक, लोकवार्ता, लोक साहित्य की परिभाषा, लोकवार्ता का वर्गीकरण, लोक तत्व, लोक समाज, लोक साहित्य का महत्व तथा लोक साहित्य की अलग-अलग विधाओं का संक्षिप्त वर्णन किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में लोक गीतों का वर्णन है। इस अध्याय में लेखक ने लोकगीतों की परिभाषा, उसकी उत्पत्ति, परंपरा और महत्व तथा उसकी विशेषताओं का विस्तार से वर्णन किया है। जिनमे संस्कार गीत, विवाह गीत, बधाई गीत, तथा सुहाग गीतों का वर्णन है साथ ही साथ ऋतु गीत, लोक गीत, प्रेम गीत और पर्व-त्योहारों से संबन्धित गीतों के बारे में भी व्याख्यायित किया गया है।

पंचम अध्याय लोक गाथाओं से संबन्धित है। इसमें लेखक ने देव गाथाओं, देवी गाथाओं, नाग देवतों की गाथाओं, प्रेम गाथाओं तथा योग परक गाथाओं का परिचय, उसकी उत्पत्ति और विशेषताओं को उदाहरण सहित दर्शाया है।

षष्टम अध्याय लोक कथाओं पर आधारित है। इसमें लोक कथाओं का स्वरूप, परंपरा, विषय, पात्रों का विवरण दिया है। इन लोक कथाओं में देव कथा, परी कथा, सामाजिक कथा, दंत कथा तथा मनोरंजन कथा प्रमुख हैं।

सप्तम अध्याय लोक नाट्य पर आधारित है। जिसमें लोक नाट्य की विशेषताओं तथा डुग्गर के प्रचलित लोक नाट्य विधाओं पर चर्चा की गई है। इन लोक नाटकों में रासलीला, रामलीला, चंदौली, जातर, हिरण तथा भगता नाम की लोक विधाओं का संक्षिप्त वर्णन किया गया है।

अष्टम अध्याय लोक सुभाषितों पर आधारित है। इस अध्याय में लेखक ने डोगरी लोकोक्तियों, मुहावरों, सूक्तियों, पहेलियों आदि का विवरण दिया है। लोक साहित्य की यह विधा अत्यंत महत्व पूर्ण है।

पुस्तक का नवां अध्याय लोक साहित्य के संकलन से संबंध रखता है। जम्मू-कश्मीर में बोली जाने वाली भाषाओं में डोगरी एक प्रमुख भाषा है। इस भाषा में लोक गीत, लोक कथा, सूक्तियों, मुहावरों, लोकोक्तियों का अनमोल खजाना जगह-जगह बिखरा पड़ा है। जिसे एक जगह एकत्र करना और प्रकाशित करना कोई आसान काम नहीं है और न ही किसी एक व्यक्ति द्वारा संभव है। इस साहित्य के संकलन में क्या-क्या काम किस-किस के प्रयास से संभव हुआ है इसका वर्णन है।

दशम अध्याय में डुग्गर की लोक संस्कृति की चर्चा विस्तार सहित की गई है। इस अध्याय में लेखक ने डुग्गर के लोक जीवन, लोक नृत्यों, लोक क्रीड़ाओं, लोक उत्सवों, पवित्र जलकुंडों, नदियों, लोक उत्सवों, मेलों, लोककलाओं तथा लोक-विश्वासों पर विस्तार के साथ प्रकाश डाला है।

डुग्गर का लोकसाहित्य पुस्तक में लेखक ने डुग्गर प्रदेश की भौगोलिक स्थिति के साथ डुग्गर प्रदेश में बोली जाने वाली बोलियों का संक्षिप्त परिचय दिया है। साथ ही लोकवार्ता, लोक साहित्य की परिभाषा, महत्व एवं लोक साहित्य की विधाओं का परिचय दिया गया है। लोक गीतों की परिभाषा, उसकी उत्पत्ति, परंपरा और महत्व तथा उसकी विशेषताओं का विस्तार में वर्णन किया गया है। इस पुस्तक में डोगरी मुहावरों, सूक्तियों, के साथ-साथ लोक जीवन, लोक उत्सवों एवं लोक कलाओं पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है। डोगरी लोक साहित्य पर शोध करने वाले छात्रों के लिए यह पुस्तक बहुत उपयोगी सिद्ध हो सकती है।

6. डुग्गर का भाषायी परिचय

डुग्गर का भाषायी परिचय पुस्तक का प्रकाशन नरेंद्रा पब्लिशिंग हाउस जालंधर से 1992 में किया गया है। इस पुस्तक में कुल 150 पृष्ठ हैं। लेखक के अनुसार इस पुस्तक के सृजन का उद्देश्य स्थानीय भाषा और बोलियों के व्याकरणीय रूप को प्रस्तुत करना था। डुग्गर (जम्मू प्रांत) में प्रचलित भाषा और बोलियों को एक पुस्तक के रूप में संकलित करने का संभवतः यह प्रथम प्रयास था।

इस पुस्तक में कुल नौ अध्याय है।

प्रथम अध्याय में डुग्गर का भौगोलिक और ऐतिहासिक परिचय है।

द्वितीय अध्याय भाषायी अध्ययन पर आधारित है। जिसके अंतर्गत भारतीय आर्य भाषाओं, कश्मीरी और दर्दी भाषाओं तथा लद्दाखी भाषा का संक्षिप्त परिचय दिया गया है।

तृतीय अध्याय डोगरी भाषा की बोलियों से संबंध रखता है। जिनमे डोगरी, कांगड़ी, भटेआली तथा कंडियाली बोलियों का विवरण है। इस पुस्तक में डोगरी भाषा की विशेषताओं पर पर्याप्त प्रकाश डाला गया है। इस अध्याय में लेखक ने यह भी बताया कि 1981 में हुई जन गणना के आधार पर जिन लोगो ने डोगरी को अपनी मातृ भाषा बताया, उनकी संख्या 14, 47392 थी।

चतुर्थ अध्याय में लेखक ने 'चिभाल' क्षेत्र की बोलियों का परिचय दिया है। इन बोलियों का प्रचलन चिनाव और झेलम नदियों के मध्य-भाग में है। छम्ब, पुंछ और रजौरी जनपद की बोलियों का परिचय इस अध्याय में किया गया है।

पंचम अध्याय में गोजरी बोली और उसके उपरूप बकरवाली का परिचय दिया गया है। वर्ष 1981 की जन गणना के अनुसार इस बोली को बोलने वालों की संख्या मात्र 3,07534 थी।

षष्टम अध्याय पश्चिमीं पहाड़ी बोलियों पर आधारित है। इसमें भद्रवाही, पाडरी, भलेषी खासी, रधनौती, सिराजी, तथा देसा आदि बोलियों की विशेषताओं पर प्रकाश डाला गया है।

सप्तम अध्याय कश्मीरी और दर्दी बोलियों की विशेषताओं पर आधारित है।

अष्टम अध्याय में लद्दाखी बोली की भाषागत विशेषताओं का परिचय दिया गया है।

नवम अध्याय में लेखक ने पंजाबी, उर्दू, हिन्दी, आदि भाषाओं का परिचय देते हुए उनका डोगरी पर क्या प्रभाव पड़ा है, यह बताने का प्रयास किया है।

यह पुस्तक डुग्गर प्रदेश का भाषा की दृष्टि से किए गए अध्ययन पर आधारित है। इस पुस्तक में भारतीय आर्य भाषाओं, बोलियों का संक्षिप्त परिचय है। यह पुस्तक डोगरी भाषा की बोलचाल, तथा चिभाल, कश्मीरी, दर्दी, लद्दाखी, पंजाबी क्षेत्र की बोलचाल के साथ साथ हिन्दी तथा उर्दू आदि भाषाओं के डोगरी भाषा के प्रभाव पर विस्तृत दर्शन प्रदान करती है। यह पुस्तक विभिन्न क्षेत्रीय भिन्नताओं के बावजूद डोगरी के सामाजिक भाषा विज्ञान, क्षेत्रीय निवासियों के डोगरी भाषा का अनुसरण और एकात्म को रोचक ढंग से प्रस्तुत करती है। डोगरी और उसकी बोलियों के बारे में विस्तृत जानकारी देने वाली यह एक महत्त्वपूर्ण पुस्तक है। भाषा विषय पर अध्ययन करने वाले सभी अद्धयासियों एवं शोधकर्ताओं के लिए यह एक उपयोगी संकलन है।

7. डुग्गर के अमर सेनानी

डुग्गर के अमर सेनानी पुस्तक का प्रकाशन साहित्य संगम पब्लिकेशन, कच्ची छावनी, जम्मू ने सन 1992 में किया गया था।

प्राचीन काल से लेकर आज तक न जाने कितने ही वीर योद्धाओं ने इस धरती पर जन्म लिया है। डुग्गर भूमि को तो वीर प्रसूता के नाम से ही जाना जाता है। डोगरों की वीरता का गुणगान तो पूरा राष्ट्र करता है। यहाँ के वीर अपने लिए नहीं बल्कि पूरे राष्ट्र के लिए जीते थे। वे मातृभूमि के लिए कोई भी कष्ट उठाने के लिए तैयार रहते थे।

उनके जीवन में परमार्थ था स्वार्थ नहीं, उनके जीवन में स्वाभिमान था, अभिमान नहीं, उनके जीवन में मातृभूमि सुरक्षा ही सर्वोपरि थी।

डुग्गर भूमि के मस्तक को गर्व से ऊँचा करने वाले वीर सपूतों और उनकी गाथाओं से आने वाली पीढ़ियों को अवगत कराने के लिए कुछ शीर्षस्थ वीर योद्धाओं का वर्णन इस पुस्तक में है।

इस पुस्तक में लेखक ने उन पाँच युद्ध वीरों के जीवन का संक्षिप्त जीवन परिचय दिया है जिन्होंने देश, धर्म और जातीय जीवन मूल्यों की रक्षा के लिए अपने प्राणों को भी न्योछावर कर दिया तथा डुग्गर भूमि के गौरव को बढ़ाया।

इन वीरों में प्रथम नाम बाबा बंदा बहादुर का है जिहोंने क्रूर शासकों के दमन को न स्वीकार करते हुए अपना बलिदान दिया।

दूसरा नाम वीर योद्धा मियां डीडो का है जो अपने प्रदेश की स्वतन्त्रता और स्वायत्तता के लिए अपने सम्पूर्ण जीवन में ही संघर्ष शील रहे।

तीसरा नाम वजीर जोरावर सिंह जी का है जो कि एक अद्वितीय सेनापति थे। जिहोंने भारत की सीमाओं का विस्तार मान सरोवर तक करने के लिए अपने अद्‌भुत साहस और पराक्रम को दिखाते हुए उन पहाड़ों को पार किया जिसके उस पार जाना असंभव था।

चौथा नाम वजीर राम सिंह पठानिया का है जिन्होंने अँग्रेजी शासन से मुक्ति दिलाने के लिए शस्त्रों को हाथ में लेकर क्रान्ति का आह्वान किया।

इस पुस्तक में पाँचवाँ नाम उस वीर योद्धा का है जिसने सन 1947 में कश्मीर घाटी की सीमाओं की रक्षा के लिए अपने प्राणों का बलिदान दे दिया।

इस पुस्तक में लेखक ने डुग्गर प्रदेश के मस्तक को गर्व से ऊँचा उठाने वाले पाँच युद्ध वीरों का संक्षिप्त परिचय दिया है जिन्होंनें देश, धर्म और जातीय जीवन मूल्यों की रक्षा के लिए अपने प्राणों को न्योछावर कर दिया। इन वीरों में बाबा बंदा बहादुर, मियां डीडो, वजीर जोरावर सिंह, राम सिंह पठानिया आदि का नाम प्रमुख है। इस पुस्तक को पढ़ने से हमें देश के प्रति हमारे क्या उत्तरदायित्व हैं, इनका पता चलता है और देश के लिए प्रेम की भावना जागृत होती है।

8. डुग्गर के लोक देवता

डुग्गर के लोक देवता पुस्तक का प्रकाशन 1997 में साहित्य संगम प्रकाशन केंद्र जम्मू में हुआ था। इस पुस्तक के पृष्ठों की संख्या कुल 192 है। इस पुस्तक का जैसा कि नाम है इसमें डुग्गर क्षेत्र के स्थानीय देवताओं का वर्णन है। पुस्तक का आकर्षण इसके आवरण पृष्ठ पर छपे हुए देवताओं के चित्र है जिससे इस पुस्तक की शोभा बढ़ जाती है।

यह पुस्तक सात अध्यायों में विभाजित है।

प्रथम अध्याय में देवता का अर्थ, स्वरूप, निवास स्थान, श्रेणियां, वर्गीकरण, महत्व आदि पर प्रकाश डाला गया है।

द्वितीय अध्याय में 51 ग्राम देवताओं का परिचय प्रस्तुत किया काया है। ये ग्राम देवता हैं- भीम देवता, मन डोरा देवता, कंडेर देवता, समकाल देवता आदि प्रमुख हैं।

तृतीय अध्याय में 61 नाग देवताओं का उल्लेख किया गया है। इन नाग देवताओं का परिचय उनके स्थानों के साथ दिया गया है। नाग देवता नाग संस्कृति का अवशेष माने जाते हैं। डुग्गर के लोगों के द्वारा आज भी नाग देवताओं की पूजा अर्चना की जाती है। इस कारण डुग्गर प्रदेश में आज भी नाग देवताओं की सांस्कृतिक महत्ता को इस पुस्तक में दिखाया गया है।

चतुर्थ अध्याय में 53 शहीद देवताओं का वर्णन किया गया है। ये शहीद देवता डुग्गर समाज की राजनीतिक, आर्थिक, एवं सामाजिक स्थिति का दर्शन कराते हैं। इन देवताओं का डुग्गर के इतिहास में बड़ा महत्व है।

पंचम अध्याय में आगत देवताओं का वर्णन है। ये वे देवता हैं जिनका संबंध तो दूसरे प्रदेशों से है किन्तु फिर भी डुग्गर प्रदेश में इनकी पूजा की जाती है। ऐसे आगत लोक देवता में राजा मंडलीक, कालीवीर, नार सिंह, नौ नाथ, आदि प्रमुख हैं। ऐसे 12 आगत देवताओं का परिचय इस पुस्तक में दिया गया है।

षष्टम अध्याय में अप देवताओं का वर्णन किया गया है। इन देवताओं में राक्षस, भूत, दैत्य, मसान आदि का वर्णन किया गया है।

सप्तम अध्याय में ग्राम देवियों का वर्णन किया गया है। इन ग्राम देवियों की संख्या 59 है।

इस पुस्तक में देवताओं का अर्थ, निवास स्थान, श्रेणियाँ, वर्गीकरण, महत्व आदि का वर्णन किया गया है। इसमें 51 ग्राम देवताओं, 61 नाग देवताओं, 53 शहीद देवताओं, 12 दूसरे देश से आने वाले आगत देवताओं, राक्षस, भूत, मसान आदि अप देवताओं तथा 59 ग्राम देवियों का वर्णन किया गया है।

यह पुस्तक डुग्गर लोक संस्कृति का दर्पण कही जा सकती है। जिसमें प्राचीन संस्कृति की झलक दिखाई देती है।

9. डुग्गर की दंत कथाएँ

डुग्गर की दंत कथाएँ नाम की इस पुस्तक का प्रकाशन सन् 1997 में मल्होत्रा ब्रदर्स, प्रकाशन केंद्र पक्का डंगा, जम्मू द्वारा किया गया था। इस पुस्तक में कुल 128 पृष्ठ हैं। डुग्गर के ऐतिहासिक स्थानों, घटनाओं, नगरों और सांस्कृतिक स्थलों से संबन्धित 46 दंत कथाएँ लेखक ने इस पुस्तक में संकलित की हैं। इन दंत कथाओं में लिखित सामग्री लेखक को डुग्गर की शोध यात्राओं, पुस्तकों, इतिहास में रुचि रखने वाले व्यक्तियों और संतों से प्राप्त हुई हैं। कुछ दंत कथाएं तो लेखक ने प्रकाशित पुस्तकों से भी लीं हैं।

इन दंत कथाओं में कई कथाएँ डुग्गर के नगरों से संबन्धित हैं। उनमें हमें इतिहास की झलक मिलती है। जिनमें बाहुस्थली, सानाल कोट, धारानगरी, जम्मू नगरी, भीम गढ़, नाग सैनी, जगन पुर, सूरगढ़, राजधानी बब्बा पुर, देवल आदि स्थानों से संबन्धित दंत कथाएँ हैं। इनमें से कई दंत कथायें प्रागैतिहासिक काल से संबंध रखती हैं, तो कई नाग काल से संबन्धित है। जिनमें मनचक दैत्य, राजा महल नाग आदि प्रमुख हैं।

इन दंत कथाओं को पढ़ने से हमें आदि काल की एक धुंधली सी झलक दिखाई देती है।

इन दंत कथाओं में मुगल काल, डोगरा काल और राणा काल से संबन्धित भी कई दंत कथाएँ हैं। कुछ दंत कथाएँ मानवीय मूल्यों पर भी आधारित हैं जिसमें गोकुल मल्लाह, मित्र द्रोह, ब्राह्मण का श्राप प्रमुख हैं।

इस पुस्तक में ऐतिहासिक और प्रागैतिहासिक काल तथा नाग काल से संबंध रखनें वाली दँत कथाओं का उल्लेख मिलता है। साथ ही डोगरा और मुगल कालीन दंत कथाओं का भी उल्लेख किया गया है।

इस पुस्तक में लिखी हुई सभी दंत कथाएँ लोक शैली में होने के कारण पढ़ने और सुनने में बड़ी ही रोचक प्रतीत होती हैं। दंत कथाओं पर शोध करने वाले शोधार्थियों के लिए यह पुस्तक उपयोगी सिद्ध हो सकती है।

10. डुग्गर का इतिहास

डुग्गर का इतिहास पुस्तक के प्रथम संस्करण का प्रकाशन शिवालिक प्रकाशन, पैंथल (उधमपुर) ने ललित कला, संस्कृति अकादमी जम्मू-कश्मीर के आर्थिक सहयोग से 1998 में किया। इस संस्करण में पृष्ठों की संख्या 246 है।

डुग्गर का इतिहास पुस्तक के द्वितीय संस्करण का भी प्रकाशन किया गया। जिसे 2019 में अक्षय प्रकाशन, अंसारी रोड नई दिल्ली ने प्रकाशित किया। इस नए प्रकाशित संस्करण में पृष्ठों की संख्या 280 है।

डुग्गर के इतिहास पर लिखी यह पहली पुस्तक है इसमें 20 अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में डुग्गर के निवासियों का उल्लेख है। जिसमें वैदिक काल से लेकर आधुनिक काल तक की जातियों, प्रजातियों और उपजातियों का विवरण दिया गया है। दुर्गर जाति के नाम पर डुग्गर प्रदेश की परिकल्पना की है। इस जाति का उल्लेख 1056 और 1066 में लिखित अभिलेखों में मिलता है। लेखक ने डुग्गर प्रदेश के औदुंबर जनपद, टक्क जनपद, मद्र जनपद, दार्व जनपद, अभिसार जनपद, के उल्लेख के साथ-साथ राज तरंगिणी में उल्लखित पुरनोटस, राजापुरी, कालिंजर आदि जनपदों का परिचय भी दिया है।

इस पुस्तक का तीसरा अध्याय जम्मू राज्य के उदय, उसके विस्तार पर आधारित है।

चौथा अध्याय रायवंश, धरवंश, देव वंश, पर आधारित है।

पंचम अध्याय में बल्लपुर, बसोहली, पाल वंश, के शासको का वर्णन है। छठे अध्याय में भड्डू के शासकों का परिचय दिया गया है।

सप्तम अध्याय में भद्रवाहके शासकों का वर्णन है।

अष्टम अध्याय में मन कोट राज्य के सामंतों का संक्षिप्त परिचय दिया गया है।

नवां अध्याय हिमतल राज्य पर आधारित है। अंत में चिनैनी आंदोलन का भी संक्षेप में परिचय दिया गया है।

दसवें अध्याय में जसरोटा, ग्यारहवें अध्याय में बंदराहलता, बारहवें अध्याय में भीमगढ़, तेरहवें अध्याय में भूति, चौदहवाँ अध्याय गढ़ अम्बारायण (अखनूर), पंद्रहवाँ अध्याय बाहुस्थली, सोलहवां अध्याय किश्तवाड़, सत्रहवाँ अध्याय पुरनोटस, अट्ठारहवाँ अध्याय राजा पुरी, उन्नीसवाँ चिभाल और बीसवाँ अध्याय लोकतन्त्र के उदय पर है।

डुग्गर के इतिहास पर लिखी यह प्रथम पुस्तक है। जिसमें डुग्गर प्रदेश की वैदिक काल से लेकर आधुनिक काल की जातियों, प्रजातियों, उपजातियों का विवरण है। इस पुस्तक में जम्मू प्रदेश के उदय और विस्तार का भी वर्णन है। साथ ही लोक तंत्र के उदय कभी वर्णन किया गया है।

लेखक ने इस पुस्तक में सामंत कालीन डुग्गर के इतिहास पर जो शोध कार्य किया है वह प्रशंसनीय है।

11. दाता रणपत की कहानी

दाता रणपत की कहानी पुस्तक का प्रकाशन सन 1999 में केसरी प्रकाशन न्यू प्लाट जम्मू के सौजन्य से हुआ था। 65 पृष्ठों की इस पुस्तक को प्रकाशक ने अपने पिता हरीराम सदोत्रा को समर्पित किया है।

यह पुस्तक डुग्गर के प्रसिद्ध लोक देवता दाता रणपत के जीवन पर आधारित है। दाता रणपत डुग्गर प्रदेश की उन महान विभूतियों में थे जिन्होने न्याय प्रियता, धर्म रक्षा, मानवीय मूल्यों और सत्य के लिए अपने प्राणों का बलिदान कर दिया। उनका उज्जवल जीवन चरित्र एक प्रकाश स्तम्भ की भांति था जो सदियों तक इस डुग्गर प्रदेश के लोगों को सत्य की राह पर चलने के लिए प्रेरित करता रहेगा। दाता रणपत 16वीं शताब्दी के एक ऐसे निडर और हिम्मत वाले पुरुष थे जो कि बलशाली जागीरदार बागी चाड़क के आगे भी नहीं झुके और अपने प्राणों की आहुति देकर अमर हो गए।

इस पुस्तक में लेखक ने दाता रणपत के सह संबन्धियों और वंशजों का भी परिचय दिया है। जिसके लिए लेखक ने पर्याप्त खोज की है।

लेखक ने इस पुस्तक में दाता रणपत से संबन्ध रखने वाले स्थानों और डेरों का भी उल्लेख किया है।

पुस्तक के अंत में लेखक ने दाता रणपत से संबन्धित लोक गाथा भी संकलित की है जो कि 27 पृष्ठों की है।

इस पुस्तक के मुख्य पृष्ठ पर दाता रणपत का अश्वारूढ़ चित्र अंकित है। इसके साथ ही दाता रणपत के डेरों का भी चित्र अंकित है जिससे इस पुस्तक की सार्थकता और महत्व और भी बढ़ जाता है।

यह पुस्तक डुग्गर प्रदेश के एक ऐसे लोक देवता के जीवन पर आधारित है जिन्होंनें न्याय प्रियता, धर्म रक्षा, मानवीय मूल्यों तथा सत्य के लिए अपने प्राणों को न्योछावर कर दिया। इस पुस्तक में दाता रणपत जी के जीवन से संबन्धित सम्पूर्ण जानकारी मिलती है।

यह पुस्तक दाता रणपत के वंशजों और अनुयायियों के लिए एक पावन और अनमोल उपहार है जिसका वे बड़ी ही श्रद्धा के साथ पाठन करते है।

पुस्तक की भाषा सरल और बोधगम्य है जो कि साधारण जनमानस को भी सहज ही ग्राह्य होती है।

12. पाडर : लोक और संस्कृति

पाडर : लोक और संस्कृति पुस्तक का प्रकाशन शिवालिक प्रकाशन पैंथल, (कटरा वैष्णोदेवी) द्वारा किया गया। 136 पृष्ठों की यह पुस्तक सन 2000 में प्रकाशित हुई।

'पाडर' डुग्गर प्रदेश का एक महत्व पूर्ण पहाड़ी क्षेत्र है। लेखक ने इस पुस्तक में पाडर संस्कृति के अलग-अलग रंग प्रस्तुत किए हैं। लेखक के अनुसार इस क्षेत्र की संस्कृति में एक रंग पांगियाली, दूसरा रंग जंसकारी और तीसरा रंग पहाड़ी का है।

इस पुस्तक को लेखक ने ग्यारह अध्यायों में विभाजित किया है।

इस पुस्तक के प्रथम अध्याय में लेखक ने पाडर क्षेत्र के भौगोलिक परिवेश का चित्रण किया है। पाडर क्षेत्र के वन, वनस्पतियाँ, सरोवर, झील, पालतू एवं जंगली पशु, के बारे में लिखा है। वहाँ पर कौन सी फसलें होती है, वहाँ की जलवायु कैसी है। वहाँ की जनसंख्या कितनी है आदि का विवरण दिया है।

दूसरा अध्याय पाडर के लोगों से संबन्धित है। इसमें पाडर की जातियों का वर्णन है पाडर की प्रमुखजातियाँ- नाग, मोन, खस, बड्डु, भोट, मेग, राजपूत और ब्राह्मण है। कुछ सुनार, कुम्हार, और कुछ मुसलमान भी हैं। ये कहाँ से आकार बसी इनका संक्षिप्त परिचय दिया गया है।

तीसरा अध्याय ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधारित है। इसमें राणाओं और भोट राजाओं का जिक्र है जो पाडर के ऊपर शासन करते थे। किश्तवाड़ के राजाओं पर हमले तथा वजीर जोरावर सिंह द्वारा इस क्षेत्र पर अधिकार करने का संक्षिप्त परिचय है।

चौथा अध्याय लोक जीवन से संबन्धित है। जिसमें गाँव, घर, घर के बर्तन, शादी विवाह, कूटने पीसने के उपकरण, खेती बाड़ी के सामान, कपडे-गहने की जानकारी सामाजिक विशेषताएँ, पंचायत प्रणाली, घरेलू उद्योग एवं लोक-विश्वासों की भी जानकारी मिलती है।

पाँचवाँ अध्याय में अलग-अलग पर्व, त्योहार, मेले एवं उत्सवों का परिचय मिलता है। इनमें हिन्दू त्योहारों में मिठीयांग, विशू, दक्ख, नियाज, नागोई, कण, चोटी, जागरू, तथा जागरा आदि प्रमुख हैं। ये त्योहार स्थानीय संस्कृति का प्रतीक है।

छठा अध्याय लोक मनोरंजन पर आधारित है। जिसमें लोक नाटकों तथा लोक खेलों की चर्चा की गयी है। जिनमें राक्स खेल, बुछेन, जागरू, रासलीला और रामलीला के नाम प्रमुख हैं।

सप्तम अध्याय देवी-देवताओं पर है। जिसमें नाग देवता, ग्राम देवता, और स्थानीय देवियों का परिचय दिया गया है।

आठवाँ अध्याय लामावाद से संबन्धित है। इस अध्याय में यह बताया गया है कि पाडर में लामावाद कहाँ से आया और इसके प्रवर्तक कौन थे तथा लामावाद क्या होता है इसका परिचय दिया गया है।

नवें अध्याय में पाडर क्षेत्र में प्रचलित संस्कार पद्धतियों का विवरण है। जिनमें जन्म संबंधी संस्कार, विवाह के रीति-रिवाज तथा अलग-अलग प्रथाएँ - नयोतड़ी प्रथा, झाझड़ा प्रथा, हार प्रथा, दित्ता प्रथा, छक्की-फक्की प्रथा आदि का वर्णन है।

दसवां अध्याय पाडर क्षेत्र की बोलियों और साहित्य पर आधारित है। इसमें लेखक ने पाडरी बोली की धुन, स्वरूप और व्याकरण के तथ्यों का परिचय दिया है। इस अध्याय में लेखक ने लोक साहित्य की चर्चा करते हुए लोकगीतों, लोक कथाओं का भी परिचय दिया है। पाडर क्षेत्र में बौद्धों का अच्छा प्रभाव रहा है इसलिए लेखक ने बौद्धी भाषा, उसकी वर्णमाला, लिपि, उसके व्याकरण का स्वरूप की जानकारी भी एकत्र करके इस पाठ में संकलित की है।

ग्यारहवें अध्याय में कला सम्पदा का वर्णन है। जिसमे अलग-अलग समय की स्थापत्य कला में बौद्ध स्थापत्य, राणा सामंत-कालीन स्थापत्य कला का वर्णन किया है। साथ ही मूर्ति कला, काष्ठ कला, संगीत कला, आदि का संक्षिप्त परिचय दिया है।

पुस्तक के संदर्भ के अंतर्गत अठोली, गुलाबगढ़, कुंडल, सोहल, गंधारी, कब्बन, लुसैनी, लियोड़ी, लिंगरी, मस्सू तथा मचेल आगी गांवों का भी परिचय दिया है।

इस पुस्तक में लेखक ने पाड़र प्रदेश के भौगोलिक परिवेश, पाडर प्रदेश में कौन-कौन सी जातियाँ निवास करती हैं और वे कहाँ से आयीं, उनकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और उनका लोक जीवन कैसा था तथा पाडर की बोलियों और साहित्य के परिचय के साथ ही साथ उनकी कला संप्रदाओं का भी वर्णन किया गया है।

पाडर की संस्कृति के ऊपर वास्तव में इस पुस्तक में पर्याप्त जानकारी मिलती है। संस्कृति के प्रति लगाव रखने वाले पाठकों के लिए यह एक अनमोल उपहार है। इस पुस्तक के लिए लेखक को हिन्दी निदेशालय से पुरस्कार भी प्रदान किया गया है

13. डुग्गर के दुर्ग

डुग्गर के दुर्ग पुस्तक का प्रकाशन सन 2002 में शिवालिक प्रकाशन पैंथल (कटरा) के द्वारा ललित कला संस्कृति एवं भाषा अकादमी जम्मू एवं कश्मीर के आर्थिक सहयोग से किया गया है। यह पुस्तक 262 पृष्ठो में

लिखित है। इस पुस्तक के माध्यम से लेखक ने डुग्गर प्रदेश के दुर्गों की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहर पर प्रकाश डाला है।

पुस्तक के प्रारम्भ में लेखक ने दुर्ग स्थापत्य, दुर्गों के विविध रूपों, दुर्ग सन्निवेश, परिखा प्राकार, अट्टोलक, प्रवेश द्वार, आदि का विवरण दिया है। दुर्गों का वर्गीकरण करते हुए लेखक ने छः प्रकार के दुर्ग बताए हैं जिनमें- जल दुर्ग, वन दुर्ग, पंकज दुर्ग, एरिण दुर्ग, गुहा दुर्ग, गिरि दुर्ग आदि है। जिसमें से गिरि दुर्ग को सर्वश्रेष्ठ बताया है।

लेखक ने अपनी इस पुस्तक में 128 दुर्गों का वर्णन किया है जो ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। बाहरी आक्रमण कारियों से सुरक्षा हेतु दुर्गों के स्थापत्य में भी समय-समय पर परिवर्तन किया गया है इसका भी वर्णन पुस्तक में मिलता है।

डुग्गर क्षेत्र के जिन दुर्गों का लेखक ने सविस्तार वर्णन किया है उनमें- बाहु का दुर्ग, बसंत गढ़ का दुर्ग, सानाल कोट का दुर्ग, रामनगर का दुर्ग, जगानु का दुर्ग, सानाल कोट का दुर्ग आदि उल्लेखनीय हैं।

इस पुस्तक में लेखक ने 128 प्रकार के दुर्गों का वर्णन किया है इसके अंतर्गत दुर्गों के स्थापत्य, और प्रकार का वर्णन किया है। इन दुर्गो के अवशेष आज भी डुग्गर प्रदेश में देखने को मिलते हैं जिनसे पता चलता है कि इस क्षेत्र का इतिहास कितना उज्जवल था।

14. डुग्गर के लोक गीत

डुग्गर के लोक गीत पुस्तक का प्रकाशन 2003 में साहित्य संगम पब्लिकेशन, कच्ची छावनी द्वारा किया गया है। इस पुस्तक में कुल 248 पृष्ठ हैं। डुग्गर प्रदेश की विभिन्न भाषाओं और बोलियों के लोक गीत संकलित हैं। इन लोक गीतों को पढ़ने से डुग्गर की आदि संस्कृति और सभ्यता की झलक मिलती है। इन लोक गीतों में स्थानीय भूगोल भी दिखाई पड़ता है। जन इतिहास का व्याख्यान करते ये लोक गीत कृषक और श्रमिक वर्ग की आस्थाओं, विश्वासों, मान्यताओं, रूढ़ियों, प्रवृतियों और मानसिकताओं को दिखाते हैं। ये लोक गीत डुग्गर प्रदेश के लोगों की आशाओं, हर्ष, उल्लास, तथा विषाद का भी प्रतिनिधित्व करते हैं।

डुग्गर प्रदेश की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह प्रदेश भिन्न-भिन्न भाषाओं और बोलियों का गढ़ है। इस छोटे से प्रदेश में डोगरी भाषा के अतिरिक्त एक दर्जन से अधिक बोलियों के लोक गीतों का समृद्ध भंडार है। डोगरी, चिभाली, गोजरी, गादी, भद्रवाही, पाडरी आदि लोक गीतों को एकत्र करके सर्वप्रथम लिपि बद्ध करने का श्रेय लेखक को जाता है।

इस पुस्तक में डुग्गर प्रदेश की विभिन्न भाषाओं के लोकगीतों का वर्णन मिलता है। इन लोकगीतों को पढ़ने से डुग्गर प्रदेश की रंग-बिरंगी संस्कृति की झलक मिलती है। लेखक ने लोक गीतों के विभिन्न रूपों का उदाहरण सहित संकलन किया है। इस पुस्तक को पढ़कर मानवीय संवेदनाओं का आभास मिलता है।

15. डुग्गर के गुफा मंदिर

डुग्गर के गुफा मंदिर पुस्तक का प्रकाशन 2003 में शिवालिक प्रकाशन पैंथल (कटरा, वैष्णोदेवी) द्वारा किया गया है। यह पुस्तक 126 पृष्ठों में समाहित है। इस पुस्तक का प्रकाशन लेखक ने अपने पुत्र नलिनाक्ष और पुत्रवधू मोनिका के आर्थिक सहयोग से करवाया है। इस पुस्तक में पाँच अध्याय हैं।

प्रथम अध्याय में वैदिक काल से लेकर आधुनिक काल तक खोज में मिली गुफाओं का विवरण है। इन गुफाओं में लंबी गुफाओं, गोल गुफाओं, छोटी गुफाओं का वर्णन और उनमें प्राप्त उपकरणों का भी संक्षिप्त में विवरण दिया है।

दूसरे अध्याय में मानव निर्मित अलग-अलग प्रकार की गुफाओं का वर्णन किया है। इन गुफाओं में- इंदरेश्वर की गुफा, जामवंतेश्वर की गुफा, विश्वेश्वर की गुफा, पंडोर की गुफा आदि प्रमुख रूप से उल्लेखनीय हैं।

तीसरे अध्याय में शिव गुफाओं का वर्णन है। इनका संबंध शिव जी से है इन गुफाओं में - शिव खोड़ी, बनेश्वर महादेव, गुप्तेश्वर महादेव, धनसर की शिव गुफा, सरसी की गुफा आदि प्रमुख रूप से उल्लेखनीय हैं।

चौथे अध्याय में शक्ति से संबन्धित गुफाओं का वर्णन मिलता है। इन गुफा मंदिरों की संख्या 21 है। इन गुफाओं में देवी पिंडी की गुफा, नाभा देवी की गुफा, काली माता की गुफा एवं वैष्णो देवी माता की गुफा का वर्णन विस्तार के साथ दिया गया है।

पाँचवें अध्याय में लेखक ने लोक देवताओं एवं सिद्धों से संबन्धित गुफाओं का उल्लेख किया है। इन गुफाओं की संख्या 34 है। इनमें से कुछ गुफाओं के नाम हनुमान गुफा (बाण गंगा), समकाल देवता की गुफा (त्रिकुटा पर्वत), स्वामी दत्ताधर की गुफा (जम्मू), पीर बाबा की गुफा (चक-उधमपुर) प्रमुख हैं।

इस पुस्तक में वैदिक काल से लेकर आधुनिक काल तक की खोज में मिली डुग्गर प्रदेश की गुफाओं का वर्णन किया गया है। जिसमें मानव निर्मित गुफा, शिव गुफा, शक्ति गुफा, लोक देवता एवं सिद्धों से संबन्धित गुफाएँ प्रमुख है। लेखक ने गुफाओं की खोज में जिन-जिन पर्वतीय क्षेत्रों की यात्राएं की है उनका भी संक्षिप्त परिचय पुस्तक में दिया है। उनका विवरण पाठकों को रोमांचित करता है।

पुरातत्व के शोधार्थियों के लिए यह पुस्तक बहुत ही ज्ञानवर्धक और उपयोगी सिद्ध हो सकती है।

16. डुग्गर में बुद्ध मत

डुग्गर के बुद्ध मत पुस्तक का प्रकाशन साहित्य संगम प्रकाशन, कच्ची छावनी, जम्मू द्वारा 2005 में किया गया। इस पुस्तक के पृष्ठों की संख्या 86 है तथा यह पुस्तक सात अध्यायों में विभाजित है।

प्रथम अध्याय में महात्मा बुद्ध के जीवन चरित्र और बौद्ध दर्शन पर प्रकाश डाला गया है। इस अध्याय में बुद्ध जी द्वारा बताए गए आष्टांगिक मार्ग कौन-कौन से है, दस बाधाएँ कौन-कौन सी हैं तथा कौन-कौन से दार्शनिक और आचार्य हैं जिन्होंने बौद्ध धर्म की पाली भाषा में व्याख्या की है तथा किसने बौद्ध साहित्य की संस्कृत भाषा में रचना की है, इसका वर्णन है।

दूसरे अध्याय में बताया गया है कि डुग्गर प्रदेश में बौद्ध धर्म की स्थिति कैसी थी।

बौद्ध धर्म के प्रचारक सम्राट और महाराजाओं का वर्णन मिलता है जिनमे अशोक सम्राट, ग्रीक राजा मिनांदर (राजा मिलिंद), हिमतल के शाक्य वंशीय नरेश प्रमुख हैं। इन नरेशों ने बौद्ध धर्म के संदेश को डुग्गर प्रदेश के दुर्गम स्थलों तक पहुंचाया था।

तृतीय अध्याय में डुग्गर के प्राचीन बौद्ध स्थलों पर प्रकाश डाला गया है। इसके अंतर्गत लेखक ने भट्टन (नागसेनी) के प्राचीन खंडहर, अंबारा (अखनूर) का बौद्ध प्रतिष्ठान, भद्रवाह का बौद्ध प्रतिष्ठान आदि का विवरण दिया है।

चौथे अध्याय में डुग्गर में स्थित संभावित बौद्ध गुफाओं का परिचय दिया गया है। जिनमें विश्वेश्वर गुफा, पंडोर की गुफा, गानू की गुफा और इंदेश्वर की गुफा को बौद्ध धर्म से जोड़ने का प्रयास किया है।

पाँचवाँ अध्याय ऐतिहासिक महत्व का है जिसमें चीनी यात्री युआन चुआंग की डुग्गर यात्रा का वर्णन है।

छठवें अध्याय में लेखक ने डुग्गर में स्थित गुम्पा और लामा पंथ पर प्रकाश डाला है।

सातवें अध्याय में नए बने बौद्ध स्थलों का परिचय दिया है। इन बौद्ध स्थलों में बौद्ध बिहार विश्नाह और दूसरे नए बने बौद्ध स्थलों का परिचय दिया है।

इस पुस्तक में गौतम बुद्ध जी के जीवन चरित्र पर प्रकाश डाला गया है। साथ ही बौद्ध दर्शन, बौद्ध धर्म के प्रचारक, बौद्ध स्थलों, बौद्ध गुफाओं का परिचय दिया गया है। डुग्गर और बौद्ध धर्म में संबंध में जानकारी प्रदान करने वाली यह एक महत्व पूर्ण पुस्तक है बौद्ध धर्म में रुचि रखने वाले और शोध करने वाले पाठकों का यह पुस्तक मार्ग दर्शन कर सकती है।

17. डुग्गर के दरवेश

डुग्गर के दरवेश पुस्तक का प्रकाशन सन 2005 में शिवालिक प्रकाशन, पैंथल (कटरा, वैष्णोदेवी) के द्वारा किया गया है। इस पुस्तक में कुल 168 पृष्ठ हैं। यह पुस्तक तीन भागों में विभाजित है।

पहले भाग में सूफी दर्शन पर सविस्तार चर्चा की गई है। इसका आधार इस्लाम धर्म है। सूफी मत भारत में कब आया, यहाँ पर कौन-कौन से सूफी संप्रदाय है, सूफियों के प्रमुख सिद्धान्त क्या हैं इसकी पर्याप्त जानकारी इस पुस्तक में मिलती है। लेखक ने इस पुस्तक में सूफियों के तेरह संप्रदायों का परिचय संक्षिप्त रूप में किया है। लेखक के अनुसार भारत में सुहरावर्दी सूफी संत सर्वप्रथम भारत में आए थे। सन 1192 में चिश्ती संप्रदाय भी भारत में प्रवेश कर चुका था। सन् 1195 में ख्वाजा मुइनूद्दीन चिश्ती ने अजमेर में अपना पहला केंद्र स्थापित किया था। इन सबके बारे यथोचित जानकारी इस पुस्तक में मिलती है।

पुस्तक के दूसरे भाग में सूफी दरवेशों का परिचय दिया गया है। इनमें पीर रोशन शाह वली, पीर लखदाता, बाबा बुड्डन शाह अली, शेख सरकोटी, हजरत मसवीन शाह, किश्तवाड़ी, बाबा जीवन शाह, पीरवली शाह, बाबा बरकत अली तथा हजरत शाह मुहम्मद फरीद-उल-द्दीन कादरी सहित कुल मिलाकर 36 सूफी फकीरों का परिचय दिया गया है।

तीसरे अध्याय में स्थानीय 59 सूफी पीरों का उल्लेख परिचय के साथ मिलता है। इन पीरों में सिकंदर शाह, शाह सतार, मकसूद शाह कलंदर, बाबा खान, पीर छतर शाह आदि का उल्लेख उनके साधना के स्थलों के नाम के साथ किया है। लेखक ने सूफियों की मजारों, पीरखानों, खान काहों, दरगाहों का वर्णन भी पुस्तक में किया है।

लेखक ने सूफी विचार धारा को उदार और इन्हे सांप्रदायिक सौहार्द का प्रतीक माना है।

इस पुस्तक में सूफी दर्शन पर सविस्तार चर्चा की गयी है। जिसमें सूफी दरवेशों, फकीरों, और सूफी पीरों का उल्लेख किया गया है। इस

पुस्तक के माध्यम से हमें सूफी साहित्य की पर्याप्त जानकारी मिलती है। जो कि शोधार्थियों और छात्रों के लिए बहुत उपयोगी हो सकती है।

18. डुग्गर की ऐतिहासिक नारियां

डुग्गर की ऐतिहासिक नारियां पुस्तक का प्रकाशन सन 2003 में साहित्य संगम पब्लिकेशन ने किया था। यह पुस्तक 144 पृष्ठों में समाई हुई है। लेखक ने इस पुस्तक में डुग्गर की प्रसिद्ध ऐतिहासिक नारियों का वर्णन किया है। इन ऐतिहासिक नारियों को दो वर्गों में विभाजित किया है। पहले वर्ग में उन नारियों को रखा है जिनका उल्लेख ऐतिहासिक ग्रथों में भी मिलता है। जैसे रानी मंगला, राजकुमारी विज्जला, वीरांगना कोकी देवी, मीना दासी, शंकरी माँजी, राजवानु, रानी विलास माजी, रानी बंदराली, रानी अथर बानू, महारानी चाड़क, स्वतन्त्रता सेनानी नारातु देवी, आदि। इन में से कुछ डुग्गर की अतिसुंदर राजकुमारियाँ भी थीं, जिनका विवाह कश्मीर नरेशों और मुगल शाही परिवार में हुआ था। डुग्गर की इन सुंदरियों ने डुग्गर के हित का ध्यान रखा। इस पुस्तक में वीरांगना कोकी देवी का चित्रण लेखक ने एक ऐसी तेजस्वी महिला के रूप में किया है जिसने रणचंडी बनकर अकेले ही मुगल सेनापति मिर्जा हैदर के कई सैनिकों को अपनी चतुरता और रण कौशल से पराजित कर दिया था। चनैनी के राजा रामचन्द्र की क्रूरता और उत्पीड़न के विरुद्ध नरातु देवी ने जो अभियान छेड़ा था उसकी प्रतिध्वनि आज भी वहाँ के लोक गीतों में स्पष्ट सुनाई देती है। इन प्रमुख नारियों के अतिरिक्त अन्य 22 और नारियों का उल्लेख भी लेखक ने अपनी इस पुस्तक में किया है।

डुग्गर के इस उपेक्षित विषय को पुस्तक का रूप देकर लेखक ने प्रशंसनीय कार्य किया है। इसकी हमें सराहना करनी चाहिए। इस पुस्तक को लिखने में लेखक ने लोक शैली का प्रयोग किया है। यह पुस्तक सभी के लिए पठनीय है।

19. डुग्गर के मंदिर

डुग्गर के मंदिर पुस्तक का प्रकाशन सन 2005 में शिवालिक प्रकाशन, पैंथल (कटरा, वैष्णो देवी) के द्वारा किया गया है। यह शोध परक पुस्तक

228 पृष्ठों में समाहित है। इस पुस्तक में डुग्गर प्रदेश में स्थित मंदिरों पर विस्तृत, समग्र विवरण मिलता है। इन मंदिरों के अध्ययन के लिए लेखक ने पर्याप्त भ्रमण करके उपुक्त सामग्री एकत्र की है। मंदिरों के स्थापत्य का जो विश्लेषणात्मक वर्णन किया है वह ऐतिहासिक और पुरातात्विक दृष्टि से प्रामाणिक प्रतीत होता है।

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने उन मंदिरों का भी वर्णन किया है जिन पर अभी तक कोई भी काम नहीं हुआ था और लोग उनसे अपरिचित थे।

यह पुस्तक पाँच अध्यायों में विभाजित है।

पहला अध्याय मंदिर के स्थापत्य पर आधारित है। जिसमें लेखक ने मंदिर निर्माण की अलग-अलग शैलियों का वर्णन किया है। जिसमें द्रविड़ शैली, आर्य शैली तथा पहाड़ी शैली का वर्णन मिलता है।

दूसरे अध्याय में लेखक ने मुस्लिम कालीन मंदिरों का विवरण दिया है। जिसमें क्रिमची मंदिर समूह, बबौर मंदिर समूह, सिया द्रमण मंदिर समूह, हरिहर मंदिर, पंचनाडा मंदिर आदि के स्थापत्य पर चर्चा की गई है।

तीसरे अध्याय में सामंत कालीन मंदिरों के स्थापत्य पर प्रकाश डाला गया है। सामंतकालीन मंदिरों को तीन उप शीर्षकों में विभाजित किया है। इनमें शक्ति (शाक्त स्थापत्य) के दस मंदिर, शिव के बाईस मंदिर, विष्णु के चार मंदिरों का परिचय दिया है।

चौथे अध्याय में डोगरा कालीन मंदिरों के स्थापत्य का वर्णन है। ये मंदिर अलग-अलग देवताओं को समर्पित है। जैसे शैव मंदिर, विष्णु मंदिर, नृसिह मंदिर, लक्ष्मी नरायन मंदिर, सत्य नारायण मंदिर, शक्ति मंदिर आदि। इन सबको मिलाकर कुल 142 मंदिरों का वर्णन है।

पाँचवाँ अध्याय नाग मंदिरों के स्थापत्य पर आधारित है। डुग्गरों में नागों को पानी का देवता माना जाता है। डुग्गर क्षेत्र के अलग-अलग स्थानों पर बने नाग देवताओं के मंदिर के स्थापत्य का बड़ा ही सुन्दर वर्णन इस अध्याय में मिलता है।

पुस्तक के अंत में लेखक ने अलग-अलग देवताओं के मंदिरों की सूची भी दी है इस सूची में नृसिंह मंदिरों की संख्या-38, राम मंदिरों की संख्या-34, कृष्ण मंदिरों की संख्या-33, अन्य मंदिरों की संख्या-29 बताई है।

इस पुस्तक में लेखक ने मुस्लिम कालीन, डोगरा कालीन, सामंत कालीन मंदिर तथा नाग मंदिरों का वर्णन किया है। यह पुस्तक ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है। डुग्गर के मंदिर और उनके स्थापत्य पर यह उत्तम पुस्तक है। जिसका श्रेय लेखक को जाता है। पुस्तक के अंत में लेखक ने उन सभी लोगों का शुक्रिया अदा करते हुए उनकी सूची दी है जिन्होंने इस पुस्तक की रचना करते समय लेखक की किसी भी प्रकार की मदद की थी। यह बात लेखक के महान एवं सहृदय होने का परिचय कराती है।

20. डुग्गर के निम्बार्क संत

डुग्गर के निम्बार्क संत पुस्तक का प्रकाशन सन 2006 में शिवालिक प्रकाशन, पैंथल, (कटरा, वैष्णोदेवी) द्वारा किया गया। इस पुस्तक के पृष्ठों की संख्या 94 है। धर्म और संस्कृति पर लिखित यह पुस्तक डुग्गर के निम्बार्क संतों की जीवनियों पर आधारित है।

लेखक ने यह पुस्तक डुग्गर के निंबार्कचार्य की परम शिष्या और स्नेहमई स्वर्गीय माता के चरण कमलों को समर्पित की है। पुस्तक के प्रारम्भ में लेखक ने निंबार्क संप्रदाय और इसके प्रवर्तक आचार्य निंबकाचार्य का संक्षिप्त जीवन परिचय दिया है। लेखक ने निंबार्क दर्शन, ब्रह्म के प्रति संप्रदाय की अवधारणा, की व्याख्या अति सरल शब्दावली में करते हुए जीव, जगत, की परिभाषा भी दी है। लेखक ने इस संप्रदाय की अर्चना पद्धति के अंतर्गत सर्वेश्वर पूजा, राधा कृष्ण की युगल उपासना तथा अष्ट्दक्षार मंत्र के जाप की अनिवार्यता को भी बताया है।

लेखक के अनुसार डुग्गर के निंबार्क संप्रदाय का प्रथम केंद्र वि. संवत् 1622 में अखनूर के निकट 'इंद्री बकौल' में बना था। इसके प्रथम आचार्य कृष्ण दास जी थे। उन्हीं के प्रयासों से यह संप्रदाय डुग्गर के कई क्षेत्रों में फैला।

त्रिकूटांचल क्षेत्र में इस संप्रदाय का पहला केंद्र बाबा जगन्नाथ दास जी ने सन 1935 में ऋषि कुटीर आश्रम की स्थापना करके किया। उनके सैकड़ों शिष्यों ने निंबार्क संप्रदाय में दीक्षा लेकर युगल उपासना पद्धति का अनुसरण किया। उनके पश्चात उनके परम शिष्य बाबा तुलसी दास जी ने उनके आश्रम का संचालन किया और आज उनके शिष्य बाबा श्याम सुंदर दास जी उनके आश्रम का संचालन कर रहे हैं।

इस पुस्तक में लेखक ने निंबार्क संप्रदाय और उसके प्रवर्तक का परिचय दिया है। निंबार्क संप्रदाय का केंद्र डुग्गर प्रदेश में कब और कैसे बना साथ ही किस-किस ने इस संप्रदाय में दीक्षा ली इसका सविस्तार वर्णन किया गया है। इस पुस्तक को पढ़कर निंबार्क संप्रदाय की विस्तृत जानकारी मिलती है। साथ ही यह भी पता चलता है कि लेखक का संबन्धित विषय पर पूर्ण अधिकार है। इसकी भाषा सरल और बोध गम्य है। धर्म में रुचि रखने वालों के लिए यह पुस्तक एक उपहार के समान है।

21. डुग्गर की नदियां

डुग्गर की नदियां पुस्तक का प्रकाशन अक्षय प्रकाशन नई दिल्ली द्वारा 2007 में किया गया। इस पुस्तक में कुल 126 पृष्ठ है। डुग्गर की संस्कृति और सभ्यता का विकास नदी तटों के साथ-साथ हुआ है, अतः नदियां जल संरक्षण की दृष्टि से ही नहीं अपितु स्थानीय संस्कृति का एक अभिन्न अंग हैं। प्राचीन काल से ही पर्व-त्योहारों पर नदियों में स्नान करना अनिवार्य माना गया है। लेखक ने इस पुस्तक में चन्द्र भागा और उसकी सहायक नदियों, अंजसी नदी, अंस नदी, नीली तवी, रगारी तवी, पुंछ तौसी, जम्मू तौसी, विश्वान्तर नदी, भिद्य नदी, इरावती नदी तथा उनकी सहायक नदियों का उल्लेख भौगोलिक परिवेश में किया है।

डुग्गर की जिन नदियों का उल्लेख ऋग्वेद नदी सूक्त में हुआ है लेखक के अनुसार वे- परुण्णय (रावी), असि कन्या (चंद्र भागा), मरुद वृधे (मड़वा नदी), कुलिशी, अंजसी और वीर पत्नी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। इस पुस्तक में लेखक ने वैदिक कालीन इन नदियों के सांस्कृतिक महत्व पर भी प्रकाश डाला है।

पुस्तक के अंत में लेखक ने जल संसाधन से जुड़े सरों, जल कुंडों, जल प्रपातों, का विवरण अति संक्षिप्त रूप में इसलिए दिया है ताकि नदियों के निकास स्थलों के महत्व पर भी प्रकाश डाला जा सके।

इस पुस्तक में लेखक ने डुग्गर प्रदेश की उन नदियों का उल्लेख किया है जिनका वर्णन ऋगवेद नदी सूक्त में किया गया है। साथ ही नदियों के सांस्कृतिक और भौगोलिक महत्व पर भी प्रकाश डाला है। लेखक ने यह भी बताया है कि नदियां हमारे लिए क्यों उपयोगी हैं और उनका संरक्षण किस प्रकार किया जाना चाहिए। डुग्गर की जिन नदियों पर बाँध बनाकर जल-विद्युत को प्राप्त किया है उनका व्योरा भी नदियों के अंतर्गत दिया है- सरिताओं, जलधाराओं, और नालों का वर्णन भी इस पुस्तक में करके लेखक ने इस पुस्तक के महत्व को बढ़ा दिया है।

22. डुग्गर के नगर

डुग्गर के नगर पुस्तक का प्रकाशन सन 2007 में साहित्य संगम पब्लिकेशन कच्ची छावनी जम्मू द्वारा किया गया। 240 पृष्ठों में समाहित यह पुस्तक डुग्गर जनजीवन का दिग्दर्शन कराती है।

यह पुस्तक अपने ढंग की पहली पुस्तक है जिसमें डुग्गर प्रदेश में स्थित नगरों की संरचना, भूगोल, इतिहास, जनजीवन और विशिष्टताओं का शोधपरक अध्ययन किया गया है।

इस पुस्तक में डुग्गर प्रदेश में स्थित 75 नगरों, उपनगरों, ऐतिहासिक ग्रामों का वर्णन मिलता है। इन नगरों में कई डुग्गर में स्थित राजवाड़ों की राजधानियाँ रहे हैं तो कई नगरों का सांस्कृतिक और आर्थिक महत्व भी रहा है। संरचना की दृष्टि से पर्वतीय और मैदानी क्षेत्र में जो अंतर है उसे लेखक ने स्पष्ट रूप से दिखाया है।

डुग्गर प्रदेश में स्थित काष्टवट (किशतवाड़), भद्रवकाश (भद्रवाह), डोडा, रामबन, देवल, मेंढर, ऊधमपुर, जगनपुर, शालकोट, अंबरायण, बंदरालता, पुंछ, मन कोट, जसरोता आदि अति प्राचीन नगर हैं। इनमें से कई नगरों का

उल्लेख कल्हण कृत राजतरंगिणी में भी मिलता है। और कई नगर ऐसे भी हैं जिनका निर्माण मध्यकाल में राजाओं और राज सामंतों द्वारा किया गया थ।

इनकी संरचना, लोक संस्कृति, रहन-सहन, के सम्बन्ध में इस पुस्तक में परिचय दिया गया है।

इन पुस्तक में लेखक ने नगरों, उपनगरों तथा ऐतिहासिक ग्रामों का उल्लेख किया है। जिन सांस्कृतिक नगरों का उल्लेख किया गया है उनमें पुर मण्डल, नृसिंह पूरा, कटरा, आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। लेखक ने बब्बा पुर, बल्ल पुर के अतिरिक्त चेडेई आदि कुषाण, मेंढर आदि ग्रीक बस्तियों का परिचय भी दिया है जिससे यह पुस्तक अपने आप में सार्थक हो गई है।

इतिहास में रुचि रखने वाले पाठको और शोधार्थियों के लिए यह एक उपयोगी पुस्तक हो सकती है।

23. जीवन चक्र

जीवन चक्र पुस्तक का प्रकाशन सन 2008 में जम्मू और कश्मीर ललित कला अकादमी द्वारा प्राप्त आर्थिक सहयोग से शिवालिक प्रकाशन, पैंथल, (कटरा, वैष्णोदेवी) द्वारा किया गया। इस पुस्तक में 240 पृष्ठ हैं। जीवन चक्र लेखक की डोगरी भाषा में लिखित प्रथम पुस्तक है। यह पुस्तक लेखक के जीवन के संघर्षों पर आधारित है। यह पुस्तक 18 तरंगों (अध्यायों) पर आधारित है।

जीवन चक्र पुस्तक के अनुसार लेखक का जन्म 8 जुलाई 1937 में पैंथल ग्राम के उपाध्याय (पाधा) परिवार में हुआ। इनके पिता का नाम सावन मल और माता का नाम आसो देवी था। लेखक ने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा अपने गाँव में ही प्राप्त की किन्तु सातवीं कक्षा उतीर्ण करने के पश्चात अपने परिवार के साथ रहने के लिए पंजाब में स्थित मक्खू कालोनी जाना पड़ा। क्योंकि 1947 की घटना जिसे लेखक ने काले दिन के नाम से संबोधित किया है के कारण उनके पिता का व्यवसाय ठप्प हो गया था तो वे काम की तलाश में पंजाब चले गये थे। सन 1954 में लेखक ने एक गैर सरकारी स्कूल से दसवीं की परीक्षा पास की। 16 वर्ष की आयु में वे एक प्राइवेट कंपनी में नौकर हो गए। लेखक ने 1956 में पंजाब से प्रभाकर की परीक्षा

उत्तीर्ण की और 1956 में ही हीरानगर हाई स्कूल में एक हिन्दी शिक्षक के रूप में नियुक्त हुए। एक अध्यापक के रूप में लेखक ने हीरानगर, चनैनी, रियासी, टिकरी, पैंथल और चढ़ेआई में अध्यापन कार्य किया। लेखक ने नौकरी के ही बीच में एम. ए. हिन्दी की परीक्षा उत्तीर्ण की और राज्य के लोक सेवा आयोग के द्वारा उच्च शिक्षा विभाग कठुआ में प्राध्यापक नियुक्त हुए। लेखक ने महाविद्यालय ऊधमपुर, एम. ए. एम. कॉलेज, जम्मू, कॉलेज ऑफएजुकेशन जम्मू, महिला कॉलेज ऊधमपुर आदि विद्यालयों और कॉलेजों को अपनी सेवाएँ प्रदान कीं। अप्रैल 1995 में सरकारी नौकरी से निवृत्त हुए। निवृति के पश्चात लेखक ने शिवालिक कॉलेज ऑफ एजुकेशन, ऊधमपुर, संघ लोक सेवा आयोग, साहित्य अकादमी, दिल्ली को भी अपनी सेवाएँ दीं।

एक लेखक के रूप में 2008 तक आपकी 25 पुस्तकों का प्रकाशन हो चुका था तथा कई साहित्यिक पुरस्कार भी प्राप्त किए इसका स्पष्ट उल्लेख आपकी इस पुस्तक में मिलता है।

यह पुस्तक लेखक के अपने जीवन पर आधारित है। इस पुस्तक में लेखक ने अपने जन्म से लेकर 2008 तक जीवन अनुभव एवं साहित्यिक अनुभवों का वर्णन किया है। लेखक के जीवन पर शोध करने और उनके जीवन से संबन्धित जानकारी प्राप्त करने वालों के लिए यह एक उत्तम भेंट है।

24. स्वामी नित्यानन्द

स्वामी नित्यानन्द पुस्तक का प्रकाशन स्वामी नित्यानन्द शोध केंद्र ने सन 2008 में उधम पुर के प्रख्यात पंडित और ज्योतषी देवराज जी के विशेष अनुग्रह पर किया था। यह पुस्तक डुग्गर की महान आध्यात्मिक विभूति स्वामी नित्यानन्द के जीवन दर्शन पर आधारित है। इस पुस्तक के सहयोगी लेखक प्रकाश प्रेमी हैं जो डोगरी भाषा के प्रख्यात साहित्यकार हैं।

इस पुस्तक के प्रारम्भ में स्वामी नित्यानन्द शोध केंद्र के संरक्षक श्री प्रभाकर जी का परिचय दिया गया है। जो ऊधमपुर की सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक संचेतना के संवाहक हैं।

इस पुस्तक में लेखकों ने स्वामी नित्यानन्द के अवतरण से लेकर गोलोकवास तक के जीवन को कई उपशीर्षकों में विभाजित किया है। 'अवतरण से कौमार्यावस्था' तक शीर्षक के अंतर्गत स्वामी जी का जन्म विक्रम संवत 1927 की ज्येष्ठ शुक्ल की प्रतिपदा को ऊधमपुर क्षेत्र के प्रख्यात पंडित तथा दैवज्ञ श्री चन्द्र मौली के घर में हुआ था। उन्होंने शिक्षा रघुनाथ पाठशाला जम्मू से प्राप्त की थी। महात्मा पुरुषोत्तम की सदप्रेरणा से उनकी रुचि योग की और बढ़ी और वे गृह परित्याग करके योगी बन गए। कपूर थला के एक योगी राज की देख-रेख में आपने योग साधना की। स्वामी नित्यानन्द ने देश का भ्रमण भी किया और कई महान संतों के संपर्क में भी रहे।

जम्मू-कश्मीर के महाराजा प्रताप सिंह ने इन्हे राज गुरु का पद प्रदान किया परंतु आपने राजमहल में रहने के स्थान पर ज्ञानकोट (चढ़े आई) में अपना साधना स्थल बनाया। सन 1935 में स्वामी जी पैंथल आ गए और वहाँ पर एक आश्रम बनाकर योग का प्रचार और प्रसार किया। स्वामी जी ने योग पर दो पुस्तकें भी लिखी। जिंका शीर्षक था- 'योग का सीधा मार्ग' तथा 'योग सरल पद्धति विज्ञान'।

स्वामी जी ने 25 फरवरी 1964 को इस संसार से विदा ली और गोलोक वासी हो गए।

इस पुस्तक में स्वामी नित्यानन्द जी के जन्म से लेकर उनके निर्वाण तक के जीवन की विस्तृत जानकारी का उल्लेख किया गया है। स्वामी नित्यानन्द जी ने अपना समस्त जीवन जन जागृति में अर्पण कर दिया। वे आजीवन ही मानव जीवन के उत्थान के लिए संघर्ष रत रहे।

स्वामी जी पर लिखित यह पुस्तक डुग्गर के धार्मिक संतों पर लिखित प्रामाणित पुस्तक है।

25. जातरा चक्कर

'जातरा चक्कर' पुस्तक का प्रकाशन सन 2012 में शिवालिक प्रकाशन पैंथल (कटरा, वैष्णोदेवी) द्वारा किया गया था। यह पुस्तक डोगरी भाषा में लिखी गयी है और इसमें 240 पृष्ठ हैं। इस पुस्तक में लेखक ने अपने

यात्रा संस्मरण बहुत ही रोचक शब्दावली में लिखे हैं। इस पुस्तक में कुल तीस यात्राओं के संस्मरणों का संकलन किया गया है। इनमें दक्षिण भारत की यात्रा में लेखक ने तमिलनाडु, केरल, एवं आन्ध्रप्रदेश की यात्रा के समय किन-किन विश्वविद्यालयों और संस्कृति केन्द्रों का अवलोकन किया उसकी विस्तृत चर्चा की गयी है।

दूसरा लेख उत्कल यात्रा पर है इस यात्रा में लेखक ने कलकत्ता का भ्रमण किया, विक्टोरिया मेमोरियल और तारामण्डल को देखने के पश्चात रेल द्वारा जगन्नाथपुरी में जगन्नाथ मंदिर, कोणार्क मंदिर, लिंग राज मंदिर के दर्शन किए। उसके पश्चात ब्रह्मपुर तक की यात्रा सन 1989 में की। सन 2007 में लेखक ने गंगासागर की यात्रा की और महा काली जी के मंदिर को भी देखा। कलकत्ता के पश्चात लेखक ने बौद्ध गया में बौद्ध मंदिर के दर्शन के लिए गए। वहाँ से लेखक पटना होते हुए वीर गंज पहुंचे और फिर वहाँ से काठ मांडू चले गए।

सन में 1964 में जम्मू से मुंबई की यात्रा की, 2003 में नासिक, त्रयम्बकेश्वर गए नासिक में भीमशंकर जी के दर्शन के पश्चात पूना होते हुए जम्मू लौट आये। सन 2003 में ही लेखक ने अहमदाबाद की भी यात्रा की वहाँ उन्होंने साबरमती और गुजरात विद्यापीठ का भी अवलोकन किया। सन 2008 में लेखक ने पावा गढ़ की यात्रा की।

सन 2003 में सोमनाथ की यात्रा की, 2009 में कच्छ की यात्रा, 2003 में माउंट आबू की यात्रा, 2005 में हल्दी घाटी की यात्रा, 2009 में पालिताना की यात्रा, 1998 में बृज मंडल की, 1998 में पुष्कर और चित्तौरगढ़ की यात्रा की, 2004 में जयपुर की, 1990 में काशी मगध की, 2006 में प्रयाग की, 2006 में अयोध्या की, 2004 में उज्जैन की, 2001 में उत्तरांचल की, 2004 में मंसूरी की, 2007 में कुमाऊँ की, 1998 में शिमला तथा मणि करण की, 2002 में कुल्लू मनाली की, 1968 में अमरनाथ की, 2006 में लद्दाख की यात्राएं की।

लेखक ने अपने जीवन से संबन्धित पारिवारिक और साहित्यिक सभी यात्राओं का पूरा व्योरा सिलसिलेवार से अपनी इस पुस्तक में वर्णित किया

है। पुस्तक को पढ़कर ऐसा प्रतीत होता है मानों हम लेखक के साथ ही उन यात्राओं पर निकले थे। वास्तव में यह पुस्तक बहुत ही रोचक तथा ज्ञान वर्धक है।

26. डुग्गर की जातियाँ (एक अध्ययन)

डुग्गर की जातियां (एक अध्ययन) पुस्तक का प्रकाशन शिवालिक प्रकाशन केंद्र पैंथल, (कटरा, वैष्णोदेवी) से जम्मू एंड कश्मीर ललित कला, संस्कृति एवं भाषा अकादमी के आर्थिक सहयोग द्वारा 2014 में किया गया। इस पुस्तक में कुल 324 पृष्ठ हैं। इस पुस्तक में प्रागैतिहासिक काल से लेकर आधुनिक काल तक इस डुग्गर प्रदेश में निवास करने वाली जतियों का विवरणात्मक परिचय दिया है।

यह पुस्तक पाँच अध्यायों में विभाजित है।

प्रथम अध्याय प्रागैतिहासिक एवं प्राचीन जातियों पर आधारित है जिसमें नाग, खस, कोली, बड्ड, नदियाला, मौलगी (डांगी), गिरथाड़ी कुल सात जातियों का इतिहास और परिचय दिया गया है।

द्वितीय अध्याय जन जातियों पर आधारित है। जिसमें गद्दी, गुर्जर (गुज्जर), बकरवाल, सिप्पी, भोट आदि कुल पाँच जन जातियों का सांस्कृतिक दृष्टि से वर्णन किया गया है।

तृतीय अध्याय अनुसूचित जन जतियों पर आधारित है। जिसमें मेघ, म्हाशः(डोम), चमार, वसिठ (वशिष्ठ), चूड़े, राटल, बटाल, सरेयारा, धेयार, बटवाल, बरवाल, गारडी तथा जुलाहे आदि कुल 13 जन-जातियों का परिचय, उनकी उपजातियाँ, उनकी जीवन शैली, उनके संस्कारों आदि का वर्णन किया गया है।

चतुर्थ अध्याय पिछड़ी जातियों से संबन्धित है। जिसमें 39 जातियों का वर्णन किया गया है। ये जातियाँ हैं- नाई, कुम्हार, बाजीगर (मदारी), लोहार, तरखान, तेली, धोबी, सिल्कगिरी, शाक साज, धीवर (झीर), मछुआरे, सांसी, भाँड़, भट, कंजर-फकीर, कुल फकीर, दुम्बली फकीर, घराटी, मोची, भंगी,

मरासी, डूम, बुनकर (जुलाहे), सोची, आदि का वर्णन किया गया है।

पंचम अध्याय में उच्च जातियों का वर्णन किया गया है। इस अध्याय में कुल नौ जातियों का उल्लेख किया गया है। ये जातियाँ है- ब्राह्मण, खतरी, राजपूत, जाट, महाजन, छिम्बे, सिक्ख (डोगरा), जैनी (भाबड़े), डोगरा मुसलिम आदि।

लेखक ने प्रत्येक जाति का परिचय, उनके संस्कार, परंपरायें तथा जीवन शैली का वर्णन इस पुस्तक में किया है।

इस पुस्तक में प्राचीन जातियों, जन जातियों, अनुसूचित जातियों, पिछड़ी जातियों तथा उच्च जातियों का विवरणात्मक रूप में परिचय दिया गया है। डुग्गर जाति के ऊपर अध्ययन करने वाले छात्रों और पाठक गणों के लिए इसमें उचित सामाग्री उपलब्ध है।

27. पंचेरीः समाज और संस्कृति

पंचेरीः समाज और संस्कृति नामक पुस्तक का प्रकाशन सन 2015 में शिवालिक प्रकाशन कटरा, वैष्णोदेवी, ने केंद्रीय हिन्दी निदेशालय नई दिल्ली द्वारा प्रदान की गई आर्थिक सहायता से किया। इस पुस्तक के पृष्ठों की संख्या 164 है।

पंचेरी जम्मू-कश्मीर राज्य के उधमपुर जनपद के अंतर्गत आने वाला एक अति पिछड़ा पर्वतीय और दुर्गम विकास खंड है। बाईस पंचायतों के अंतर्गत 38 गावों में परिसीमित यह भूखंड भावागत और संस्कृतिक विविधताओं के कारण अद्‌भुत और विलक्षण प्रतीत होता है।

लेखक ने इस क्षेत्र के भूगोल, इतिहास, धर्म, जातियों और प्रजातियों का रोचक शैली में परिचय दिया है। प्रागैतिहासिक काल से आधुनिक काल तक इस क्षेत्र में जो सांस्कृतिक परिवेश रहा लेखक ने इस पुस्तक में उस विषय पर विशद चर्चा की है। यह भू-भाग बाहरी आक्रमणकारियों के प्रभाव से मुक्त (सुरक्षित) रहा है। अतः इस क्षेत्र की धार्मिक, सांस्कृतिक, परम्पराएँ आज भी किसी न किसी रूप में जीवित है।

यह पुस्तक नौ अध्यायों में समाहित है। पहले अध्याय में पंचेरी क्षेत्र का भौगोलिक परिचय दिया गया है।

द्वितीय अध्याय मेँ उस क्षेत्र में पायी जाने वाली प्रजातियों और लोगों का संक्षिप्त परिचय दिया गया है।

तीसरा अध्याय ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधारित है।

चतुर्थ अध्याय के अनुसार वहाँ का जन जीवन कैसा था वे लोग कैसे रहते थे, खाना-पीना आदि के बारे चर्चा की गयी है।

पाँचवाँ अध्याय के अंतर्गत वहाँ की संस्कार प्रणालियों की चर्चा की गई है।

छठे अध्याय में वहाँ के स्थानीय देवी, देवताओं के बारे में बताया गया है।

सातवाँ अध्याय भाषा, बोलियों और लोक साहित्य से संबन्धित है।

आठवें अध्याय के अंतर्गत वहाँ के दर्शनीय स्थलों की रोचक जानकारी दी गयी है।

नवें अध्याय में वहाँ की कला सम्पदा की विस्तृत जानकारी दी गयी है।

इस पुस्तक में लेखक ने पंचेरी क्षेत्र की भौगोलिक, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, वहाँ के जन-जीवन, संस्कार, देवी-देवताओं, दर्शनीय स्थलों एवं वहाँ की कला सम्पदा की विस्तृत जानकारी दी है। लेखक ने इस क्षेत्र की यात्रा करके जो सामग्रियाँ एकत्र की है वे पूर्णतः प्रामाणिक और शोधार्थियों के लिए उपयोगी हैं।

28. डुग्गर के राजमहल

डुग्गर के राजमहल पुस्तक का प्रकाशन सन 2016 में साहित्य संगम पब्लिकेशन, कच्ची छावनी जम्मू द्वारा किया गया था। इस पुस्तक में डुग्गर प्रदेश के राजमहलों, हवेलियों, विश्राम स्थलियों, बारदरियों के संबंध में विस्तार से चर्चा की गई है। इस पुस्तक के पृष्ठों की संख्या 152 है।

इस पुस्तक में डुग्गर क्षेत्र में स्थित राज महलों का परिचय वास्तु विन्यास की दृष्टि से किया गया है। इनमें से कई राज महल भारतीय वास्तुकला के भव्य दर्शन कराते हैं, तो कई मुगल कालीन वास्तुकला को आधार बनाकर निर्मित किए गये हैं। कई महल अति प्राचीन और पाषाण कालीन शिलाओं से निर्मित हैं तो कई पाश्चात्य वास्तुकला का अनुपम उदाहरण है। जैसे कि अमर महल का निर्माण पाश्चात्य वास्तुकला के आधार पर हुआ है।

लेखक ने अपनी पुस्तक में उन प्राचीन महलों के पुरावशेषों की भी खोज करके उनके बारे में वर्णित किया है जो कि अभी पूर्ण रूप से धराशायी हो चुके हैं।

लेखक ने डोगरा कालीन निर्मित भवनों की विशेषताओं की भी सविस्तार चर्चा की है जो आज भी दृष्टव्य हैं।

लेखक ने अपनी पुस्तक में 15 वीं शताब्दी के पश्चात निर्मित भवनों को चार वर्गों में विभाजित किया है। राजस्थानी स्थापत्य से प्रभावित महल, जिनकी संख्या 11 है, मुगल (मुसलिम) वास्तुकला से प्रभावित भवन जिनकी संख्या 12 है। पहाड़ी शैली में निर्मित भवन, जिनकी संख्या 13 है, तथा पाश्चात्य शैली में निर्मित भवन, जिनकी संख्या 41 है।

इस पुस्तक में लेखक ने डुग्गर के राजमहलों का विवरणात्मक परिचय दिया है। इस पुस्तक में 15 वीं शताब्दी के पश्चात निर्मित महलों, जिसमें राजस्थानी स्थापत्य से प्रभावित महल, मुगल वास्तुकला से प्रभावित भवन, पहाड़ी शैली में निर्मित भवन तथा पाश्चात्य शैली में निर्मित भवनों की चर्चा की गई है। वास्तुकला में रुचि रखने वाले शोधार्थियों के लिए यह पुस्तक बहुत उपयोगी सिद्ध हो सकती है। इस पुस्तक की भाषा सरल और आसानी से ग्राह्य है।

29. डुग्गर की ऐतिहासिक समाधियाँ

डुग्गर की ऐतिहासिक समाधियां नामक इस पुस्तक का प्रकाशन सन 2018 में अक्षय प्रकाशन, अंसारी रोड, नयी दिल्ली द्वारा किया गया। यह

पुस्तक डुग्गर के ऐतिहासिक पुरुषों, महिलाओं, की समाधियों और स्मृति स्थलों पर आधारित है।

इस पुस्तक में जम्मू के राजाओं और रानियों की समाधियों, रामकोट के राजवंशियों की समाधियों, चनैनी राज्य की समाधियों, सांबा जनपद के अंतर्गत स्थिति सतियों की समाधियाँ किश्तवाड़ में स्थित मजारों, डुग्गर में स्थित प्राचीन समाधियों आदि का विवरण ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया गया है।

लेखक ने क्रिमीश यक्ष, सेनापति गोचर, घोड़ागली के स्मारक, एवं बुनिफालेस की समाधियों पर जो शोध कार्य किया है वह प्रशंसनीय है। इन समाधियों की खोज में लेखक को बहुत भटकना पड़ा क्योंकि ये समाधियां लुप्त प्राय: होने कि स्थिति में थीं।

इनके अतिरिक्त लेखक ने शहीद आंदोलन कारियों की समाधियों पर भी सविस्तार चर्चा की है। इन शहीदों में प्रजा-परिषद आंदोलन के शहीद, श्री अमर नाथ भूमि के आंदोलन के शहीद तथा विद्यार्थी आंदोलन कारियों के स्मारकों का भी उल्लेख किया है।

इनके अतिरिक्त दलित आंदोलन के शहीदों, युद्ध वीरों के स्मृति स्थलों, राजनेताओं, पत्रकारों के नाम पर बनी समाधियों, स्मारकों, तथा स्मृति स्थलों को भी पुस्तक में समुचित स्थान दिया है।

इस पुस्तक में लेखक ने जम्मू के राजा-रानियों, राजवंशियों, आंदोलन कारियों, दलित आंदोलन के शहीदों की समाधियों, स्मारकों तथा स्मृति स्थल की स्पष्ट जानकारी दी है। लेखक ने इस पुस्तक में 78 समाधियों, स्मारकों और स्मृति स्थलों का परिचय ऐतिहासिक परिप्रक्ष्य में दिया है।

30. किश्तवाड़ : संस्कृति और परंपरा

किश्तवाड़ संस्कृति और परंपरा पुस्तक का प्रकाशन सन 2009 में शिवालिक प्रकाशन, पैंथल, कटरा, वैष्णोदेवी ने जम्मू एंड कश्मीर अकादमी ऑफ आर्ट, कल्चर एंड लैंगवेजेज द्वारा प्रदान किये गए वित्तीय सहयोग से

किया गया था। जम्मू एंड कश्मीर भाषा, कला एवं संस्कृति विभाग ने इस पुस्तक का डोगरी भाषा में अनुवाद, जो कि डॉ. सुनीता भड़वाल जी ने किया था का प्रकाशन 2016 में करवाया।

लेखक ने यह पुस्तक किश्तवाड़ के प्रख्यात इतिहासकार श्री दुनी चन्द्र शर्मा को समर्पित की है।

इस पुस्तक को लेखक ने दस अध्यायों में विभाजित किया है। प्रथम अध्याय में किश्तवाड़ जनपद का भौगोलिक परिवेश कैसा है वहाँ की वनस्पतियों, फसलों, जलवायु, आदि का परिचय दिया है।

दूसरे अध्याय में वहाँ पर कौन-कौन सी प्रजातियाँ रहती हैं इसका विस्तार सहित वर्णन किया है।

तीसरे अध्याय में किश्तवाड़ प्रदेश की ऐतिहासिक पृष्टिभूमि पर प्रकाश डाला है।

चौथे अध्याय में वहाँ के लोक जीवन पर चर्चा की गई है। साथ ही सामाजिक, आर्थिक विशिष्टताओं और मान्यताओं और विश्वासों पर सारगर्भित चर्चा की है।

पंचम अध्याय पर्व-उत्सवों और त्योहारों पर आधारित है। इस अध्याय़ में लोक अनुष्ठान, लोक नाट्य, लोक नृत्य तथा लोक क्रीड़ाओं का उल्लेख किया गया है।

छठा अध्याय स्थानीय देवी देवताओं पर आधारित है। उस क्षेत्र में कौन से देवी-देवताओं की पूजा की जाती है इत्यादि का वर्णन है।

सातवें अध्याय में संस्कार पद्धतियों का वर्णन किया गया है। जैसे जन्म संस्कार, मुंडन संस्कार, विवाह संस्कार इत्यादि।

आठवाँ अध्याय किश्तवाड़ की बोलियों और वहाँ के लोक साहित्य पर लिखा गया है।

नवें अध्याय में किश्तवाड़ के सूफी और संतों का परिचय दिया गया है।

दसवां अध्याय कला और साहित्य पर आधारित है। इस अध्याय के अंतर्गत इस जनपद की स्थापत्यकला, मूर्तिकला, चित्रकला, संगीतकला और साहित्य पर प्रकाश डाला है।

इस पुस्तक के परिशिष्ठ में किश्तवाड़ की लिपि का भी वर्णन मिलता है।

इस पुस्तक में किश्तवाड़ के भौगोलिक परिवेश का परिचय दिया गया है वहाँ रहने वाली जाती-प्रजातियों का वर्णन किया गया है। ऐतिहासिक पृष्ठिभूमि की चर्चा की गयी है। लोक जीवन का परिचय दिया गया है। उत्सव-त्योहारों का वर्णन किया गया है। स्थानीय देवी-देवताओं, संस्कार पद्धति, किश्तवाड़ की बोलियों, लिपि, कला साहित्य का सविस्तार वर्णन किया गया है।

किश्तवाड़ जनपद के इतिहास और संस्कृति पर लिखी गई यह पुस्तक किश्तवाड़ पर काम करने वाले शोधार्थियों के लिए बहुत उपयोगी साबित होगी।

31. डुग्गर की बावलियाँ: एक सर्वेक्षण

डुग्गर की बावलियाँ पुस्तक का प्रकाशन 2021 में अक्षय प्रकाशन, अंसारी रोड नई दिल्ली द्वारा किया। यह पुस्तक 234 पृष्ठों पर आधारित है। डुग्गर की बावलियाँ पुस्तक दस अध्यायों में विभाजित है।

प्रथम अध्याय में डुग्गर प्रदेश की भौगोलिकता पर प्रकाश डाला गया है। इस अध्याय में में डुग्गर के जल संसाधनों का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। इस अध्याय में बावली कला के उद्‌भव और शैलियों पर चर्चा की गई है। बावलियों का वर्गीकरण लेखक ने कूप शैली की बावलियों, पहाड़ी शैली की बावलियों, अर्द्ध पहाड़ी शैली की बावलियों और सादी बावलियों के रूप में किया है।

द्वितीय अध्याय में उधमपुर जनपद में स्थित बावलियों पर प्रकाश डाला है। पुस्तक के इस अध्याय में लेखक ने ऐतिहासिक और सांस्कृतिक दृष्टि से महत्व रखने वाली बावलियों की संख्या 64 बताई है। इस अध्याय में लोक आस्था से जुड़ी कुछ बावलियों का परिचय भी दिया गया है। उधमपुर

की बावलियों की मुख्य विशेषता यह है कि इसकी अट्टालिकाएँ मूर्तियों से सुशोभित है।

तृतीय अध्याय में कठुआ जनपद की बावलियों का विवरण दिया गया है। इस अध्याय में कुल 34 बावलियों का विवरण दिया गया है।

पुस्तक का चौथा अध्याय सांबा जनपद की बावलियों पर आधारित है।

पांचवें अध्याय में जम्मू जनपद की बावलियों का परिचय दिया गया है। इस अध्याय मे कुल 26 बावलियों का विवरण दिया गया है। जम्मूक्षेत्र में कूप शैली की कई बावलिया दिखाई पड़ती हैं। जबकि शिवालिक क्षेत्र में इनका अभाव है।

छठे अध्याय में रियासी जनपद की बावलियों की चर्चा की गई है इन बावलियों की संख्या कुल 21 है।

सातवें अध्याय मे रामबन, डोडा तथा किश्तवाड़ की बावलियों का परिचय दिया गया है। इस क्षेत्र में अधिकांश बावलियाँ पहाड़ी शैली पर आधारित हैं।

आठवें अध्याय में रजौरी एवं पुंछ की बावलियों का परिचय दिया गया है। इस अध्याय में कुल 10 बावलियों का परिचय दिया गया है। इस क्षेत्र की अधिकांश बावलियाँ प्राकृतिक जलस्रोत (सूहटा) पर आधारित हैं।

इस पुस्तक में लेखक ने बावलियों की उपयोगिता एवं महत्व पर भी प्रकाश डाला है।

इस पुस्तक में डुग्गर प्रदेश के जल संसाधनों, बावली कला के उद्भव एवं प्रकार का वर्णन किया गया है। बावलियों के ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्व की चर्चा की गयी है। इस पुस्तक में ऊधमपुर, कठुआ, सांबा, जम्मू, रियासी, रामबाण, डोडा एवं रजौरी तथा पुंछ क्षेत्र की बावलियों की चर्चा की गयी है।

इस पुस्तक की भाषा सरल एवं बोधगम्य है। जलधरोहरों पर कार्य करने वाले पर्यावरण शास्त्रियों के लिए यह पुस्तक बहुत उपयोगी साबित होगी।

32. डुग्गर की परा-विद्या

'डुग्गर की परा-विद्या' पुस्तक का प्रकाशन अक्षय प्रकाशन, अंसारी रोड नयी दिल्ली द्वारा सन 2020 में किया गया था। यह पुस्तक 132 पृष्ठों में समाहित है। यह पुस्तक मृत्यु के उपरांत के जीवन पर विभिन्न धर्मों और दर्शन शास्त्रों के मतों पर विशेष प्रकाश डालती है। इस पुस्तक को लेखक ने कुल 11 अध्यायों में विभाजित किया है।

प्रथम अध्याय मानवीय शरीर पर आधारित है। वैज्ञानिकों ने मानव शरीर के निर्माण में जिन कोशों को स्वीकार किया है वे दो हैं। 1. नाभिक। 2. पाँच भौतिक प्रकृतिक पदार्थ (साइटोप्लाज्म) मानव का विकास शरीर शास्त्रियों के अनुसार साथ वर्षों में पूर्णतः नवीन हो जाता है। पहले के अणु बिगड़ते हैं और उनका स्थान नए अणु ले लेते हैं। परंतु यह परिवर्तन बहुत ही धीमी गति से होता है। जीवन यात्रा में कई पड़ाव आते हैं। जो प्राणी जीवन ग्रहण करता है उसकी मृत्यु भी होती है। जन्म से मानव जीवन का आरंभ होता है और मृत्यु से जीवन की समाप्ति।

द्वितीय अध्याय में मृत्यु के पश्चात के जीवन पर चर्चा की गई है। इस विषय पर भी भिन्न-भिन्न मत हैं। नास्तिक दर्शन मरणोत्तर जीवन में विश्वास नहीं रखता है। पदार्थ विज्ञान मानता है कि मृत्यु के पश्चात व्यक्ति का अस्तित्व मिट जाता है। बुद्धिवाद मानता है कि जो दृश्यवान नहीं है वो काल्पनिक है। किन्तु परा-विज्ञान मानता है कि मृत्यु ही जीवन का अंतिम पड़ाव नहीं है मृत्यु के बाद भी जीवन का अस्तित्व रहता है। गुह्य विज्ञान सूक्ष्म आत्माओं के अस्तित्व को स्वीकार करता है। आस्तिक दर्शन मरणोत्तर जीवन के अस्तित्व को स्वीकार करते हैं। विज्ञान मानता है कि कोई भी वस्त नष्ट नहीं होती केवल उसका रूप बदल जाता है।

तृतीय अध्याय में लेखक ने भूत-प्रेतों की चर्चा की है। कई वैज्ञानिक भूत-प्रेत को दृष्टि भ्रम मानते हैं परंतु परा विज्ञान भूतों के अस्तित्व को स्वीकार करता है।

चतुर्थ अध्याय शरीर धारी प्राणियों और अशरीर धारी प्राणियों पर आधारित है। इस अध्याय में भूत और प्रेतों में अंतर स्पष्ट किया गया है।

पंचम अध्याय पुनर्जन्म पर आधारित है। षष्टम अध्याय देवात्माओं पर आधारित है। सप्तम अध्याय में दुरात्माओं का वर्णन किया गया है। अष्टम अध्याय मसान पर आधारित है जो कि भूत कि ही एक श्रेणी में परिगणित होते है। नवां अध्याय सिद्धि और साधना पर आधारित है। दसवां अध्याय लोक अनुष्ठानों पर आधारित है। एकादश अध्याय के अंतर्गत यंत्र, तंत्र और मंत्र की चर्चा की गई है।

इस पुस्तक में मानव शरीर का निर्माण कैसे होता है उसके वैज्ञानिक दृष्टिकोण की चर्चा की गयी है। मृत्यु के पश्चात जीवन के संबंध में लोगों के विचार का भी वर्णन किया गया है। इस पुस्तक में लेखक ने भूत-प्रेतों, पुनर्जन्म, देवात्माओं, मसान, सिद्ध साधना, लोक अनिष्ठान तथा तंत्र-मंत्र की भी चर्चा की है।

यह पुस्तक परा-विद्या और भूत-प्रेत में विश्वास रखने तथा तंत्र-मंत्र की वास्तविकता जानने वालों का अच्छा मार्गदर्शन कर सकति है।

33. उधमपुर : संस्कृति और विरासत

उधमपुर : संस्कृति और विरासत पुस्तक का प्रकाशन शिवालिक प्रकाशन, पैंथल (कटरा, वैष्णोदेवी) ने किया है। यह पुस्तक केंद्रीय हिन्दी निदेशालय, मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्रदत्त वित्तीय सहायता से प्रकाशित की गयी है। इस पुस्तक के पृष्ठों की संख्या 510 है। यह पुस्तक नौ अध्यायों में विभाजित है।

प्रथम अध्याय में उधमपुर जनपद के भौगोलिक परिवेश का वर्णन किया गया है।

द्वितीय अध्याय उधमपुर जनपद की विभिन्न प्रजातियों पर आधारित है। इन प्रजातियों में मुंडा, किरात, यक्ष, नाग, मेघ, ठक्कर, महाजन, ब्राह्मण प्रमुख हैं। अनुसूचित और जनजातियों के अतिरिक्त सिक्ख और डोगरा मुसलमानों की भी विस्तृत चर्चा की गई है।

तृतीय अध्याय में स्थानीय इतिहास का वर्णन किया गया है। इसके अंतर्गत प्रागैतिहासिक काल, ऐतिहासिक काल, सामंत काल और डोगरा काल पर

चर्चा की गई है। इस अध्याय में स्थानीय रजवाड़ों का भी संक्षिप्त परिचय दिया गया है।

चतुर्थ अध्याय जनजीवन, भाषा और बोलियों पर आधारित है। इस अध्याय में साहित्यकारों की रचनाओं का विवरण तथा संस्थाओं के नाम भी दिये गए हैं। इस अध्याय में पत्र और पत्रिकाओं के नाम भी उल्लखित हैं।

षष्टम अध्याय प्रकृतिक विरासत पर आधारित है। इसमें जनपद की नदियों, सरों, तालाबों, बावलियों आदि का वर्णन किया गया है।

सप्तम अध्याय स्थापत्य कला पर आधारित है। इसके अंतर्गत मंदिरों की स्थापत्य कला पर प्रकाश डाला गया है।

अष्टम अध्याय मानव निर्मित विरासतों पर आधारित है। इसके अंतर्गत दुर्ग, महल, बारहदारी, सराय, समाधियाँ और शहीदी स्मारकों का विवरण प्रस्तुत किया गया है।

नवम अध्याय उधमपुर के सितारों (जीवित विरासत) पर आधारित है। इसके अंतर्गत समाज सेवक, संगीतकार, मूर्तिकार, चित्रकार, शिल्पकार, रंगकर्मी, चिकित्सक, खिलाड़ी, दार्शनिक, संत, दरवेश और शिक्षा विद आदि का वर्णन किया गया है।

इस पुस्तक में ऊधमपुर जनपद के संबंध में विस्तृत जानकारी मिलती है। ऊधमपुर की भौगोलिक स्थित, जातियों जन-जातियों, जन-जीवन, स्थानीय इतिहास, भाषा, बोली, प्राकृतिक विरासत, स्थापत्य कला, वहाँ के दुर्ग महल आदि का स्पष्ट उल्लेख किया गया है।

यह एक सूचना परक पुस्तक है। इस पुस्तक के माध्यम से उधमपुर जनपद के सांस्कृतिक इतिहास का ज्ञान होता है।

34. डुग्गर के संत : एक परिचय

किसी भी देश और प्रदेश की संस्कृति और अध्यात्मवाद के विकास में संतों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। संत समाज का नेतृत्व करते हैं और उन्हीं के प्रयासों से व्यक्ति पैशाचिक वृत्तियों से दूर रहता है। डुग्गर के संत

भी डुग्गर-समाज का आदर्श रहे हैं। इनकी भूमिका धर्म और संस्कृति के क्षेत्र में अग्रणी रही है।

लेखक ने अपनी इस पुस्तक को सात अध्यायों में विभाजित किया है।

प्रथम अध्याय में उन संत शिरोमणियों का परिचय दिया गया है जिन्होंनें वन जातियों को वैदिक संस्कृति के अंतर्गत लाने का प्रयास किया। इस अध्याय में उन संतों का भी वर्णन है जिहोंने डुग्गर प्रदेश में ज्ञान का प्रकाश फैलाने के लिए शिक्षा संस्थान खोले। लोगों को रोग मुक्त करने के लिए औषधालय तथा चिकित्सा संस्थानों को खोलने में सहयोग दिया। दुश्मनों के विरुद्ध शस्त्र उठाकर अपने देश और संस्कृति की रक्षा की। इस अध्याय में लेखक ने 24 संतों का परिचय दिया है। इनमें से कई संत ऐसे भी हैं जिन्होने विदेशों में वैदिक संस्कृति का ध्वज फहराया है।

द्वितीय अध्याय में वैष्णव संतों का परिचय दिया गया है। लेखक ने इस अध्याय में 33 संतों का वर्णन किया है। तृतीय अध्याय में गिरि संतों का परिचय दिया है। इसमें अधिकांश शिव, सन्यासी, नागा आदि हैं। चतुर्थ अध्याय में शक्ति उपासकों का परिचय दिया गया है। पंचम अध्याय में नाथ पंथी संतों का परिचय दिया गया है। षष्टम अध्याय में सिक्ख संतों के बारे में बताया गया है। सप्तम अध्याय के अंतर्गत स्थानीय संतों का परिचय दिया गया है। यह पुस्तक अक्षय प्रकाशन, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित की जा रही है।

इस पुस्तक में डुग्गर प्रदेश में निवास करने वाले वैष्णव संतों, गिरि संतों, नाथ पंथी संतों, सिक्ख संतों तथा स्थानीय संतों का स्पष्ट एवं विवेचनात्मक रूप से परिचय दिया गया है। इस पुस्तक से हमें डुग्गर संतों के संबंध में अत्यंत आवश्यक और रुचिपूर्ण जानकारी मिलती है।

35. कश्मीर की कहानी

बाल साहित्य के अंतर्गत लिखित यह पुस्तक वर्ष 1980 में जम्मू-कश्मीर राज्य के समाज कल्याण विभाग द्वारा पुरस्कृत की जा चुकी है।

120 पृष्ठों में समाहित इस पुस्तक में बच्चों को जम्मू-कश्मीर राज्य की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहरों से परिचित करवाया गया है। इस पुस्तक में जम्मू मण्डल के अंतर्गत क्रीमची मंदिर समूह, बब्बापुर मंदिर समूह, बिलावर मंदिर के अतिरिक्त पुर मण्डल और सुद्ध महादेव मंदिर का शब्दों के माध्यम से बच्चों को दिग्दर्शन करवाया गया है।

इसी प्रकार कश्मीर मण्डल के अंतर्गत मार्तंड मंदिर, अवन्तिपुर के मंदिर तथा मुगलों द्वारा निर्मित भवनों का परिचय दिया गया है। इस छोटी सी पुस्तक में बच्चों को लद्दाख से संबन्धित संक्षिप्त जानकारी भी दी गयी है।

इस पुस्तक में डोगरा और कश्मीरी संस्कृति से भी बच्चों को परिचित करवाया गया है।

यह एक बाल पुस्तक है इसमें जम्मू कश्मीर राज्य की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहरों से परिचित कराया गया है। इस पुस्तक की भाषा अति सरल, बोध गम्य और सरस है। पुस्तक पढ़ते समय ऐसा लगता है मानों बच्चे कश्मीर की यात्रा कर रहे हैं और साथ ही साथ इस भूखंड के प्राकृतिक सौन्दर्य का आनंद ले रहे हैं।

36. डुग्गर का लोक संगीत

डुग्गर के लोक संगीत पर लिखित यह पुस्तक स्थानीय लोक संगीत पर पर्याप्त प्रकाश डालती है। इस पुस्तक में लेखक ने सर्वप्रथम लोक संगीत की परिभाषा प्रस्तुत की है। उसके पश्चात लोक संगीत की विशेषताओं का वर्णन किया है। उसके बाद लोक गीतों की गेय शैली पर सविस्तार चर्चा की है। लेखक ने लोकगीतों का वर्गीकरण लोक परंपरा के अनुसार किया है। लेखक ने गेयता के आधार पर डोगरी लोक गीतों का वर्गीकरण करते समय भाख, कारक और वार का परिचय भी संक्षेप में दिया है।

डोगरी लोक संगीत के अंतर्गत जिन रागों का प्रयोग हुआ है उनका विवरण भी प्रस्तुत किया है। प्रायः पहाड़ी लोक संगीत में राग दुर्गा को अत्यधिक महत्व दिया गया है। इसी प्रकार इस पुस्तक में लेखक ने तालों

के बारे में भी चर्चा की है। जिनका प्रयोग डोगरी लोकसंगीत में प्रायः होता है। इन तालों में ताल चांचर मौर खेमटा प्रमुख हैं।

इस पुस्तक में लेखक ने लोकगायकी के अंतर्गत लोकगायकी के सूत्रधारों का भी परिचय दिया है। जिनमें गारडी, जोगी, नाथ और दरेस प्रमुख हैं।

इस पुस्तक में लोक संगीत में प्रयुक्त होने वाले वाद्ययंत्रों का भी उल्लेख किया गया है। इन वाद्य यंत्रो की संख्या 25 बताई गई है। पुस्तक में कुड्ड नृत्य गीतों के अंतर्गत जागरना, सल्ले, मंज, मंझतोरा आदि का उल्लेख भी हुआ है।

पुस्तक में गोजरी लोक संगीत, पहाड़ी लोकसंगीत, गद्दी लोकसंगीत, किश्तवाड़ी लोक संगीत, पाड़री लोक संगीत, भद्रवाही लोक संगीत, सिराजी लोक संगीत, बिम्हागी लोक संगीत आदि का परिचय भी दिया है।

यह पुस्तक डुग्गर के स्थानीय लोकसंगीत को ध्यान में रखकर लिखी गयी है। इस पुस्तक में डोगरा संगीत में प्रयुक्त होने वाले रागों, उनमें प्रयुक्त होने वाले वाद्य यंत्रों और लोक नृत्यों का उल्लेख किया गया है। इस पुस्तक में डुग्गर प्रदेश के सभी क्षेत्रों के लोक संगीत का उल्लेख मिलता है। संगीत प्रेमियों के लिए यह पुस्तक बहुत ही उपयोगी है।

37. डुग्गर के शहीदी स्मारक

डुग्गर के शहीदी स्मारक पुस्तक का प्रकाशन 2018 में अक्षय प्रकाशन, अंसारी रोड, नई दिल्ली द्वारा किया गया। 224 पृष्ठों में समाहित इस पुस्तक का आवरण पृष्ठ अति आकर्षक है। इसमें साम्बा में स्थित शहीदी स्मारक का चित्र अंकित है।

डुग्गर के शहीदी स्मारक पुस्तक पाँच अध्यायों में विभाजित है।

प्रथम अध्याय में स्वतन्त्रता पूर्व के बारह युद्ध वीरों के स्मारकों का विवरण स्थापत्य कला को ध्यान में रखकर दिया गया है।

द्वितीय अध्याय में शौर्य चक्र विजेताओं के स्मारकों का उल्लेख किया गया है। इन शहीद स्मारकों की संख्या 23 है।

तृतीय अध्याय में उन वीर शहीद सेनानियों के स्मारकों का विवरण है जो भारत-पाक और भारत-चीन युद्ध में अदम्य वीरता और शौर्य का प्रदर्शन करते हुए शहीद हुए थे। इन स्मारकों की संख्या 46 है।

चतुर्थ अध्याय में आंतरिक सुरक्षा के शहीदों के स्मारकों का उल्लेख है। इन स्मारकों की संख्या 38 है।

पांचवें अध्याय में युद्धों, आतंकवाद से संबन्धित स्मारकों का संक्षिप्त विवरण है। ऐसे स्मारकों की संख्या 24 है।

इस पुस्तक में स्वतन्त्रता पूर्व के युद्ध वीरों से लेकर शौर्य चक्र विजेता, शहीद सेनानियों से संबन्धित स्मारकों का परिचय तथा युद्ध वीरों की शौर्य गाथा पर प्रकाश डाला गया है।

लेखक ने डुग्गर के महान यूद्ध वीरों की महान शौर्य गाथाओं को इन स्मारकों के माध्यम से प्रकाश में लाने का प्रयास किया है। वह स्तुत्य है। वास्तव में यूद्ध वीरों के स्मारक डुग्गर के गौरवमय इतिहास का प्रतीक हैं। इन स्मारकों में आयोजित किए जाने वाले मेलों, श्रद्धांजलि समारोहों से युवा पीढ़ी को देश भक्ति की प्रेरणा मिलती है।

38. डुग्गर के सर : सांस्कृतिक अध्ययन

डुग्गर के सर पुस्तक का प्रकाशन अक्षय प्रकाशन, अंसारी रोड, नई दिल्ली ने ने 2018 में किया। यह पुस्तक डुग्गर की जल-धरोहर पर आधारित है। इस पुस्तक के पृष्ठों की संख्या 126 है। इस पुस्तक में कुल नौ अध्याय हैं।

प्रथम अध्याय में डुग्गर का भौगोलिक परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में कपिलास पर्वत के दस सरों का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में किश्तवाड़ के 13 सरों का वर्णन किया गया है। चतुर्थ अध्याय अध्याय में भलेष के सरों का परिचय दिया गया है। पंचम अध्याय में रामबन जनपद के सरों का वर्णन किया गया है। षष्टम अध्याय में पीर पंजाल क्षेत्र में स्थित सरों और जलकुंडों का विवरण दिया गया है। सप्तम अध्याय में शिवालिक

क्षेत्र में स्थित 25 सरों और जलकुंडों का उनके भौगोलिक परिवेश के साथ परिचय दिया गया है। अष्टम अध्याय में मानव निर्मित सरों का उल्लेख है। जिनकी संख्या 15 है। नवम अध्याय में विलुप्त हो चुके सरों का परिचय भी दिया गया है। जिनकी संख्या 12 है।

डुग्गर के अधिकांश सर पर्वतीय क्षेत्र में स्थित हैं। लेखक ने इन सरों के सांस्कृतिक, भौगोलिक और ऐतिहासिक महत्व पर भी प्रकाश डाला है।

लेखक के शोध के अनुसार ये सर डुग्गर की आदि संस्कृति का केंद्र भी रहे हैं क्योंकि डुग्गर के मूल निवासियों ने इन सरों के निकट अपनी बस्तियाँ बसाई थीं।

इस पुस्तक में सरों से संबन्धित लोकगीतों का भी वर्णन किया गया है। साथ ही साथ इनका सांस्कृतिक महत्व भी दर्शाया गया है।

इस पुस्तक में डुग्गर प्रदेश के अंतर्गत आने वाले कपिलास पर्वत, किश्तवाड़, मलेष, रामबाण, पीर पंजाल, शिवालिक क्षेत्र तथा मानव निर्मित और विलुप्त प्राय हो चुके करीब 70 से भी अधिक सारों का उल्लेख किया है।

इस पुस्तक की भाषा शैली रोचक है तथा शोधार्थियों एवं प्रकृति प्रेमियों के लिए बहुत ही उपयोगी है।

39. डुग्गर के तालाब

डुग्गर के तालाब पुस्तक का प्रकाशन अक्षय प्रकाशन, अंसारी रोड, नई दिल्ली द्वारा किया गया। डुग्गर के तालाब 150 पृष्ठों की एक सूचनापरक पुस्तक है। यह पुस्तक डुग्गर के उन तालाबों को आधार मानकर लिखी गयी है जिनका संबंध डुग्गर के इतिहास, संस्कृति, धार्मिक अवस्थाओं और समाज सेवियों से है।

लेखक के अनुसार डुग्गर प्रदेश में 15 हजार से भी अधिक तालाब हैं। जिनका निर्माण जल आपूर्ति के उद्देश्य से किया गया है। जिस प्रकार डुग्गर प्रदेश के पर्वतीय क्षेत्र में प्राकृतिक सर हैं उसी प्रकार डुग्गर के कंडी क्षेत्र में तालाबों की भरमार है।

डुग्गर के तालाब पुस्तक को पाँच अध्यायों में विभाजित किया गया हैं। प्रथम अध्याय में उधमपुर जनपद के तालाबों का विवरण है जिनकी संख्या 39 है। द्वितीय अध्याय में रियासी जनपद के 30 तालाबों का वर्णन किया गया है। तृतीय अध्याय में जम्मू जनपद के तालाबों का विवरण दिया गया है जिनकी संख्या 55 है। चतुर्थ अध्याय में साम्बा जनपद के 38 तालाबों दिया गया है। पंचम अध्याय में कठुआ जनपद के 39 तालाबों का सिलसिलेवार व्योरा दिया गया है। इनके अतिरिक्त रजौरी, पुंछ, डोडा, किश्तवाड़ और रामबन के जलाशयों का संक्षिप्त विवरण भी दिया है।

यह पुस्तक जलधरोहर के संरक्षण को उद्देश्य मानकर लिखी गई है, अतः इस पुस्तक में लेखक ने पर्यावरण को संतुलित बनाए रखने के लिए तालाबों की अनिवार्यता को स्वीकार करने का संदेश भी दिया है।

लेखक के अनुसार डुग्गर प्रदेश में 15 हजार से भी अधिक तालाब है। उनमें से ऊधमपुर, रियासी, रामबन, डोडा, पुंछ, रजौरी, कठुआ तथा जम्मू आदि के जलाशयों का सिलसिलेवार व्योरा प्रस्तुत किया गया है।

लेखक ने पुस्तक में राज्य सरकार के ग्रामीण विकास मंत्रालय एवं ग्राम पंचायतों से तालाबों के रख-रखाव के लिए परियोजना बनाने का सुझाव भी दिया गया है।

इस पुस्तक की भाषा सरल एवं बोधगम्य है।

40. डुग्गर के पाधे

डुग्गर के पाधे पुस्तक का प्रकाशन शिवालिक प्रकाशन पैंथल, (कटरा वैष्णोदेवी) द्वारा किया गया। यह पुस्तक डुग्गर की ब्राह्मण उपजाति पाधा पर आधारित है। यह 64 पृष्ठों की एक संक्षिप्त सी पुस्तक है। इस पुस्तक में पाधों के आस्पद एवं उपपद, इनका अभिजन, गोत्र, चरण, शाखा, वास्तव्य, वर्तमान निवास स्थान, सूत्र, संस्कार एवं इनके रीति-रिवाज पर संक्षिप्त चर्चा की गई है।

यह पुस्तक पाँच अध्यायों में समाहित है।

प्रथम अध्याय में पाधा शब्द की व्याख्या वैज्ञानिक दृष्टि से करते हुए इसे उपाध्याय का अपभ्रंश रूप बताया गया है। उपाध्याय का अर्थ बताते हुए लिखा है- जो वेद के किसी भाग अथवा वेदांगों को पारिश्रमिक प्राप्त करने के लिए पढ़ाता है, वह उपाध्याय कहलाता है। लेखक के अनुसार उपाध्यायों के कई गोत्र हैं। यथा- भारद्वाज, कश्यप, गौतम, प्राशर, उत्तम, अभिमन्यु, शल्य, वत्स और कौण्डय आदि। इस उपजाति की कई शाखाएँ और उपशाखाएं भी हैं। यथा गौंडीय पाधे, बनाल पाधे, मतियाल पाधे, मंडालिए पाधे, सलाथिए पाधे, अंतमी पाधे, भद्रवाही पाधे इत्यादि।

पुस्तक के द्वितीय अध्याय में लेखक ने सपोलिया पाधे शाखा का सविस्तार परिचय दिया है। तृतीय अध्याय में गौड़ एवं बंगदेशीय पाधों की परम्पराओं पर लेखक ने चर्चा की है। चतुर्थ अध्याय में कला नौरिए पाधों का वर्णन किया गया है। पंचम अध्याय में सुमरता के ब्राह्मणों का परिचय दिया है।

इस पुस्तक में पाधा शब्द की व्याख्या के साथ लेखक ने सपोलिया पाधा, गौढ़ एवं बंगदेशीय पाधा, कला नौरिए पाधा तथा सुमरता के ब्राह्मण का स्पष्ट परिचय दिया है। मानव समाज शास्त्र की दृष्टि से यह पुस्तक बहुत ही उपयोगी एवं संग्रहणीय है। इस पुस्तक में डुग्गर की एक बुद्ध जीवी प्रजाति की जीवन पद्धति पर चर्चा की गयी है।

41. पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित लेख

प्रो. शिव निर्मोही जी का कार्य क्षेत्र सिर्फ पुस्तकों की रचना तक ही सीमित नहीं रहा बल्कि अपने द्वारा किए गए शोध कार्यों का अनवरत मूल्यांकन करते रहे हैं जिसका उदाहरण उनके द्वारा लिखित 100 से भी अधिक लेखों अभिलेखों का संग्रह है जो कि डोगरी, हिन्दी और अँग्रेजी पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे हैं और आज भी उनकी लेखनी ने विश्राम नहीं किया है। उनका शोध कार्य निरंतर चल रहा है।

7

उपसंहार

समाज से हर कोई कुछ न कुछ लेता है लेकिन चंद लोग होते हैं जो समाज को कुछ लौटाते हैं। प्रो. शिव निर्मोही जी उन चंद लोगों में से एक हैं, जिन्होंने अपनी लेखनी के माध्यम से जन मानस को डुग्गर संस्कृति से अवगत कराया है। प्रो. शिव निर्मोही जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी है। वे जितने कुशल शिक्षक हैं उतने ही श्रेष्ठ लेखक और वक्ता भी हैं। उन्होंने अपने कार्यों से जन मानस में एक नयी जागरुता लाने का कार्य किया। निर्मोही जी ने अपने शोध कार्य के लिए मुख्य रूप से डुग्गर प्रदेश को चुना। डोगरी परिवार में जन्मे और डोगरी भाषा और संस्कृति में विशेष रुचि रखने वाले शिव निर्मोही ने डुग्गर कला और संस्कृति की अज्ञात धरोहरों की खोज की और उनके अनमोल पहलुओ पर कार्य किया है जिनसे जन साधारण समूह अनभिज्ञ था। भारत विविधिताओं का देश है। इसमें अनेकों जातियाँ और जनजातियाँ विद्यमान हैं। जिनमें से तो कइयों का हमें ज्ञान भी नहीं है और कई तो विलुप्त प्राय होने की कगार पर हैं। ऐसा प्रायः जनमानस की उपेक्षा के कारण होता है। किन्तु डुग्गर समाज का यह सौभाग्य है कि प्रो. निर्मोही जैसे श्रेष्ठ पुरुष का जन्म इस क्षेत्र में हुआ जिसने डुग्गर संस्कृति के अनछुए पहलुओं से जनमानस को अवगत कराया और संस्कृति के पुनुरुत्थान के लिए अपना जीवन समर्पित किया।

प्रो. शिव निर्मोही की रचनाओं के माध्यम से जन मानस को डुग्गर संस्कृति के इतिहास, लोक साहित्य, कला और संस्कृति, ऐतिहासिक स्थलों, धार्मिक एवं आध्यात्मिक पहलुओं का परिचय प्राप्त हो सकता है। प्रो. निर्मोही

जी के द्वारा डुग्गर कला और संस्कृति के क्षेत्र में अनवरत कार्य करते रहने से लोगों में डुग्गर कला और संस्कृति के प्रति जागृति पैदा हुई है।

प्रो. शिव निर्मोही जी के द्वारा डुग्गर प्रदेश की कला और संस्कृति पर किए गए शोध कार्यों को देखते हुए उन्हें डुग्गर संस्कृति का युग पुरुष कहना अतिशयोक्ति नही होगी।

लेखिका परिचय



डॉ. राजश्री श्रीवास्तव मूलतः उत्तर प्रदेश लखनऊ की निवासी है। इन्होंने हिन्दी विषय में स्नातकोत्तर की शिक्षा लखनऊ विश्वविद्यालय उत्तर प्रदेश से ग्रहण की है। इन्होंने डॉ. राम मनोहर लोहिया विश्वविद्यालय से "आधुनिक अवधी काव्य परंपरा के परिप्रेक्ष्य में द्वारिका प्रसाद मिश्र रचित 'कृष्णायन' कथ्य और शिल्प।" विषय में शोध सम्पन्न किया तथा विद्या वारिधि की उपाधि प्राप्त की। डॉ. राजश्री ने भातखण्डे संगीत विश्वविद्यालय लखनऊ से सितार वाद्य यंत्र में 'स्नातकोत्तर' उपाधि भी प्राप्त की है।

शिक्षा के क्षेत्र में जिज्ञासा वश गहन अध्ययन हेतु जम्मू विश्व विद्यालय जम्मू से शिक्षा शास्त्र में स्नातक का परीक्षण प्राप्त करते हुए डॉ. राजश्री को शिक्षा के महत्व एवं उससे जुड़ी संभावनाओं के गहन चिंतन का अवसर प्राप्त हुआ। शिक्षा के व्यक्तिगत एवं सामाजिक स्वरूप को नजदीक से देखने तथा इस पुस्तक के हिन्दी संस्करण के अनुभव ने उन्हें और परिपक्व किया। आपके कई शोध पत्रों का प्रकाशन प्रतिष्ठित शोध पत्रिकाओं में हो चुका है। डॉ. राजश्री ने भूटान के भूतपूर्व शिक्षा मंत्री प्रो. ठाकुर एस. पौडयेल द्वारा अँग्रेजी में लिखित पुस्तक "माई ग्रीन स्कूल" का हिन्दी में "मेरा विद्यानंदालय" नाम से अनुसंस्करण भी किया है। इस पुस्तक के सह लेखक डॉ. सौरभ हैं। डॉ. राजश्री स्वतंत्र रूप से लेखन के साथ-साथ सामाजिक कार्यों से भी जुड़ी हुई हैं। आप डोगरी भाषा की सांस्कृतिक एवं साहित्यिक धरोहर को हिन्दी भाषा में प्रसारित करने हेतु कार्य भी कर रही हैं।

लेखक परिचय



प्रोफेसर सौरभ तत्काल में सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, सिद्धार्थ नगर उत्तर प्रदेश में व्यवसाय प्रबंधन विभाग में कार्यरत हैं। इससे पहले वह श्री माता वैष्णो देवी विश्वविद्यालय, कटरा, जम्मू कश्मीर में व्यवसाय प्रबंधन विभाग में विभागाध्यक्ष के रूप में कार्यरत थे। आपको इंडियन सोसाइटी ऑफ एग्रीकल्चर इकोनॉमिक्स के उपाध्यक्ष के पद पर भी मनोनीत किया गया है।

यह विगत बीस वर्षों से शिक्षा एवं अध्यापन के कार्य से जुड़े हुए हैं। डॉ. सौरभ की प्रारम्भिक शिक्षा लखनऊ से हुई तथा लखनऊ विश्वविद्यालय से इन्होंने विद्या वारिधि अर्थात पीएचडी की उपाधि प्राप्त की। डॉ. सौरभ, एक कुशल लेखक एवं वक्ता हैं। इनके पचास से भी ज्यादा शोधपत्र राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर की शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं तथा प्रबंधशास्त्र में पुस्तक भी प्रकाशित कर चुके हैं। हिंदी भाषा में भी डॉ० राजश्री के साथ इनकी पुस्तकें 'मेरा विद्यानान्दालय' तथा कविता संग्रह 'प्राण परिचय' प्रकाशित हैं। अध्ययन के क्षेत्र में समर्पित होने के साथ साथ डॉ. सौरभ का गहन चिंतन उनके द्वारा रचित कविताओं में भी परिलिक्षित होता है। आपके द्वारा लिखी गयी हिन्दी की कविताओं को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रकाशित पुस्तक 'राम काव्य पीयूष' में भी सम्मिलित किया गया है।

'डुग्गर संस्कृति के अध्येता: प्रो० शिव निर्मोही (पद्मश्री)' पुस्तक डोगरी साहित्य के अग्रणी शोधधर्मी एवं लेखक प्रो. शिव निर्मोही जी के संघर्ष पूर्ण जीवन की शोधगाथा है। यह पुस्तक उनकी शोध यात्राओं एवं लेखों तथा कृतियों का एवं उनके जीवन के रोचक अनुभवों का विस्तार पूर्वक वर्णन करती है। प्रो० शिव निर्मोही जी ने डोगरी साहित्य एवं संस्कृति को अपने लेखनी से नया जीवन प्रदान किया है। लगभग पचास पुस्तकों एवं ढाई सौ से ज्यादा लेखों के द्वारा उन्होंने डोगरी संस्कृति, देवस्थलों, सरोवरो, स्मारकों, शहीदों, संतों एवं साहित्य को पुनर्जीवित किया है। प्रो. शिव निर्मोही महान परंतु साधारण, सरल ऋषित्व प्राप्त व्यक्तित्व हैं। जम्मू कश्मीर की राजनैतिक उथल-पुथल के बीच अपने दृढ़ निश्चय एवं आत्मबल से उन्होंने कभी पैदल कभी विषम साधनों से यात्रा कर जम्मू कश्मीर की डोगरी एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को पुनर्जीवित कर लोगों तक पहुचाया है। भारत सरकार ने ऐसे शोध ऋषि को पद्मश्री से भी सम्मानित किया है।

पद्मश्री शिव निर्मोही जी का जीवन दर्शन आज के नवयुवको और नवयुवतियों के लिए एक प्रेरणा है। यह पुस्तक प्रो० शिव निर्मोही जी के साक्षात्कारों, उनके मित्रों, परिवार जन एवं विशिष्ठ जनों से संवाद के साथ-साथ श्री शिव निर्मोही जी के प्रकाशनों एवं शोध पर आधारित है। इस पुस्तक का उद्देश्य प्रो० शिव निर्मोही जी के जीवन दर्शन को आधिकारिक युवाओं और प्रारम्भिक शोध कर्ताओं तक पहुँचाना है। इनके जीवन के जीवट शोध कार्यों एवं डुग्गर संस्कृति के प्रभास को ज्यादा से ज्यादा लोगों विशेषकर हिन्दी भाषी जिज्ञासुओं को नयी दृष्टि एवं उत्साह प्रदान करेगा।

यह पुस्तक भाषा, कला, संस्कृति, सामाजिक शास्त्र और पुरातत्व शोध में रुचि रखने वाले सभी शोधार्थियों के लिए और पाठकों के लिए उपयोगी है। विशेषकर, जो जम्मू की सांस्कृतिक धरोहर को सूक्ष्मतम रूप में देखना चाहते हैं।



डॉ. राजश्री श्रीवास्तव, शिवांशु सुशील महाविद्यालय, बहराइच, उत्तर प्रदेश में सहायक आचार्य के रूप में अपनी सेवाएँ दे रही हैं। इन्होने राम मनोहर लोहिया विश्व विद्यालय, अयोध्या, से विद्या वारिधि की उपाधि प्राप्त की है। सांस्कृतिक एवं सामाजिक साहित्य के शोध विषयों पर आपकी पुस्तक एवं शोध पत्र राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रकाशित हैं।



प्रो. सौरभ तत्काल में सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु , सिद्धार्थ नगर, उत्तर प्रदेश में प्रबंधन विभाग में आचार्य के पद पर कार्यरत हैं। विगत वर्षों से यह श्री माता वैष्णो देवी विश्वविद्यालय, कटरा, जम्मू कश्मीर में प्रबंधन विभाग में विभागाध्यक्ष के पद पर कार्यरत रहे हैं। प्रबंधन, सांस्कृतिक एवं सामाजिक विषयों पर इनकी कई पुस्तकें एवं शोधपत्र राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रकाशित हैं।



SAKSHAM BOOKS INTERNATIONAL
9991/A New Rohtak Road, New Delhi- 110005
sakshambooks@gmail.com

Jammu Office: Khilonia Street, Pacca Danga.
Jammu- 180001
Contact No. 9622291111 9419194459

